ज्ञानपीठ-लोकोदय ग्रंथमाला, हिन्दी-ग्रंथांक—३५

पहला कहानीकार

श्री रावी

●

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

उनको

जो सुन सकते हैं
और
सुनना चाहते हैं
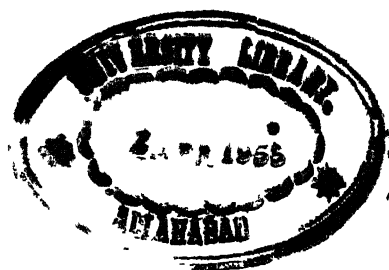
भूमिका

'किसके लिए ?' 'पत्नियोका द्वीप', 'उपजाऊ पत्थर' और 'पापका पुण्य'के बाद यह 'पहला कहानीकार' मेरी लम्बी कहानियोका पाँचवाँ सग्रह है। इतनी लम्बी कहानियोके बदले लघु कथाएँ—उनके लिए FABLE या PARABLE के अर्थके किसी दूसरे हिन्दी शब्दकी मुझे खोज है—ही अब मै लिख रहा हूँ, और इस सग्रहकी कहानियोमे, दूसरे सग्रहो-की अपेक्षा, मेरी इस नव-उपार्जित 'लघु कथा'की शैली और रूपका आभास अधिक स्पष्ट मात्रामे झलक आया है। इस दृष्टिसे भी यह सग्रह मेरे पिछले प्रकाशित कहानी-सग्रहोसे आगेकी वस्तु है।

कैलास,
सिकन्दरा—आगरा
१—३—१९५४

—रावी

विषय-सूची

पहला कहानीकार

एक समय था जब दुनियाके लोग बहुत सीधे-सादे और सत्यवादी होते थे। वे जो कुछ देखते थे, वही कहते थे और जो कुछ कहते थे वही करते थे।

एक बार एक आदमीने एक आदमीसे एक गॉवके एक आदमीके बारेमे एक बात कही। यह बात कानो-कान कई आदमियो तक पहुँच गई।

इस समाचारके कुछ और आगे बढनेपर लोगोको पता लगा कि उस नामका वहॉ न कोई गॉव था, न उस नामका कोई आदमी था और न किसी आदमीने वैसा काम ही किया था, जैसा कि उस समाचारमे बताया गया था।

जिस आदमीने यह झूठा समाचार सबसे पहले फैलाया था, उसे खोज निकालनेमे कोई कठिनाई न हुई। लोग उसे पकडकर उस देशके राजाके पास ले गये।

"इस आदमीने एक गॉवके एक आदमीके बारेमे एक बात कही है; लेकिन न तो उस नामका कोई गॉव ही है, न आदमी और न किसीने वैसा काम ही किया है, जैसा कि इसने अपनी खबरमे बताया है। अनहोनी बात कहकर इसने लोगोको भुलावेमे डाला है। इसे उचित दण्ड मिलना चाहिए"—लोगोने राजाके सामने उस पर यह आरोप लगाया।

"क्या तुम जानते थे कि इस नामका कोई गॉव मौजूद है ?" महाराजने अपने न्यायासनसे अपराधीसे प्रश्न किया।

"नही महाराज !"

"क्या तुम जानते थे कि इस नामका कोई आदमी मौजूद है ?" दूसरा प्रश्न हुआ।

'नही महाराज !"

"क्या तुमने किसी आदमीको वैसा काम करते देखा था, जैसा कि तुमने अपने समाचारमे बताया था ?" तीसरा प्रश्न हुआ ।

"नही महाराज !"

"तो फिर तुमने ऐसी अनहोनी ख़बर क्यो फैलाई ?"

"महाराज !" अपराधीने अपनी स्थिति स्पष्ट की, "मैने किसी बुरे कामकी नही, बल्कि एक अच्छे कामकी ही खबर फैलाई है—ऐसे कामकी जिसे अगर कोई करे तो उससे दूसरोका बहुत भला हो और स्वय उसका बहुत यश हो । उस कामको करनेके लिए कोई न कोई आदमी चाहिए था, और उस आदमीके होनेके लिए कोई न कोई गॉव भी आवश्यक था । इसलिए मैने उस खवरके साथ आदमी और गॉवके नाम भी मनसे सोचकर जोड दिये थे ।"

राजा असमजसमे पड गया । उस दिन तक किसी भी आदमीने किसीसे कोई अनहोनी या अन-हुई बात नही कही थी और इस प्रकारके अपराधके लिए राजकीय दण्डके नियमोमे कोई व्यवस्था भी नही थी । यह एक सर्वथा नये ढगका अपराध था ।

उचित न्यायका आश्वासन देकर राजाने लोगोको बिदा किया और अपराधीको राजकीय बन्दीगृहमे आदर और आरामके साथ रखवा दिया ।

राजाने इस नये अभियोगके सम्बन्धमे राजगुरुके साथ परामर्श किया । राजगुरुके लिए भी यह एक नये ढगका अपराध था । उन्होने देवराज इन्द्रके सामने यह अभियोग उपस्थित किया ।

देवराज इन्द्रकी आज्ञासे देवदूतोने भूमण्डलमे पूरी छान-बीन करके अपना वक्तव्य दिया

"पृथ्वीके वर्तमान कुल ८,३२,४८० ग्रामो-नगरोमे ८०,१६,८०,४२१ मनुष्य इस समय रह रहे है और उन सबने मिलकर लेखराज महा-चौहानके रजिस्टरोके अनुसार, अबतक ३७,१४,५५,८०,३५,१७,८२७ कर्म किये है । जिस गॉव, मनुष्य और कर्मकी खोज करनेकी हमे आज्ञा

दी गई थी उन तीनोका अस्तित्व उन गाँवो, मनुष्यो और उनके अब तकके कर्मोमे कही भी नही है ।"

अभियुक्त मनुष्यका अपराध प्रमाणित हो गया। उसने सचमुच एक अस्तित्वहीन बात कही थी। मनुष्यजातिकी ओरसे यह पहला ही इतना विचित्र और भयकर अपराध था। स्वय देवराज इन्द्र भी नही जानते थे कि ऐसा भी अपराध कोई मनुष्य कर सकता है। इस अपराधका प्रभाव कितना व्यापक हो सकता है और इसका दण्ड क्या होना चाहिए, इसी सोचमे वे पड गये।

अपनी सहायताके लिए इन्द्रने धर्मराज यमकी ओर दृष्टि फेरी और कुछ देर तक टकटकी लगाये उनकी ओर देखते रहे, किन्तु यमराज स्वय इस नई पहेलीकी गुत्थियोमे उलझ गये थे और उनकी दण्ड-व्यवस्थाकी कोई भी धारा इस अपराधीपर लागू नही हो रही थी। लाचार वह भी गर्दन घुमाये दूसरी ओरको इस प्रकार देखने लगे जैसे उन्हे इन्द्रके देखनेकी खबर ही न हुई हो।

"अपराधीका अपराध गम्भीर है," देवराज इन्द्रने कहा। "उस पर कोई निर्णय देनेके पहले हमे देवगुरुका परामर्श लेना होगा।"

देवगुरु बृहस्पतिको उसी समय देव-सभामे आमन्त्रित किया गया।

"आपने भूलोककी छान-बीन करा ली है," बृहस्पतिदेवने अभियोगकी सारी कथा सुन चुकनेके पश्चात् कहा, "लेकिन क्या भुवर्लोक और स्वर्ग-लोककी भी छान-बीन कराकर आपने निश्चय कर लिया है कि इन लोकोमे भी उस नामका कोई गाँव, उस नामका कोई व्यक्ति और उस प्रकारका कोई किया हुआ कर्म नही है ?"

देवगुरुके इस प्रश्नसे सारी देव-सभा सोच-विचारमे पड गई। साधारणतया मनुष्योके कार्योसे स्वर्ग और भुवर्लोकका कोई सम्बन्ध नही होना चाहिए था।

'अपराधमे कहे हुए नामोका कोई गाँव, कोई व्यक्ति और कोई कर्म

स्वर्ग और भुवर्लोकमे निर्मित नही हुआ ।" स्वर्ग और भुवर्लोकके तत्सम्बन्धी विभागोके अधिकारियोने उत्तर दिया ।

"अधिक अच्छा हो कि आप लोग इन बातोकी खोज एक बार और अपने लोकमे कर ले ।" देवगुरुने मुसकराते हुए कहा ।

देवगुरुके आदेशका पालन हुआ । अनेक कामदूत और देवदूत इस खोजके लिए छोड दिये गये ।

अगले दिन देव-सभामे उन्होने आकर सूचना दी कि स्वर्ग और भुवर्लोक दोनोमे उस नामका गॉव, और उस नामका व्यक्ति विद्यमान है और उसने सचमुच उस प्रकारका कर्म किया है ।

सारी देव-सभा इस समाचारसे स्तब्ध रह गई ।

देवगुरुने कनखियोसे देखते हुए एक व्यग्यपूर्ण मुसकान उन अधिकारियोकी ओर डाली जिन्होने पिछले दिन विपरीत उत्तर दिया था ।

"किन्तु गुरुदेव !" उन्होने हाथ जोडकर उत्तर दिया, "हमने तो अपने लोकोमे वैसे किसी गाँव, व्यक्ति या कर्मका निर्माण नही किया ।"

वृहस्पतिदेवका स्वभाव-सिद्ध सुकोमल अट्टहास देव-सभामे गूज उठा ।

"आप अकेले ही ब्रह्माके सहकारी, सृष्टिके निर्माता नही है, मनुष्य भी उनका सहकारी और आपका सहयोगी है । जिस प्रकार ब्रह्माजी अपने सकल्प-बलसे और आप लोग अपने ध्यान-बलसे रचनाके विविध रूपोका निर्माण करते है, उसी प्रकार मनुष्यका भी काम है कि वह अपने कल्पना-बलसे वस्तुओका निर्माण करे । वह आपका समकक्ष है और आपके लोकोके निर्माणमे भी उसका प्राय उतना ही हाथ है, जितना उसके लोकके निर्माणमे आपका । जिस मनुष्यको आप अपराधीके रूपमे अपने सामने रक्खे हुए है, वह मनुष्य-जातिमे ब्रह्माका विशेष पुत्र और मनुष्य-जातिका प्रधान शिक्षक है । कल्पना उसका कार्योपकरण है और कहानीकार उसका जातिवाचक नाम है । आपका अभियुक्त मनुष्य-

जातिमे पहला पूजनीय कहानीकार और ब्रह्माका सर्वप्रथम सह-निर्माता है।"

× × ×

कहते है कि देवताओके और मनुष्योके भी आगामी बृहत्तम शब्द-कोशमे 'झूठ' के अर्थका कोई शब्द नही है और जो कुछ भी मनुष्यके मुखसे निकल सकता है, उसका मूर्त अस्तित्व कही न कही अवश्य होता है।

कहानीका मोल

तीन यात्री घोडो पर सवार देश-परदेश भ्रमण करते करते एक गाँवमे जा पहुँचे । वहाँ उनकी दृष्टि एक अत्यन्त रूपवती तरुणी पर पडी और वे तीनो एकदम उसपर मोहित हो गये । इस सुन्दरीको अपने साथ अपने नगरको ले चलकर उससे विवाह कर लेना उन तीनोने तय किया ।

यह कथा बहुत पुराने युगकी तो नही, फिर भी एक ऐसे समयकी है, जब कि देवता लोग मनुष्यके धर्मके साथ कदम-ब-कदम चलनेमे कभी-कभी पिछड जाते थे और उनका प्रबन्ध अपर्याप्त सिद्ध होता था । यह देवताओकी पिछडतका ही एक समय था, क्योकि ससारमे उस समय स्त्रियोकी उत्पत्ति इतनी कम रह गई थी कि कई-कई पुरुषोको मिलकर एक एक स्त्रीसे विवाह करना पडता था । स्पष्टत इसमे दोष मनुष्योका नही, बल्कि विधाता और उसके सहकारी देवताओका ही था ।

ये तीनो यात्री सुन्दर और युवा थे और देशकी राजधानीके धनी-मानी नागरिक थे । ये एक ही समृद्ध परिवारके भाई-बन्द थे ।

इस सुन्दरीको अपने साथ ले चलने और विवाह करनेके लिए किस तरह राजी किया जाय और किस प्रकार इससे बातचीत प्रारम्भ की जाय, तीनो आपसमे विचार करने लगे । अन्तमे बडे भाईने इस कामका ज़िम्मा अपने ऊपर लिया और उस सुन्दरीके पास जाकर बोला—

"सुन्दरी, मै और मेरे दो और भाई तुमसे विवाह करना चाहते है । हम तीनो राजधानीके रहनेवाले धनी-मानी व्यक्ति है ।"

सुन्दरीने अपनी भवो पर बल देकर युवककी ओर देखा और कहा—

"आप मुझसे विवाह करना चाहते है, क्यो ? क्या आप समझते है कि मुझसे विवाहके इच्छुक कोई दूसरे युवक नही है ? या दूसरे युवक

आपके बराबर सुन्दर या धनी नही है ? मैने और आपने एक दूसरेके लिए कुछ किया भी नही, मेरा आपका कोई परिचय भी नही, आपके दूसरे भाइयोको मैने देखा तक नही । इस गॉवके और आसपासके अनेक गॉवोके जो सुन्दर युवक मुझसे इतने दिनोसे प्रेम करते आ रहे है, क्या आप समझते है कि मुझे उनका कुछ भी ध्यान नही होना चाहिए ?" सुन्दरीने कुछ रूखे-से स्वरमे कहा ।

"तुम्हारी इच्छा ।" युवकने हताश-से स्वरमे कहा और लौट गया ।

उसके असफल लौट आनेपर दूसरे भाईकी बारी आयी । सुन्दरीके पास जाकर उसने कहा—

"सुन्दरी, तुम जैसी सुन्दर तरुणी मैने आज तक नही देखी थी । सच-मुच वे बडे भाग्यवान् पुरुष होगे, जिनसे तुम विवाह करोगी । मै और मेरे दो भाई तुम्हारे सुन्दर रूप पर मुग्ध है और हम तीनो भी तुमसे विवाह करनेके अभिलाषी है ।"

"आपमे सुन्दरताकी परख अच्छी है ।" युवतीने मुसकराते हुए कहा, "क्यो न हो, आप स्वय भी तो सुन्दर है । आप समझ सकते है, कुछ और भी युवक मुझसे प्रेम करते है और विवाहके इच्छुक है । आप कुछ दिन इस गॉवमे रहे तो मै दूसरे युवकोके साथ आपकी इच्छा पर भी विचार कर सकती हूँ ।"

"यहॉ अधिक दिन रुकना तो हमारे लिए बहुत कठिन होगा, फिर भी मै जाकर अपने दूसरे भाइयोसे सलाह करूँगा ।" युवकने कहा और वह भी कुछ निराश-सा ही लौट गया ।

उस गॉवके बाहर जिस पेडके नीचे ये लोग ठहरे हुए थे, वहाँ पहुँच कर उसने अपनी बात-चीत दोनो भाइयोको सुनाई । जिस समय वह सारा हाल सुना रहा था, गॉवके कुछ नवयुवक उधरसे निकले । उनमे से दो-तीन तो इन तीनो यात्रियोसे कही अधिक सुन्दर थे ।

"इस गॉवमे हम लोगोसे भी अधिक सुन्दर कुछ युवक मौजूद है"

तीसरे भाईने इन युवकोको देखकर अपने भाइयोसे कहा, "और वह लडकी निश्चय ही इनसे गहरा प्रेम करती होगी। इनकी सुन्दरताके आगे वह हमे कभी नही स्वीकार करेगी और हमारा यहाँ ठहरना व्यर्थ ही होगा। यद्यपि यहाँके लोगोमे हमारे बराबर धनवान् कोई नही हो सकता, पर पुरुषोके रूपके आगे धनको नवयुवती सुन्दरियाँ कभी नही देख सकती। फिर भी इस स्थानको छोडनेसे पहिले मै भी उस सुन्दरीसे एक बार मिल कर कुछ बात कर देखूँगा।"

इस तीसरे युवकने अपने कीमती वस्त्राभूषण उतारकर साधारण कपडे पहिन लिये और दिन ढलते ही उस सुन्दरीके घर पहुँचकर द्वारपर थपकी दी। सुन्दरीने बाहर आकर द्वार खोल दिये।

"मै एक यात्री हूँ। दिन भरका थका और भूखा-प्यासा हूँ। क्या आप मुझे एक बारका भोजन और रातमे सोनेके लिए अपने घरके बाहर-का एक कोना दे सकती है?"

"अवश्य दे सकती हूँ।" युवतीने आगन्तुकको एक बार सिरसे पैर तक देखकर कहा, "इसमे मेरा क्या हर्ज है! परदेशीका आतिथ्य करना तो हम सबका परम धर्म है।"

सुन्दरीने घरकी एक कोठरीमे अतिथिको आरामसे ठहरा दिया। भोजन कराते समय युवतीने अपने अतिथिका और परिचय जानना चाहा।

"मै जातिका कत्थक हूँ और मारुत देशका रहनेवाला हूँ। हमारी जातिके लोग कथाएँ सुनानेमे बहुत प्रवीण होते थे और राजदरबारोमे कथाएँ सुना-सुनाकर उन्होने बडी-बडी जागीरे पाई थी। बादमे हमीमे से कुछ लोगोने गाने-बजानेकी कलामे दक्षता प्राप्त कर ली और उनकी एक अलग शाखा बन गई। मै अपने राज्यसे एक दूसरे राजाके दरबारमे कथा सुनाने ही जा रहा हूँ। दुर्भाग्यके चक्रसे मेरी दशा अच्छी नही रह गई है, पैदल ही यात्रा कर रहा हूँ। सारा पाथेय समाप्त हो जानेके कारण आज आपके घर शरण लेनी पडी। आप कृपा न करती तो वृक्षके

नीचे जागकर भूखे ही रात बितानी पडती।" युवकने अपना परिचय दिया।

"मेरे बडे भाग्य कि आप मेरे अतिथि हुए। राजदरबारोके कत्थक बडे भाग्यसे ही हम जैसे साधारण लोगोके घर पहुँचते है। धन न सही, गुणमे तो आप बहुत ऊँचे है। क्या आप एक-आध अच्छी-सी कहानी मुझे भी सुना सकेगे ?"

"अवश्य, अवश्य ! आप-जैसी सुन्दर नव-युवतीको कौन ऐसा कत्थक होगा जो कहानी न सुनाना चाहे। लेकिन मेरी कहानियाँ झूठी और गढी हुई ही होगी। क्या ऐसी कपोल-कल्पित कहानियाँ सुनना आप पसन्द करेगी ?"

"कोई हर्ज नही ! कहानी कल्पित होनेसे मेरा क्या हर्ज है। उस कहानीके नायक-नायिकाओसे मुझे कुछ लेना-देना नही है। आपकी कहानी सुन्दर और मनोरंजक तो होगी ही, यही यथेष्ट है।"

"निस्सदेह मै आपको एक सुन्दर और मनोरजक-सी कहानी सुनाना पसद करूँगा, यदि उसकी अवास्तविकताको क्षमा करे।" युवकने कहा।

"मै आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे वैसी कहानी अवश्य सुनाये। उसकी अवास्तविकतासे मुझे कोई असन्तोष न होगा।"

युवकने कहानी सुनानी आरम्भ की

"फिहयून देशकी एक सुन्दरी कन्या जब सयानी हुई तो उसे अपने लिए पतियोकी खोज हुई। अपने पास-पडोसके चार-पॉच नवयुवकोको, जो शेष दूसरोसे अधिक सुन्दर और सुयोग्य थे, अपना पति बनानेका उसने मन ही मन निर्णय कर लिया। एक दिन चीन देशकी एक बुढिया अपने उड़नखटोले पर यात्रा करती-करती उसके यहाँ आकर ठहरी। उस कन्याकी सुन्दरता पर रीझकर बुढियाने उसे बताया कि तुम्हारे योग्य पति तो चीन देशमे ही मिल सकते है। वहाँके पुरुष भी सुन्दर होते है और यहाँकी केवल स्त्रियाँ ही सुन्दर होती है। फूमाने—उस लडकीका नाम फूमा था—कहा

कि मैने तो अपने लिए चार-पॉच सुन्दर पति यही आस-पासके गॉवोसे छॉट लिये है, और चीन देशके पति मुझे मिल भी कैसे सकते है ? बुढियाने कहा "यह तुम्हारी मर्जी है। अगर आस-पासके गॉवोमे से न चुनकर तुम अपने ही गॉवमे से चार-पॉच पति पसन्द कर लेती तो तुम्हे और भी कम परिश्रम करना पडता और घर बैठे ही यह चुनाव हो जाता । लेकिन अपने ही गॉवसे पति चुनने पर वे सब इतने सुन्दर न होते, जितने कई गॉवोसे चुनने पर हुए होगे। और फिर तुम्हारी जैसी सुन्दर स्त्रीके केवल चार-पॉच ही पति हो, यह तो बडी शर्मकी बात है । हमारे देशमे तुम्हारी जितनी सुन्दर स्त्रियोको तो आठ-आठ, दस-दस पति मिल जाते है। तुम अगर मेरे साथ कुछ दिनोके लिए मेरे देशको चलो तो वहॉके पुरुषोको भी देख सकती हो। यहाँके पतियोको निराश किये बिना तुम कुछ थोडे-से पति वहॉसे भी अपने लिए ला सकती हो। तुम जैसी सुन्दर स्त्रियोमे तो साहस और उद्योग अवश्य होना चाहिए।"

"फूमाके मनमे यह बात कुछ जँच गयी और वह बुढियाके साथ चीन देश-को जानेके लिए तैयार हो गई। अपने मॉ-बाप और पसद किये हुए नवयुवको-को जल्द ही लौटनेका वचन देकर और उन्हे धीरज बँधाकर वह बुढियाके साथ उसके उडनखटोलेपर बैठकर चल दी। मॉ-बापको उसने यह कह कर प्रसन्न कर लिया कि चीन देशसे मै अपने लिए कुछ ऐसे पति लाऊँगी जो सुन्दर ही नही, खेती करने और रेशमके कीडे पालनेमे भी निपुण होगे।

"अपने देशमे पहुँचकर बुढियाने फूमाको बडे सुख-सत्कारसे रखा। फूमाने देखा कि चीन देशके पुरुष आमतौरपर फिहयूनके पुरुषोसे अधिक सुन्दर अवश्य थे, पर अपने देशमे जिन चार-पाँच युवकोको उसने चुना था, उनके बराबर सुन्दर कोई युवक चीन देशमे उसे दिखाई नही दिया।"

"तो उस बुढियाने बेचारी फूमासे झूठ ही कह दिया था" अचानक कथा सुननेवाली सुन्दरी बोल उठी, "चीन देशमे फिहयूनके बराबर सुन्दर पुरुष नही थे ?"

"थे क्यो नही।" कत्थक बने हुए युवकने कहा, "थे अवश्य, लेकिन उस समय तक फूमाको उतना सुन्दर कोई परुष मिला नही था। और फिर यह तो कहानी है, कोई सच्ची बात तो है नही! क्या आप इसे भूल गयी?"

"बुढियाके घरके आस-पास रहनेवाले कुछ युवक फूमा पर मोहित हो गये। फिहयूनके युवकोके मुकाबले चीनके युवक प्रेम करनेमे अधिक निपुण और सच्चे होते थे। जातीय स्वभावसे ही वे लोग सेवाशील, मीठा बोलने और सदैव मुसकराते रहनेवाले थे। इस स्वभावका, विशेषकर मुसकराते रहनेकी आदतका, नतीजा यह था कि उनको सुन्दरता टिकाऊ होती थी और उनके चेहरे काफी उम्र बीतने तक भी भरे हुए और सुन्दर बने रहते थे।"

"पुरुषका मुसकराता हुआ चेहरा" श्रोता सुन्दरी बोल उठी, "मुझे भी बहुत अच्छा लगता है और अगर मुसकरानेके स्वभावसे चेहरेकी सुन्दरता टिकाऊ हो जाती हो तो और भी अच्छी बात है। यहाँके पुरुषोमे मुसकराने-का स्वभाव बहुत कम है। क्या सचमुच कोई ऐसा देश है, जहाँके पुरुष मुसकराते ही रहते हो?"

"यह केवल एक कहानी है सुन्दरी!" कत्थक युवकने एक मुसकान भरी दृष्टि उसकी ओर डालते हुए कहा, "कहानियाँ सच नही हुआ करती। लेकिन यह बात तो बिलकुल ठीक है कि मुसकरानेके स्वभावसे सुन्दरता केवल टिकाऊ ही नही हो जाती, बल्कि बढ भी जाती है, और जिनमे मुसक-रानेका स्वभाव नही होता, उनके सुन्दर चेहरे भी बहुत जल्द झुर्रियोदार और कुरूप हो जाते है।"

"यह ठीक जान पडता है" सुन्दरीने कहा, 'फिर फूमाने क्या किया?'

"फूमाने पहिले तो सोचा कि इन युवकोकी ओर अधिक ध्यान न दे और अपने देशको लौटकर अपने पसद किये हुए युवकोसे ही विवाह कर ले। पर चीन देशके युवक प्रेम करनेमे बहुत सच्चे और निपुण थे और

प्रेम करनेकी कला भी उन्हे बहुत अच्छी आती थी। इस कलाको जानने वाला पुरुष साधारण सुन्दर होता हुआ भी जब चाहे तब स्त्रीकी दृष्टिमे विशेष सुन्दर दीख सकता है। उनमेसे कुछ नवयुवक जो फूमासे सचमुच गहरा प्रेम करने लगे थे, फूमाको भी विशेष सुन्दर दीख पडने लगे। उनका प्रेम इतना गहरा था कि वे उसे उसके देशके पसद किये हुए युवकोसे भी अधिक सुन्दर लगने लगे।

"फूमाका चीन देशका जाना सफल हुआ।" श्रोता सुन्दरीने सन्तोष और उल्लासके स्वरमे कहा, "यह भी सम्भव है कि मुसकरानेके स्वभाव-के कारण उनकी सुन्दरता सचमुच बढ ही गयी हो।"

"यह तो है ही।" कथाकारने कहा, "लेकिन इससे भी बडी चीज उनका प्रेम था। प्रेम सुन्दरताको जगाता ही नही, पैदा भी कर सकता है। और फिर वे युवक बहुत अधिक नही, किन्तु साधारणत काफी सुन्दर तो पहिलेसे ही थे। बिना प्रेमके तो सुन्दर पुरुष भी सुन्दर नही दीखते रह सकते। फूमा धीरे-धीरे उन युवकोपर मुग्ध हो गयी।"

"उन युवकोके लिए भी यह अच्छा हुआ। जिन पर वह मुग्ध हुई वे कितने थे?" सुन्दरीने पूछा।

"विशेष रूपसे जिनपर वह मुग्ध हुई वे तीन थे। प्रेमकी कला और सचाईमे ये तीनो विशेष निपुण थे। इस कलाके जाननेवाले पुरुष स्वय ही नही बल्कि स्त्रियोको भी जबतक और जितना चाहे सुन्दर और युवा बनाये रख सकते है।"

"प्रेमकी ऐसी भी कोई कला होती है" सुन्दरी श्रोताने उत्सुक होकर कहा, "जिससे स्त्रियाँ अधिक समय तक सुन्दर और युवा बनी रह सके? हमारे देशके पुरुष तो इस तरहकी कोई कला नही जानते।"

"बहुत कम देशोके लोग इस कलाको जानते है। इस कलाको जानने वाले पुरुष सदा प्रसन्न रहते है और स्त्रियोको भी प्रसन्न रखते है। वे स्त्रियोका सम्मान करते है, कठिन कामोमे उन्हे हाथ नही डालने देते, सुन्दरताको

बढानेवाले लेप, औषधियाँ और आभूषण तैयार करते है, स्त्रियोकी गुलामी न करके बराबरीका बर्ताव करते है, वे खेतो, चरागाहो और रेशम-घरोमे अपना समय नही गँवाते, बल्कि स्त्रियोके साथ मनोरजक बाते करने, उन्हे हसाने और उन सब तरीकोसे जिन्हे स्त्रिया पसन्द करती है, उनसे छेड-छाड करनेके लिए बहुत-सा समय निकाल लेते है। वे दूसरे पतियोके साथ स्त्रियोके प्रेम या मिलने-जुलनेमे कभी दखल नही देते। वे उनके सुख और आरामका सदैव ध्यान रखते है, उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम नही करते और अपनी पत्नीको सुन्दर-सुन्दर पुत्र और पुत्रियाँ देनेमे कभी आलस्य नही करते। पत्नीके रूप और स्वभावकी कदर और प्रशसा करना भी वे जानते है, और उसके सुखके लिए यथेष्ट धन कमाने और सामग्री जुटानेमे कमी नही रखते।"

"यह प्रेमकी कला भी बहुत अच्छी चीज है। यहाके सुन्दर युवकोको भी यह कला नही आती। फूमा बडी भाग्यशालिनी थी" सुन्दरीने कुछ लम्बी-सी सतोष या असतोषकी एक साँस लेकर कहा।

"फूमाने उन तीनो युवकोको अपने साथ फिहयून चलने और वहाँ उनसे विवाह करलेनेका निमत्रण दिया, पर उन्होने एक दूसरी ही बात फूमाके सामने रखी। उन्होने फूमासे कहा 'तुम हमारे देशमे ही बस जाओ और अपने माता-पिता तथा चारो-पाचो प्रेमियोको भी यही बुलाकर बसा लो और उन प्रेमियोसे भी विवाह कर लो। चार-पाच वे और तीन हम, तुम्हारे सात-आठ पति अभी से हो जायगे और हमलोग कुछ और भी सुन्दर और सुयोग्य पति तुम्हारे लिए जुटानेका प्रयत्न करेगे।' चीनके इन युवकोके पास धन बहुत था। वे जीवन-भर फूमाके इतने परिवारको अपने साथ सुख-पूर्वक रख सकते थे।"

"कितने अच्छे थे चीन देशके वे युवक!" श्रोता सुन्दरी उल्लसित स्वरमे बोल उठी, "पत्नीकी गुलामी न करने पर भी वे इतने उदार होते है। यहाँके पुरुष तो अपनी पत्नीके दूसरे पतियो और प्रेमियोको भीतर ही भीतर

जलनकी दृष्टिसे देखते है, और उनसे सहयोग नही करना चाहते। चीन देशके पुरुष इतने अच्छे होते है !"

"लेकिन यह कहानी है !" श्रोता सुन्दरीने क्षण भर मौन रह कर, फिर निराशाभरी साँस खीचकर कहा, "और कहानियाँ सच नही हो सकती। कितना अच्छा होता यदि कहानियाँ सच हो सकती होती !"

"कहानियाँ तो सच नही हो सकती, लेकिन कहानियोकी कुछ बाते सच हो सकती है।" कहते-कहते कत्थक युवकने सुन्दरीके एक कपोल पर लटक आयी हुई उसके केशकी एक पतली-सी लटको अपनी अगुलियोसे सभाल दिया।

सुन्दरीके सीनेमे एक अगडाई-सी उठी और उसने एक अधूरी-सी अँगडाई ली।

"कौनसी बाते सच हो सकती है ?" उसने पूछा।

"एक तो यही कि कोई-कोई देश ऐसे है जहाँके पुरुष इतने अच्छे होते है।" युवकने कहा।

"क्या आप सचमुच किसी ऐसे देश और वहाँके रहने वाले ऐसे सुन्दर युवकोको जानते है ?" सुन्दरीने पूछा।

"मै जानता हूँ, और ऐसे देशके बिलकुल पासके ही देशका रहने वाला हूँ। लेकिन इससे आपको क्या ?" युवकने एक मोहक-सी मुसकान होठो पर लाकर पूछा।

"मै शायद—" सुन्दरीने कुछ सकोच और आतुरताके मिले-जुले स्वरमे कहा, "शायद ऐसे देशको और वहाँके कुछ युवकोको एक बार देखना चाहूँ।"

"तब मै भी शायद आपकी कुछ सहायता कर सकूँ। आप अपने प्रेमी युवकोको भी साथ ले चलना चाहेगी ?"

"उनकी बात बादमे देखी जायगी। मै पाँच-छ पतियोसे अधिक नही रखना चाहती। अच्छे पतियोके चुनावमे मुझे आलस और पक्षपात नही करना चाहिए।"

कत्थक बने हुए युवकने अपनी कहानी, जो पूरी हो ही आई थी, पूरी की और सो गया। सुन्दरीको उस रात नीद नही आई।

दूसरे दिन सुबह वे तीनो यात्री उस सुन्दरीको साथ लेकर अपने देशको लौट गये। चीन देशके तथा-कथित युवकोकी सब बाते थोडी बहुत इन युवकोमे मौजूद थी।

× × ×

मेरे कथागुरुका कहना है कि कभी बहु-पत्नी और कभी बहु-पतिके युग मानव-समाजके इतिहासमे कई बार आये-गये है और निकट भविष्यमे ही बहु-पत्नीका युग पुरुषोकी कमीके कारण फिरसे आता दीखता है, परन्तु मानव-समाजने सत्यकी अपेक्षा कथा पर ही सदैव अधिक ध्यान दिया है और सत्य पर अधिक ध्यान देनेकी बारी अभी तक उसके इतिहासमे नही आई और न आनेकी कोई सम्भावना ही समीप दीखती है।
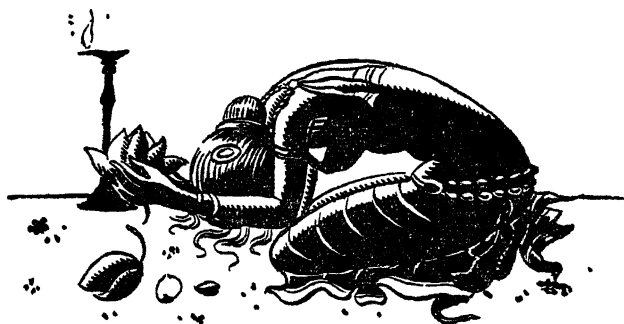
आत्मदान

यह कथा अधूरी है, इसलिए मानव-समाजके आधे भाग, केवल पुरुष-वर्गके लिए ही रुचिकर और ग्राह्य हो सकती है ।

किसी युगमे पृथ्वी पर एक छोटा-सा देश था, जिसमे केवल स्त्रिया ही स्त्रियाँ थी । उनकी अधिष्ठात्री एक कुलदेवी थी और वे स्त्रियाँ युवा, पूर्णतया हृष्ट-पुष्ट और अमर थी, अलबत्ता वे सभी बहुत कुरूपा थी ।

एक समय ऐसा आया कि प्राकृतिक प्रकोपोकी मारी किसी पुरुष जातिको अपना देश छोडकर इस स्त्री-देशमे आकर बसना पडा । स्त्रियोकी कुलदेवीने उन्हे बसनेकी अनुमति दे दी । उस युगके पुरुष भी साधारणतया असुन्दर थे, पर उनमे कुछ सामान्यतया सुन्दर और कुछ थोडेसे विशेष सुन्दर भी थे ।

कुलदेवीकी अनुमतिसे उन पुरुषोने इन स्त्रियोसे विवाह कर लिये । विवाहके सभी सुख और उपभोग जो आजकलके स्त्री-पुरुष जानते है, वे लोग भी जानते थे ।

कुलदेवीने पुरुषोको आदेश दिया

"तुम लोग सुखपूर्वक इन स्त्रियोसे विवाह करो । इनके ससर्गसे तुम भी अमर हो जाओगे । लेकिन इनके गर्भसे बच्चे नही पैदा होने चाहिए । यदि किसी दम्पतिके बच्चे पैदा हुए तो वे सदैव जुडवाँ—एक पुत्र और एक पुत्री साथ—पैदा होगे और उनके जन्म लेते ही उनके माता-पिताका अमरत्व जाता रहेगा । ज्यो-ज्यो ये बच्चे बडे होगे, माता-पिताके शरीर रोगी और क्षीण होते जायगे और उनके युवा होते-होते माँ-बापकी मृत्यु हो जायगी । पति-पत्नीके सहवाससे साधारणतया बच्चे उत्पन्न नही होगे लेकिन यदि कोई दम्पति, या उन दोनोमेसे एक भी, सन्तानकी कामना करेगा तो सन्तान अवश्य उत्पन्न होगी और अपनी मृत्युके वे दोनो स्वय कारण बनेगे ।"

उस देशमे खाने-पीने और पनपनेके साधनोकी कोई कमी नही थी। जीवित रहनेकी कामनाके आगे किसीने सन्तानकी कामना नही की। कुछ वर्ष इसी प्रकार बीत गये। भयकर भूचालोंसे नष्ट हुए जिस देशसे बच-बचाकर यह पुरुष जाति आई थी, उसमे स्त्रियाँ भी थी जो रूपमे साधारणत सुन्दर और असुन्दर सभी प्रकारकी थी। यहाँ इतने दिन बीत जाने पर कुछ पुरुषोको धीरे-धीरे इन स्त्रियोसे इनकी कुरूपताके कारण असन्तोष होने लगा। उन्हे लगने लगा कि उनकी पत्नियाँ कुछ सुन्दर होनी चाहिएँ। सम्भवतया ऐसा असन्तोष कुछ सुन्दर पुरुषोके ही मनमे जागा जिन्हे अपनी पुरानी जातिकी सुन्दर स्त्रियोकी याद थी।

लेकिन सुन्दर पत्नियाँ उस देशमे दुर्लभ थी। उस देशको छोडकर बाहर जानेका उनके पास कोई साधन नही था और न कोई जानकारी ही थी।

"मै अपनी पत्नीके गर्भसे यदि सन्तान उत्पन्न करूँ तो हम दोनोकी मृत्यु अवश्य हो जायगी, लेकिन हमारे बच्चे मेरे बराबर सुन्दर नही तो कमसे कम मेरी पत्नीके बराबर कुरूप भी नही होगे। वे यदि कुछ भी सुन्दर हुए तो उन्हे देखकर मुझे बडा सुख होगा। इस देशमे मेरी बच्ची यहाँकी स्त्रियोसे कुछ तो सुन्दर होगी ही। यहाँकी स्त्रियोकी कुरूपतासे मै ऊब उठा हूँ।" उनमेसे एक कुछ सुन्दर पुरुषने एक बार सकल्प किया।

वह व्यक्ति साहसी, सौन्दर्य-प्रिय और प्रभावशाली था। अपनी पत्नीको भी उसने पुत्रोत्पत्तिके लिए तैयार कर लिया।

यथासमय उनके एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई। ये दोनो बालक पितासे तो बहुत कम, लेकिन माँ की अपेक्षा कुछ सुन्दर थे। इन्हे देखकर माता-पिताने बडा सुख माना।

इस पुरुषने अब अपना सारा समय और शक्ति दूसरे लोगोको पुत्रोत्पत्तिके लिए प्रेरित और प्रभावित करनेमे लगानी प्रारम्भ की। बहुत लोगोने उसके इस घातक प्रचारका विरोध किया, पर वह अपने काममे

अडा ही रहा। पत्नी सहित उसका शरीर धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और दोनोकी मृत्युका समय निकट आ गया। अपने जीवन-कालमे उसने सुन्दर वर्गके छह और पुरुषोको पुत्रोत्पत्तिके लिए राजी कर लिया। उसे इससे बडा सन्तोष हुआ। बच्चे सात वर्षके भी पूरे न हो पाये थे कि इस दम्पत्तिकी मृत्यु हो गई। कुलदेवीके आदेशसे इन बच्चोके पालन पोषणका भार एक अन्य दम्पतिको सौप दिया गया।

यथासमय उन छहो दम्पतियोके भी एक-एक पुत्री और पुत्र उत्पन्न हुए और इन नये माता-पिताओकी भी मृत्यु हो गई। इनकी मृत्युके पहिले इनके विचार और प्रचारके द्वारा एक छोटा-सा दल ऐसा बन गया था जो पुत्रोत्पत्तिके लिए अपना जीवन उत्सर्ग करनेके लिए प्रस्तुत था। इन लोगोका विचार था कि इस प्रकार आत्म-बलिदान द्वारा उनका कुरूप समाज—विशेषकर स्त्री समाज—सुन्दर हो जायगा और आगे आने वाली पीढियाँ सौन्दर्यका सुख पा सकेगी। देशहित और लोकहितके लिए वे अपने बलिदानको अधिक नही मानते थे।

इन सातो परिवारोके बच्चोके विवाह, इनके सयाने होने पर, कुलदेवीके आदेशानुसार इन्ही सात परिवारोके भीतर ही किये गये। इन सात दम्पतियो-मे से केवल तीनने ही पुत्रोत्पत्ति करना स्वीकार किया और शेष चार अपने देशवासियोकी भाति अमरत्वका जीवन भोगने लगे।

यह क्रम चलता रहा। पुत्रोत्पत्तिके लिए आत्म-बलिदान करनेवालोकी सख्याके साथ-साथ सुन्दर और कुछ अधिक सुन्दर स्त्री-पुरुषोकी धीरे-धीरे वृद्धि होती गई। आगे चलकर सारा मानव-समाज एक तरहसे दो अलग-अलग जातियोमे बँट गया—एक पुत्रोत्पत्तिके समर्थक और अनुयायी, और दूसरे अमरत्वके अनुगामी।

कुछ शताब्दियाँ और इसी प्रकार बीत गईं। देशके शासनकी बाग-डोर अभी अमर पुरुषोके ही हाथमे थी, सख्यामे भी वे बहुत अधिक थे। दूसरी मर्त्य जातिके लोगोको वे कुछ नीची दृष्टिसे देखने लगे थे और

कभी-कभी इन दोनो दलोमे कुछ सघर्ष भी उठ खडा होता था । मर्त्यदलके कुछ लोग पुत्रोत्पत्तिसे विमुख होकर अमर-दलमे आ मिलते थे और अमर-दम्पतियोके दूसरे पक्षमे आ मिलनेकी सनसनी पूर्ण खबरे तो अक्सर सुनाई दे जाती थी । इन सबका परिणाम यह था कि पुत्रोत्पत्तिके समर्थकोकी सख्या तेजीके साथ बढ रही थी और अमरजनोकी बहुत धीमी गतिसे, क्योकि मर्त्यजनोकी सन्ताने ही कभी-कभी उनमे मिलकर उनकी सख्या-को कुछ बढा देती थी ।

दैवी विधान एक बार ऐसा हुआ कि अमर कुरूप जातिकी एक स्त्री मर्त्य-जातिके एक सुन्दर युवक पर मुग्ध हो गई । उसने अपने अमर कुरूप पतिको छोडकर इस सुन्दर युवकसे विवाह कर लिया । उस युवकने इस कुरूपा पत्नीको कैसे स्वीकार किया, यह अभी तक एक रहस्य है । अमर जातिमे इससे बडी सनसनी फैली और दोनो जातियोके बीच सघर्ष जगा और बढता गया । इन दोनो जातियोकी जन-सख्या इस समय तक बराबरी तक पहुँच गई थी । इस सघर्षका अन्त एक भयकर लोक-युद्धमे ही हुआ । मर्त्यजातिके सभी युवा-पुरुष इस युद्धमे पराजित करके देशके बाहर निकाल दिये गये और कुछ जो पिता बनकर अपना अमरत्व खो चुके थे, मारे भी गये । सारा देश फिरसे सुन्दर पुरुषोसे प्राय शून्य हो गया । विजयी जातिके पुरुषोने पराजित जातिकी सुन्दर स्त्रियोसे बरबस विवाह कर लिये । उनमेसे प्राय सभीकी दो-दो पत्नियाँ हो गई ।

इन नई पत्नियोने कुलदेवीकी शरणमे पुकार की ।

कुलदेवीने सान्त्वना देते हुए आदेश दिया:—

"यह सचमुच तुम्हारे लिए सकटका समय आया है । इसे बुद्धिमत्ता पूर्वक सहन करो । तुम्हारे शरीर बन्धनमे अवश्य है, पर तुम्हारी कामनाएँ स्वतन्त्र है । धैर्य, और जहाँ तक हो सके अपने नये पतियोसे सहयोगके साथ जीवन बितानेका प्रयत्न करो । मै उन्हे अधिक दोषी नही ठहरा सकती । जो कुछ हो रहा है, दैवी-विधानके अनुसार और लोककल्याणके

लिए ही हो रहा है। धैर्य और त्यागके साथ अच्छे दिनोकी प्रतीक्षा करो।"

इन महिलाओने धीरे-धीरे धैर्यको ही अपना लिया। कुरूप पतियोका ससर्ग यद्यपि इन महिलाओके लिए अत्यन्त असह्य था फिर भी कुलदेवी-के आदेशमे उन्हे आशाकी एक झलक दिखाई दी।

इस घटनाके एक वर्षके भीतर ही सारे देशमे हाहाकार मच गया। उन सभी सुन्दर पत्नियोने अपने नये पतियोके ससर्गमे आते ही चुपचाप सन्तानकी कामना कर ली थी और उनकी सन्तानोकी उत्पत्ति प्रारभ हो गई थी। उन अमर और अमरताके अनन्य उपासक पुरुषोकी मृत्युका सामान जुट गया था, वे पिता बनते जा रहे थे, या बननेवाले हो गये थे। कुछ पुरुषोने क्रोधके आवेशमे आकर अपनी इन पत्नियोको मार डालना चाहा और कुछने सचमुच ऐसा किया भी। जिन पत्नियोके पुत्र उत्पन्न हो चुके थे उनमेसे कुछका वध कर दिया गया, पर जिनके गर्भमे सन्तान थी वे पुत्रोत्पत्तिके समय तक अमर थी और उनकी गर्भस्थ सन्तान भी अमर थी। कुछ भी था, पर अब किसी प्रकार भी उन पुरुषोकी डूबती हुई अमरता बचाई नही जा सकती थी। सात-आठ वर्षके भीतर ही सारी कुरूप पुरुष जाति—अपनी नई सन्ततिकी इस अवस्था तक पहुँचते पहुँचते—इस ससारसे विदा हो गई। सारे देशमे सुन्दर स्त्रियो और कुरूप पुरुषोका अभाव हो गया। देशकी जन-सख्या बहुत घट गई। शेष जनतामे प्राचीन युगकी अमर चिरयुवा कुरूपा स्त्रियाँ तथा नई पीढीके किशोर बालक-बालिकाएँ ही अधिक रह गये। ये बालक अपनी माताओ और उनके सुन्दर पूर्व पतियोके मुकाबले बहुत कम सुन्दर थे क्योकि उनके पिता सभी कुरूप थे, फिर भी अपने पिताओ और उनकी पूर्व पत्नियोकी अपेक्षा वे अवश्य सुन्दर थे।

यह नई पीढी अभी बाल-वयकी ही थी, अत देशका शासन-प्रबन्ध पुरानी और अमर कुरूपा स्त्रियोके हाथमे आ गया। कछ ही दिनो बाद

इन अमर स्त्रियोको पतियोका अभाव अखरने लगा। इन्होने एक व्यापक षड्यन्त्र रचा। बालक और बालिकाओको इन्होने अलग-अलग कर दिया और लडकोके नगर ही लडकियोके नगरसे अलग कर दिये। इस षड्यन्त्र-के अनुसार एक निश्चित दिन सभी नवयुवा लडकियोको देशकी पार्वत्य सीमा पर ले जाकर उन्हे देशसे बाहर कर दिया गया और उनके वापिस न आ सकनेका सुदृढ प्रबन्ध कर दिया गया। देशमे रोके हुए नवयुवकोको उन्होने बचपनसे ही शिक्षा दी कि मनुष्य अमर है, उसे अमर ही रहना चाहिए, सन्तानकी कामना एक भयकर प्रलोभन और पाप है। उनके निकटवर्ती पूर्वज इस प्रलोभनमे पडकर ससारसे मिट गये, किन्तु उनके आदिम पूर्वज अमरत्वके ही उपासक रहे है और उन्हीकी परिपाटी पर इन बच्चोको भी चलना चाहिए।

बालकोके मस्तिष्कमे यह शिक्षा घर कर गई। जब वे युवा हुए तो इन चिर युवा स्त्रियोने बहुत कुछ निश्चित भावसे उनसे विवाह कर लिये।

विवाह-वर्षके बाद, देशके वार्षिक पर्व समारोह पर कुलदेवीने नये पतियोको सम्बोधित करते हुए कहा —

"मुझे आज अपने बच्चोको देखकर बडी प्रसन्नता है। ये किसी समयके अपने पूर्वजोकी अपेक्षा अधिक सुन्दर है। सुन्दर पत्नियॉ पुरुषोका सहज-सिद्ध अधिकार है। आत्म-बलिदान ही आत्म-सृजनका साधन है। तुम्ही लोग इसी देशमे अपने पिछले जन्मोमे अपने पूर्वज थे और अत्यन्त कुरूप थे। पुराने शरीरोका त्याग कर ज्यो-ज्यो तुम नये शरीर धारण करते जाओगे त्यो-त्यो वे शरीर अधिक सुन्दर होते जायगे। मनुष्यत्वका सबसे बडा सुख सुन्दर पति और सुन्दर पत्नीमे है। तुममेसे जो चाहो, पुत्रोत्पत्ति-की कामनाके लिए स्वतन्त्र हो। जो ऐसी कामना करेगे वे मेरे अधिक प्यारे सुपुत्र होगे।"

स्त्री-समाजमे कुलदेवीके इस आकस्मिक भाव-परिवर्तनसे तहलका मच गया, पर अब हो भी क्या सकता था। अधिकाश पुरुष कुलदेवीकी

इस इच्छाके अनुयायी बन गये। अमर पत्नियाँ भी बहुत कम ही अपने इन नये पतियोसे मुक्त हो सकी। कुछ ही शताब्दियोमे उन अत्यन्त कुरूपा स्त्रियोका भी इस ससारमे विनाश हो गया। उनकी सन्ततिका, और उनसे उत्पन्न सन्ततियोका रूप धीरे-धीरे निखरता ही गया।

पहिले युद्धमे बहिष्कृत पुरुषो और कुरूपा स्त्रियोके षड्यन्त्रसे निकाली हुई सुन्दर युवतियोका परदेशोमे ससर्ग हो जानेसे, उस देशके बाहर भी स्त्री-पुरुषोकी सख्या बढ चली थीं, क्योकि अब दैवीविधानमे नये परिवर्तनके अनुसार, प्रत्येक दम्पति अपने जीते-जी पुत्र-पुत्रियोके एकसे अधिक—तीन चार तक—जोडे उत्पन्न कर सकता था। आगे चलकर उन्हीकी सन्ततियोसे ससारके बहुतसे देश आबाद हो गये। ये सब देश और इनकी जातियाँ पुत्रोत्पत्ति करने वाली अत मर्त्य और धीरे-धीरे पीढी-दर-पीढी सुन्दर होने वाली है। कहते है कि अब भी उस प्रारम्भिक देशमे कुछ कुरूपा अमर स्त्रिया और कुछ थोडेसे वैसे पुरुष भी बसते है और वहाँकी कुलदेवी का यह विशेष प्रतिबन्ध है कि उस देशमे नई मानवताका कोई व्यक्ति पहुँचकर अमर और कुरूप न होने पाये।

कुरूप शरीरकी अमरता ही मनुष्यकी वास्तविक मृत्यु और आत्म-दान पूर्वक शरीरका परिवर्तन ही उसकी सुन्दरता और जीवन है।

———

उरोजाका असमंजस

भुवर्लोककी गन्धर्व-कन्या उरोजाने जब देखा कि उसका यौवन और रूप उसके नियन्त्रणसे बाहर निखरता ही जाता है और भुवर्लोकके समस्त काम-देश-निवासियोकी भेट-पूजामयी काम-आराधनाएँ उसे तृप्त नही कर पाई तब उसने भूलोककी ओर दृष्टि फेरी। उसने सुन रखा था कि भूलोकके निवासी मनुष्य भी प्राय बहुत सुन्दर और पौरुषवान होते है और उनमे प्रेम-आराधनाकी क्षमता काम-देशियोसे कम नही होती।

भूलोकके गगा तटवर्ती एक प्रसिद्ध तीर्थनगरको उरोजाने अपने प्रेम-व्यवसायके लिए चुना। तीर्थनगरके प्रधान मन्दिरके समीप ही एक सुविधा-जनक स्थान उसने पसन्द किया और एक अभूतपूर्व सुन्दरी षोडशी मानवी-का रूप धरकर वहाँ जा विराजी। उसका रूप और यौवन निखारकी इस सीमा पर पहुँचे हुए थे कि उन्होने उसके शरीरको ढक लिया था और उनके सामने उसके शरीरको खोज-देखना मानव-दृष्टिके लिए कठिन था।

उरोजाका पहिला दिन प्रात से साय तक, अपने रूप-पुजारियोकी प्रतीक्षामे बीता। उसके सामनेके पथसे दिनभरमे सहस्रो मनुष्य निकले, उसके निवास-शिविरके सामनेसे निकलते समय सबने अपनी चाल धीमी की और सबने उसे आँखे भर-भर देखा। लेकिन उसकी ओर एक भी व्यक्ति नही मुडा, कोई भी उसके पास नही आया और किसीने भी उससे एक शब्द नही कहा। सबने राधाकृष्णजीके मन्दिर पर जाकर अपनी भेट चढाई और उसी राह अपने-अपने स्थानोको लौट गये।

'भूलोकके मनुष्य तो बडे उदासीन, नीरस और निष्ठुर जान पडते

है, उरोजाने सोचा और उसका हृदय एक दु सह निराशा-वेदनासे भर गया। उरोजाकी वह रात करवटे बदलते उसकी आँखोमे ही बीती।

दूसरा दिन आया। आज राधाकृष्णके पुजारियोकी सख्या पिछले दिनसे तिगुनी थी। पुजारियोकी सारी भीड प्रतीक्षामग्ना उरोजाके सामनेसे निकली। उन सबोने पिछले दिनकी भाँति उसके सामने पहुँचकर अपनी चाल धीमी की, भर-भर आँखे उसे देखा और चुपचाप आगे बढते गये।

उस दिनकी भेट-पूजासे राधाकृष्णकी जोडी मालामाल हो गई। उरोजाका आँचल रीता ही रह गया।

'राधाकृष्ण—क्या ये राधाकृष्ण मुझसे अधिक सुन्दर होगे ? इनकी उपासनाके लिए सारा भूलोक टूटा पड रहा है। मै उनके एक भी उपासक-को अपनी ओर आकृष्ट नही कर सकती—वल्कि मेरे यहाँ आनेसे उनकी सख्या और भी बढ गई। तो फिर मुझपर किसीका तनिक भी ध्यान नही है ? लेकिन देखते तो सभी मेरी ओर बडे ध्यानसे है। इस देखनेका अर्थ तो प्रेम ही होना चाहिए। लेकिन इसका अर्थ घृणा और तिरस्कार ही होगा, जब कोई मेरे पास नही फटकता, मुझसे एक शब्द भी नही बोलता।' उरोजा ऐसे ही न जाने क्या-क्या सोचती रही, कठिन चिन्तामे डूबी रात भर तडपती रही।

तीसरे दिन रात रहते ही राधाकृष्णके पुजारियोका ताँता बँध गया। उरोजाका यह दिन भी वैसा ही असफल, निराश बीता। आज मन्दिरके भक्त यात्रियोकी सख्या पिछले दिनसे नौगुनी थी।

उरोजाकी तीसरी वेदना-भरी रात प्रारम्भ होनेको ही थी कि अपने शिविर-द्वार पर किसीके आनेकी आहट उसने सुनी।

उरोजा उठकर धडकते हुए हृदयसे बाहर आई और आगन्तुकका स्वागत किया। वह पडौसके एक राज्यका युवराज था, अत्यन्त रूपवान, हृष्ट-पुष्ट। उरोजाको मानो उसके प्राण मिल गये। युवराजने रत्न-

मणि-जटित अमूल्य भेटे सुन्दरी उरोजाके सम्मुख रखकर अपना प्रेम-अभिप्राय उसके सामने रख दिया। उरोजा उसे पाकर कृतार्थ हो गई। युवराजने बताया, वह राधाकृष्णकी उपासनाके लिए नही, उस सुन्दरीकी आराधनाके लिए ही उस तीर्थ-नगरमे आया था। उरोजाने सन्तोषकी साँस ली, उसे अन्ततोगत्वा एक उपासक मानवपुरुष तो अपने लिए मिला।

युवराजके साथ उसका प्रेम-व्यापार चल पडा। धीरे-धीरे उसे यह विदित हो गया कि राधाकृष्णके पुजारी वास्तवमे उसके ही मूक पुजारी थे। दिन और राते बीतने लगी। तीर्थनगरके यात्रियोकी सख्या उसी रेखात्मक अनुपातसे बढती गई। युवराजके दिन राधाकृष्णकी पूजामे बीतते और राते उरोजाकी उपासनामे। लेकिन उरोजाकी अदम्य काम-नाएँ एक मानव-उपासकसे कैसे पूरी हो सकती थी! उसे तो बहुत चाहिए थे! उसकी अतृप्त प्यास उमडने लगी।

एक रात, जब कि उरोजा और युवराज प्रेमालापमे निमग्न थे, एक अन्य आगन्तुकने शिविरका द्वार खटखटाया।

उरोजाने तत्काल उठकर युवराजके रोकनेसे पहिले ही, एक नई आशा और उल्लाससे धडकते हुए हृदयको लेकर द्वार खोल दिया। आगन्तुक युवराजसे भी अधिक रूपवान और हृष्टपुष्ट एक युवक था। यह युवक उस मठका अधिकारी महन्त और मन्दिरका प्रधान पुजारी था।

"युवराज!" युवराज पर दृष्टि पडते ही युवक महन्तकी त्यौरियाँ चढ गई और उसका कठोर स्वर गूँज उठा, "तुम यहाँ! मेरी पवित्र तीर्थ-भूमिमे यह पापाचार! निकलो यहाँसे!"

युवराजका मुँह पहिलेसे फीका पड चुका था। वह चुपचाप उठा और सिर झुकाये द्वारके बाहर चला गया।

उरोजा ठगी-सी देखती रह गई!

महन्तके वैभव और अधिकारके सामने युवराजका वैभव और शासन-बल कुछ भी नही था। बडे-बडे राजे-महाराजे उसके पैरो पर सिर झुकाते

थे और उसकी आज्ञापालनके लिए हाथ बाँधे खडे रहते थ। महन्तकी एकत्रित सम्पत्ति किसी राजा-महाराजाके कोषसे कम नही थी।

युवराजके चले जानेके बाद उस रूपवान युवक मठाधीशने रत्न-मणियोकी एक अतुल धन-राशि उरोजाके चरणो पर रखकर कहा, "सुन्दरी, जिस दिनसे तुम यहाँ आई हो उसी दिनसे मै तुम्हारे रूपका पुजारी हो उठा हूँ। तुम्हारे प्रथम दर्शनके समयसे अब तकका एक-एक क्षण मेरा पहाड-सा कटा है। दूसरे मठोके अभ्यागत धर्माधिकारियोसे घिरे रहनेके कारण, उनके लोक-भयसे इस समय तक मुझे अवसर नही मिला। अब उनके चले जाने पर, उनसे अवकाश पाते ही तुम्हारी सेवा-मे उपस्थित हुआ हूँ। इस मन्दिरका अतुल धन-वैभव और मेरा सर्वस्व अब तुम्हारा ही है।"

उरोजा कुछ समझ न सकी। युवराजके प्रति मठाधीशके व्यवहारसे वह स्तब्ध रह गई थी।

"किन्तु—श्रीमन्" उरोजाने क्षणभर बाद कहा, "जिस बातका प्रस्ताव आप कर रहे है, वही तो युवराजने किया था। उसके प्रति आपके व्यवहारको देखकर मै प्रेम-व्यवहारको पापाचार समझूँ या आपके प्रस्ताव-को देखकर उसे पुण्याचार समझूँ? आपके यहाँकी धर्मनीतिमे—"

"इतनी-सी बात" मठाधीशने कहा, "इतनी-सी बात तुम्हारी समझ-मे नही आती? युवराजके साथ मैने कोई अनुचित व्यवहार नही किया। स्वपत्नीसे भिन्न किसी अन्य रमणीसे प्रेम-व्यापार करना पुरुषके लिए पापाचार ही है, विशेषकर तीर्थस्थलमे। किन्तु मै—मेरे लिए—इस निर्जन एकान्तमे—तुम्हारा यह रूप—" कहते-कहते मठाधीशने अपनी बाँहे उसकी ओर बढा दी और, उनके उरोजाके शरीर तक पहुँचनेके पहिले ही, उस गन्धर्व रमणीने अपना रूप समेटा और अदृश्य हो गई!

भू-मानवकी धर्मनीतिकी जटिलता और उसके पाप-पुण्यकी दुरूहता-से वह एकदम घबरा गई थी!

गन्धर्व-लोकमे पहुँचकर उसने दूसरी उत्सुक गन्धर्व-बालाओका समाधान किया

"भूलोकका मनुष्य जिस बातको स्वय निस्सकोच और स्वेच्छापूर्वक करना पसन्द करता है उसे ही अपने सिवा अन्य सबोके लिए पापाचार समझता है। वह अधिकाश सुख-साधनोको अपने लिए पुण्य और दूसरोके लिए पाप समझता है। वहाँकी धर्मनीति और पाप-पुण्यकी कसौटी बडी जटिल है, हम लोगोका वहाँ निर्वाह नही हो सकता!"

वैवाहिक-विधान

स्वर्गलोककी विधान-निर्मात्री परिषद्ने नियम बनाया था कि भूलोक पर जन्म लेनेवाली आत्माओके लिए यह आवश्यक नही है कि प्रत्येक भौतिक जन्ममे उसी आत्मव्यक्तिसे विवाह करे जिससे पिछले जन्ममे किया हो—वे अलग-अलग जन्मोमे अलग-अलग व्यक्तियोसे विवाह कर सकती है। और इसमे कोई आचारिक या नैतिक दोष नही है।

इस नियमके बननेके पहले विधान-परिषद्के कुछ कट्टर-पन्थी सदस्योने इसका तीव्र विरोध किया था और इसे भ्रष्टाचार बताया था। किन्तु उनकी इच्छानुसार नियम बनानेमे सबसे बडी कठिनाई यह थी कि अलग-अलग प्रकारके कर्म-फलो और प्रवृत्तियोके कारण प्रत्येक आत्मदम्पतिको एक ही समयमे और एक-सी परिस्थितिमे जन्म देना असम्भव था, इसलिए पृथ्वी-लोकमे जन्म लेकर उनका बिछुडना और दूसरे आत्म-व्यक्तियोसे ही विवाह करना अनिवार्य था। और दूसरी बात यह भी थी कि विधान-परिषद्के दूसरे दलके सदस्य इस बातको आवश्यक और श्रेयस्कर समझते थे कि भिन्न-भिन्न जन्मोमे आत्माएँ भिन्न-भिन्न व्यक्तियोसे विवाह कर भिन्न-भिन्न प्रकारके सम्पर्क-सम्बन्धी अनुभव और क्षमताएँ प्राप्त करे।

भूलोकमे मनुष्योकी विधान-निर्मात्री परिषद् जब पहली बार जुटी—उसके बादसे अनेक बार उन प्रारम्भिक विधानोमे, भूतलके अलग-अलग देशोमे अलग-अलग प्रकारके उलट-फेर हो चुके है—तब विवाहका विषय आनेपर कुछ सदस्योने प्रस्ताव रखा कि प्रत्येक पुरुष और स्त्रीको अधिकार होना चाहिए कि वह जब चाहे एक विवाह सम्बन्धका विच्छेद करके दूसरा स्थापित कर ले। ऐसा करनेसे वह भिन्न-भिन्न प्रकारके सम्पर्क-सम्बन्धी अनुभव और क्षमताएँ भी अधिक शीघ्रतासे प्राप्त कर सकेगा। इस

प्रस्तावके साथ यह भी कहा गया कि स्वर्गलोक वालोने भी ऐसे ही विधानकी उपयोगिता स्वीकार की थी ।

परिषद्के कट्टरपन्थी पण्डित-सदस्योने इसका प्रबल विरोध किया । उन्होने कहा कि हमारे भूलोक पर प्रत्येक व्यक्ति एक पत्नीव्रत और पतिव्रत का निर्वाह करेगा । स्वर्गलोकमे तो धर्म-कर्म कुछ रह नहीं गया । वहाँ तो अविवाहित देवताओ और अप्सराओकी सख्या दिन-प्रतिदिन बढ रही है । हम उन भ्रष्टाचारियोका अनुकरण क्यो करने लगे !

पण्डित-वर्गका ही विधान परिषद्मे बहुमत था । भूलोकमे प्रत्येक व्यक्तिके लिए आजीवन एक पति और एक पत्नीका नियम बना दिया गया ।

ग्राह्य-अग्राह्य, शुद्ध-अशुद्ध, ऊँच-नीच, जाति-कुजातिके भेदभाव और धर्म-कर्मका उन दिनो भूलोकके चक्रवर्ती राज्यमे बोलबाला था, शासन और समाजमे पवित्र रक्त वाले पण्डितोकी ही चल रही थी ।

एक बार ऐसा हुआ कि पूर्वी गोलार्द्धकी राजधानीके एक बडे सेठकी मृत्यु पर उसकी पतिव्रता पत्नीने उसके शवके साथ सती होनेका निश्चय किया । उसने कहा कि मै प्रत्येक जन्ममे इन्हीको अपना पति बनाना चाहती हूँ और किसी जन्ममे किसी दूसरे पुरुषके साथ विवाह करना असह्य और अपने पतिव्रत-धर्मके विरुद्ध समझती हूँ ।

कुछ लोगोने उसे ऐसा करनेसे रोकना चाहा, किन्तु राजधानीके पण्डितोने उसका समर्थन किया और उसके निश्चयकी स्तुति करते हुए उसे ससारकी सबसे बडी सती साध्वी और आदर्श एव अनुकरणीय नारी बताया । उन्होने कहा कि हमारे समाजकी प्रत्येक नारीको अपने पतिव्रत-बलसे इस योग्य बनना चाहिए कि वह प्रत्येक जन्ममे अपने पूर्व जन्मके पतिको वरण कर सके । भूलोकके स्त्रीत्वका यही सबसे ऊँचा उद्देश्य होना चाहिए ।

सेठ-पत्नी अपने पतिके साथ जलकर सती हो गई।

इसके बादसे भूमण्डल पर सती होनेकी प्रथा जारी हो गई—यह पिछले भारतीय सती-प्रथाके युगसे बहुत-बहुत, हजारो बरस पहिलेकी बात है, पिछला सती-प्रथा-युग तो उस युगकी एक छाया-मात्र ही था—और भूमण्डलकी नारियाँ प्रत्येक जन्ममे उसी एक पतिको पानेकी प्रवृत्तिकी ओर अधिकाधिक सख्यामे भुकने लगी। पण्डित-वर्गने इस प्रथाको पूरा सहयोग और प्रोत्साहन दिया।

सेठ-पत्नीके सती होनेके लगभग सौ वर्ष बाद राजधानीके प्रधान पण्डितके—जो कि पूर्व समयके प्रधान पण्डितके पौत्र थे—घर एक सुन्दरी कन्याका जन्म हुआ। वह इतनी सस्कारमयी थी कि तीन वर्षकी आयुमे ही उसने अपने पिछले जन्मका सारा हाल विस्तारपूर्वक बता दिया। आजकल भी कोई-कोई बच्चे ऐसा करते हुए आजकलके शिक्षित समाजमे पाये गये है। पूर्व जन्ममे यही कन्या सेठ-पत्नी थी। इस विचित्र चमत्कार-पूर्ण घटनाका विवरण राजकीय पत्रालय (रजिस्ट्रेशन डिपार्टमेट) मे भी लिखवाकर रख लिया गया। पण्डित-परिवार उस सती-साध्वी देवीको अपने घरमे पाकर बहुत प्रसन्न हुआ।

जब कन्या सयानी हुई और उसके विवाहका समय आया तब उसके पिताने अच्छे वरोकी टटोल प्रारम्भ की।

कन्याको जब यह बात ज्ञात हुई तब उसने पिताको कहलवा भेजा कि उसके वरके लिए चिन्ता न करे, वह तो पहलेसे ही निश्चित है और अमुक नगरमे अमुक स्थानमे अमुक नामके पिताका इकलौता बेटा है।

दूत उस नगरको दौडाये गये। इधर विवाहके आयोजनमे बडे समारोह-के साथ पण्डितोकी सभा वरके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगी।

दूतोने एक रोग-ग्रस्त, दुबले-पतले, म्लेच्छ जातिके एक आठ वर्षके लडकेको, जो कि एक दरिद्र मास-व्यवसायीका इकलौता बेटा था, पण्डितोकी सभामे ला उपस्थित किया। बालकका पिता भी उसके साथ आया था।

"यह मेरी कन्याका वर कदापि नही हो सकता! हटाओ इसे यहाँसे मूर्खो! तुम किसे पकड लाये हो?" पण्डितने बिगड कर कहा।

बालकके पिताने एक मुहरबन्द पत्र पण्डितजीके हाथमे रख दिया। पत्र पढा गया। तीन वर्षकी आयुमे उस बालकने अपने पिछले जन्मका जो हाल बताया था उसका विवरण राजकीय पत्रविभाग (रजिस्ट्रेशन विभाग) मे लिखवा कर रख लिया गया था, उसी विवरणकी यह राज-मुहर द्वारा प्रमाणित प्रतिलिपि थी। यह बालक पिछले जन्ममे राजधानीका वह सेठ ही था। अपने-अपने कर्मवश सेठको दरिद्री म्लेच्छ-पुत्रका और सेठ-पत्नीको राज-पण्डितकी कन्याका जन्म मिला था।

राज-पण्डितकी कन्याका एक म्लेच्छ-पुत्रके साथ विवाह—यह कैसे सहन हो सकता था! पण्डितने अपना माथा ठोक लिया।

यह विवाह होना चाहिए या न होना चाहिए, इसी विवादको लेकर पण्डित-सभामे दो दल हो गये। कन्याके पिताका कहना था कि यह विवाह न होना चाहिए, किन्तु कन्याने बाहर आकर वरमाला उस म्लेच्छ-पुत्रके गलेमे डाल ही दी और उसे उसके साथ जानेसे कोई रोक नही सका। कन्याके पिताको उन्हीके दलने जाति-च्युत करके राजपण्डित-पदसे हटवा दिया।

पण्डित-सभाके इस प्रकार छिन्न-भिन्न हो जानेसे पण्डित-वर्गका बल घट गया। विवाह-सम्बन्धी विधानमे परिवर्तनकी चर्चा सारे भूमण्डल पर तेजीसे चल पडी। इसका परिणाम इतना दूर-व्यापी हुआ कि सारे भू-मण्डलका साम्राज्य दो खण्डोमे बँट गया। दोनो खण्डोकी अलग-अलग विधान-परिषदे जुटी और उन्होने अलग-अलग अपने विधान बनाये और उसी समयसे भूमण्डलके आगे खण्डीकरणो और वैधानिक परिवर्तनोके क्रमका सूत्रपात हुआ।

———

कैशबुकके पन्ने

[जयतकी कैशबुकके अब तकके ३१० लेखोमेसे, सर्वप्रथमको छोड, सबसे अधिक महत्त्वके ३१ स्थल चुनकर यहाँ दे रहा हूँ। छपाई-की सुविधाके लिए मैने यहाँ कैशबुकके पन्नोका रूप कुछ बदल दिया है। आयुतिथिमे उसकी उम्रका वर्ष, महीना और दिन क्रमशः दिया हुआ है, रकमके खानेमे रुपया, आना, पाईकी जगह वह अपने व्यवहारियो या व्यापारियोके विचारो, भावो और कर्मोका ऋणी या साहूकार है। ५ कर्म एक भावके बराबर है और ५ भाव एक विचारके। यहाँ मैने सुविधाकी दृष्टिसे ही दी हुई रकमे दशमाश करके लिखी है, इससे तुलना-मे कोई अन्तर नहीं पडता। जयतका जीवन-प्रवाह उसकी कैशबुकके इन 'टीपनो' मे स्पष्ट झलकता है और वह मार्मिक है। उसकी आयुके साथ उसके जीवनमे आनेवाले भावों और विचारोका मिलान करनेसे दीखता है कि जीवन भावुक और प्रवाहपूर्ण ही नही, विचारशील और किसी ऊँचे लक्ष्यके लिए नियन्त्रित भी है। उसके प्रारम्भिक चौदह वर्ष-के लेखे—यानी घटनाएँ—तो ठीक उन्ही तिथियोके है, लेकिन उन लेखो-की भाषा तब की है, जब उसने लिखना सीख लिया था। १४ सालकी आयुके बाद उसके जीवनमें एक उतार-सा दीखता है, लेकिन वह सम्भवतः उतार नही है।

ऐसी कैशबुको और डायरियोमे मेरी विशेष दिलचस्पी है। आपने भी कुछ लोगो पर कुछ एहसान किये होगे और कुछके एहसान लिये होंगे। क्या आप भी जयतकी तरहका उनका कोई हिसाब-किताब रखते है ?

—रावी]

आय नाम और विवरण व्यय

१—आय आयुतिथि ५–२–११, महत्त्व-सख्या १२

वि भा.क.

३–४–४ मा

बारह दिनसे मेरा बुखार नही उतर रहा। मेरी तीन दिनकी अनुनय-विनय पर पसीजकर मा ने आज मुझे मोतीचूरके दो लड्डू खिला दिये है। तीन दिन हुए टोकरी भर लड्डू सन्दूकमे लाकर रक्खे गये है। तभीसे मेरा इन्ही पर जी लगा था। इस पर पिता जी ने मा को बहुत डॉटा है। मा ने कहा—"मुझसे लडकेका मन नही तोडा जाता, उसे कहॉ तक तरसाऊँ। लड्डू नही नुकसान करेगे।"[1] पिताजीने इसपर भी उन्हे बहुत डॉटा है और वह बहुत रोई है।

२—आय . आयुतिथि ५–८–१०, महत्त्व-सख्या १०.

४–४–१ पंचमा : कहार

मुझे विश्वास न था, लेकिन पचमाको पूरा विश्वास था कि मै अपने दरवाज़ेसे फेककर अपना लकडीका गेद दूर सामनेवाले पेड तक पहुँचा सकता हूँ। उसके हौसला दिलाने पर मैने गेद उधर फेका और वह सचमुच उस पेड तक पहुँच गया। अपनी शक्तिके परिचय पर मेरे आनन्दका ठिकाना न रहा और मै पचमाका बहुत कृतज्ञ हुआ।

---

[1] उस दिन से मेरा बुखार उतर गया था।

३—आय　आयुतिथि ६–१–२२, महत्त्व-सख्या १५

२–४–४ पिताजी

पिताजीने मुझे कोठरीमे बन्द करनेकी सज़ा दी थी। रोते-रोते मै भूखा कोठरीमे सो गया। किवाड खोलकर पिताजीने मुझे छातीसे लगाकर बहुत प्यार किया और मेरे भूखे सो जाने पर बहुत पछताये। मुझे आज मालूम हुआ कि पिताजी बुरे नही है और वह मेरी जिद पर ही मुझे सज़ा देते है और फिर भी बराबर प्यार करते रहते है।

४—आय　आयुतिथि ७–१–२६, महत्त्व-सख्या २२

२–२–१ बहनजी

आज झूला झूलते समय बहनजीने, जो मुझसे तीन साल बडी है, मेरी आँखे बन्द कराकर मुझे भगवान्‌के दर्शन कराये।[1]

५—आय : आयुतिथि ७–७–७, महत्त्व-सख्या २१.

२–२–२ ज़हीर : मित्र और सहपाठी

स्कूल जाते हुए आज ज़हीरने एक पैसेकी भुनी शकरकन्द खरीदी है और उसमेसे आधी मुझे दी है। मैने मनमे ज़हीरकी बहुत तारीफ की है और तय किया है कि मै भी अपने पैसोकी चीज़ ज़हीरको और दूसरे दोस्तोको बाँटकर खाया करूँगा।

---

[1]बड़े होने पर मालूम हुआ कि वह भगवान्‌के दर्शन नही थे, बल्कि आँखें दबानेसे हरएकको ऐसी रंगबिरंगी रोशनी दिखाई दे जाती है।

१—व्यय आयुतिथि ७–१०–१२, महत्त्व-सख्या १.
पंडित रामलाल ६–३–४

यह मुझे स्कूलमे पढाते है। यह मुझे बहुत मारते है। मै इनसे बहुत डरता हूँ। कल इन्होने एक दूसरे लडकेके कसूर पर मुझे मारा था। आजसे मै स्कूल नही जाऊँगा और धूपमे बैठ-बैठकर बुखार बुला लूँगा। पडितजी पर आज मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है। वह मर जायॅ तो अच्छा हो।

२—व्यय आयुतिथि ७–११–१२, महत्त्व-सख्या ३.
रामशंकर : सहपाठी ४–४–२

यह बहुत बदमाश लडका है। मेरी चीजे चुरा लेता है और झूठी शिकायते करता है और पिटवाता है। आज मैंने भी उसकी स्लेट चुराकर अपने बस्तेमे रख ली है।

६—आय . आयुतिथि ८–२–८, महत्त्व-सख्या २४.
२–१–३ नबीबख्श : सहपाठी

यह मेरे दर्जेमे है और मुझसे ६ साल बडा है। वह मेरी बडी सहायता करता है। मेरे लिए अक्सर सुखाये हुए बेर स्कूलमे लाता है। दोपहरको जब मै स्कूलसे घर लौटता हूँ तो रास्तेमे एक टूटा-फूटा भूतका घर पडता है। जब और कोई लडका मेरे साथ नही होता तो बेचारा नबीबख्श मुझे इस भूतघरके आगे तक पहुँचा जाता है। आज उसने मुझे एक ऐसा मन्त्र[1] बताया है, जिसे पढकर फूंक देनेसे भूत

---

[1] मंत्र यह है—दिखा दे या इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है;
जहाँ पर रात-दिन मौला तेरी रहमत बरसती है।

टूटी-फूटी दीवारके भीतर गड जाता है। मै आज स्कूलसे अकेला घर आया हूँ और भूतके घरके सामने खडे होकर मैने उस मन्त्रको पढकर फूँक मारी है। भूत ज़रूर आज मर गया होगा। न भी मरा हो तो अब मुझको उसका बिलकुल डर नही है। दूसरे लडकोके रास्तेमे अगर कोई भूत पडते होगे तो मै अब उन लडकोको भी उनके घर तक पहुँचा आया करूँगा। नबीबख्शको मै हमेशा अपना बडा भाई जैसा मानूँगा।

७—आय आयुतिथि ८–११–८, महत्त्व-सख्या ७.

६–४–१ रम्भा : बछिया

यह बछिया मुझे बहुत प्यारी लगती है। वह है भी बेहद सुन्दर। मै बहुत दिनोसे उसके साथ खेलता आया हूँ। आज मैने उसके गलेमे बाँहे डालकर उसे बहुत चूमा। वह मुझे बहुत देर तक अपनी बडी-बडी सुन्दर आँखोसे देखती रही और मेरा मुँह अपनी जीभसे चाटती रही।

३—व्यय : आयुतिथि ८–११–८, महत्त्व-सख्या ५

भाभी ०–३–१

जब मै रम्भाको प्यार कर रहा था तो भाभीने मेरी बहुत हँसी उडाई और मुझे उससे छुडाकर घसीट ले गई। उन्हे इसका बहुत पाप पडेगा। उन्हे ज़रा भी तमीज़ नही है।

८—आय . आयुतिथि १०–२–१२, महत्त्व-सख्या २५.

२–०–४ जमना : पडोसी, ड्राइवर

चार दिनसे जमनाके मोटरघरके सामने घटो बैठकर

ललचाई आँखोसे उसका मोटर देखा करता था। आज उसने मुझे मोटर पर बिठाकर सारी बस्तीकी सैर कराई। मुझे ऐसा लगा जैसे मै हवासे भी ज्यादा तेज उड रहा हूँ और जल्द ही बहुत बडा आदमी होनेवाला हूँ। मैंने सोचा—पिताजी और तहसीलदार साहब रास्तेमे पैदल जाते हुए मिल जाएँ तो बहुत अच्छा हो, मै मोटर रुकवा दूँ और उनसे कहूँ—'आप लोग पैदल क्यो चलते है, आइए मेरी मोटर पर बैठ जाइए।'

९—आय : आयुतिथि १४–१–२८, महत्त्व-सख्या १३.
३–३–४ प्रेमा

इसके बराबर सुन्दर लडकी दुनियामे नही है। पिछले साल ठीक आजकी ही तारीखमे इसे मैंने पहले-पहल देखा था। तबसे मुझे इस लडकीसे प्रेम हो गया है। प्रेमके साथ-साथ और भी न जाने क्या हो गया है। मुझे उसकी याद कभी नही भूलती। खाना, खेलना और अच्छी-अच्छी कहानियाँ पढना सभी कुछ मुझे नापसन्द हो गया है। मैंने जिद करना बिलकुल छोड दिया है। मुझे कोई भी बात अच्छी नही लगती। कभी-कभी रात-रात भर नीद नही आती। कभी तो अकेलेमे घटो आँसू बहते रहते है। जी चाहता है, वह मिल जाय तो उसे कसकर लिपटा लूँ और फिर कभी न छोडूँ और कुछ न करूँ। दुनियामे मुझे उसके सिवा और कुछ नही चाहिए। अब मुझसे जो कोई मेरी जो भी चीज़ चाहे ले जाय। मै सिर्फ अपना कत्थई कोट किसीको नही दे सकता। वह अक्सर कत्थई रगकी साडी पहनती है और इसीलिए मैंने यह कत्थई रगका कोट बनवाया है। पिताजी हर महीने दो-तीन दिनके लिए इस शहरमे आते है और मामाजीके मकानमे ठहरते है। मै उनके साथ

आता हूँ। मामाजीके मकानके सामने ही प्रेमाका घर है। ऊपरके कमरेसे अक्सर उस मकानकी छत पर और कभी-कभी नीचे सडक पर मै उसे देखता हूँ। कल रात दो महीने बाद मैं शहरमे आया हूँ। मामीसे मालूम हुआ कि उसे तीन दिनसे बुखार आ रहा है। उसे अबकी बार छत पर नही देख पाऊँगा, यह सोचकर मुझे रातभर नीद नही आई। लेकिन आज सवेरे आठ बजे ही वह उस छत पर आकर बैठ गई। गरमी और धूप बहुत थी। लेकिन वह मेरे ऊपरवाले कमरेकी खिडकीके सामने अपनी छत पर बैठी ही रही। धूप और बुखारसे उसका मुँह लाल हो रहा था, पसीना चू रहा था, लेकिन वह बैठी ही रही। उसे शायद मालूम है कि उसे देखना मुझे अच्छा लगता है। शायद उसे भी मुझे देखना अच्छा लगता है। लेकिन उसने मुझे आज ज्यादा बार देखनेकी कोशिश नही की और मुझे ही अपने आपको जी भरकर देखने दिया। हम दोनो एक दूसरेको एक साथ तो नही देख सकते। एक साथ देखनेमे आँखसे आँख मिल जाती है और झिझक मालूम होती है। उसने आज मुझपर कितनी बडी दया की। इसमे आज उसे कितना कष्ट उठाना पडा। उसका वह बुखार, धूपसे लाल और इतना कोमल मुँह! उसकी मा जब उसे कुछ कहती हुई ले गई, तभी वह बहुत बे-मनसे गई। ८ बजे की आई वह सवा ग्यारह बजे नीचे गई। मेरे लिए उसकी कृपा और त्यागकी कोई हद नही है।

४—व्यय . आयुतिथि १४–२–०, महत्त्व-सख्या ६

राहगीर ०–२–४

भागती हुई भैसकी चपेटसे मकानके नीचे सडक पर

इस परदेशी राहगीरको गहरी चोट आ गई थी। वह बेहोश हो गया था और सिरसे बहुत खून बहा था। मैने दौडकर पडोसके अस्पतालसे कम्पाउडरोको बुलाकर इसे अस्पताल पहुँचाया और अस्पतालमे दो घटे उसके पास रहा। ये ढाई तीन घटे मै ऊपरके कमरेकी खिडकी पर बैठकर प्रेमाको देखने-मे लगा सकता था। प्रेमा ऊपर अपनी छत पर ही थी और अगर मै इस घायल आदमीके लिए दौड न आता तो बराबर छत पर ही रहती। कम्पाउडरोको लानेके लिए मै गजराजको भेज सकता था और घायलकी पट्टी बँध जानेके बाद मै उसे अकेला छोडकर या विनोदको उसके पास बिठाकर वापस आ सकता था। लेकिन दुखीकी सेवा भी तो करनी ही चाहिए। मेरे हाथ रखनेसे उसे सिरमे जितना आराम मिल रहा था, उतना और किसीसे नही मिलता। वह मुझे बहुत अच्छा आदमी जान पडता था।

१०—आय आयुतिथि १४–२–०, महत्त्व-सख्या १

९–०–१ राहगीर

दो घटे बिस्तर पर लेटनेके बाद वह घायल राहगीर एकदम उठ खडा हुआ। वह मुसकराया, जैसे उसे कोई चोट ही न आई हो। उसने मुझे खीचकर सीनेसे लगा लिया। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। थोडी देरको मै सब कुछ उस सुखमे भूल गया, लेकिन एकदम मुझे प्रेमाकी याद आ गई। मेरी बन्द की हुई आँखोसे आँसू बह चले। राह-गीरने मेरी ठोढी उठाकर और सिर पर हाथ फेरकर सिर्फ दो शब्द कहे—'आँखे खोलो।' मैने आँखे खोल दी। प्रेमा-का रज मेरे मनसे एकदम न जाने कहाँ चला गया। वह एक

बार और मुसकराया । वह अबकी मुझे बहुत तन्दुरस्त और कम उम्रका जान पडा । वह धीरे-धीरे अस्पतालके कमरे-से बाहर हो गया । मै उसके पीछे न जाने क्यो न जा सका । अस्पतालवालोने उसकी बहुत खोज की, लेकिन वह नही मिला ।

११—आय . आयुतिथि १४–२–१, महत्त्व-सख्या २.

८–४–१ प्रेमा

आज प्रेमाका शहर छोडकर अपने घर आया हूँ । चलते समय वह कुछ दूर-दूर मेरे पीछे-पीछे ताँगेके अड्डे तक आई थी और जब मै ताँगे पर बैठ गया था तो सडक किनारे-के अमरूदके बागमे एक अमरूदके पेडसे लिपटकर फूट-फूटकर रोई थी । आज मुझे पक्का विश्वास हुआ कि वह मुझसे बेहद प्रेम करती है और इस प्रेममे वह घुल रही है । आज घर पहुँचकर वह शायद रोते-रोते मर जायगी । मर गई तो वह स्वर्गमे जायगी या नरकमे ? लेकिन मा-बापकी आज्ञाके बिना जो लडकियाँ अपने मनमे किसी गैर लडकेसे प्रेम करती है, वे मरनेके बाद जरूर नरकमे जाती होगी । अगर वह नरकमे गई तो. ओह ! मै यह नही होने दूंगा । लेकिन मै कर भी क्या सकता हूँ ? तो फिर मै उसे अपने आपसे प्रेम नही करने दूंगा । मै उसके सामने अब कभी नही जाऊँगा । मेरा मन कहता है, वह आजके रोनेमे मरेगी नही । जरूर पहले भी वह ऐसे कई बार रोई होगी । मै उसके सामने नही जाऊँगा तो उसे दुख नही लगेगा । फिर उसके मा-बाप उसका कही ब्याह कर देगे । मै भी बडा होकर किसी कम सुन्दर लडकीसे ब्याह कर लूँगा । मेरा और प्रेमाका ब्याह

नही हो सकता, क्योकि वह मुझसे साल भर बडी है और उसकी बिरादरी भी दूसरी है। मेरे साथ ब्याह करना धर्म और मा-बापोके खिलाफ होगा। और कही ब्याह हो जाने पर वह पूजा-पाठ करके मेरे प्रेमके पापको दूर कर लेगी। तब नरकका डर न रहेगा। जिसमे धर्मको और मा-बापके दिलोको चोट लगे, ऐसा काम पाप नही तो और क्या होगा ? अब तक मैंने अपने दुखमे प्रेमाके दुखको सोचा ही नही। यह मेरी भूल थी। अब मैं उसे भूल जाऊँगा। लेकिन प्रेमाका दिल तो कमज़ोर होगा। फिर भी धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा।

१२—आय : आयुतिथि १४–८–२८, महत्त्व-सख्या १६.
२–४–२ भाई

भाई और चाचाजीके परिवारोके बीच एक हफ्तेसे लडाई होकर बोलचाल बन्द हो गई है। चाची-चाचासे न बोलना और उनके प्यार का उत्तर न देना मेरे लिए असम्भव है, हालाँकि एक महीनेसे, जबसे पिताजी नही रहे, मैं भाईके हिस्सेमे आया हुआ हूँ। इस लडाईके विरोधमे मैंने दो दिनसे तीन फर्लांग दूरके जगलमे निराहार वनवास लिया है। आज भाईने तपोवनमे मुझे घेरकर कहा—'चल, घर चल, तेरी खातिर मैं चाची-चाचाके पैर छुऊँगा और माफी माँगूँगा। मेरे आँसुओसे भाईकी गोद और भाईके आँसुओसे मेरा सिर भीग गया।

१३—आय : आयुतिथि १५–२–११, महत्त्व-सख्या १९.
२–३–० भगवती : मित्र और सहपाठी

भगवतीके बराबर मेरा कोई दोस्त नही है। मेरी

उसकी जान-पहचान अभी आठ महीनेकी ही है। फिर भी मन बहुत मिल गया है। उसकी सलाह मुझे बहुत अच्छी लगती है। हम दोनोको दुनियामे बडे काम करने है। आज हम दोनोने बैठकर अपने जीवनोका उद्देश्य निश्चित किया है। वह जगदीशचन्द्र बोससे भी बडा साइटिस्ट बनेगा और मै दयानन्द सरस्वतीसे भी बडा उपदेशक।

१४—आय आयुतिथि १५–४–२८, महत्त्व-सख्या ८

६–३–२ जेम्स एलेन

जेम्स एलेनकी एक पुस्तक आज समाप्त की है और दूसरी शुरू की है। मेरे जीवनके विकासमे मेरे लिए जो पथ-प्रदर्शन अपनी पुस्तक-द्वारा जेम्स एलेनने किया है, उसके लिए आज पहली बार मुझे एक मरे हुए व्यक्तिका कृतज्ञ होना पडा है। मेरी श्रद्धाके दो फूल क्या उस स्वर्गवासी परोपकारी महापुरुष तक पहुँच सकेगे।

१५—आय आयुतिथि १६–८–२५ महत्त्व-सख्या ६

७–२–० गोखार : एक पहाड

गोखारसे मुझे प्रेम हो गया है। इसकी चोटी पर पहुँचते ही मै ऊँचे भावो और विचारोसे भर जाता हूँ, जैसे इस चोटीके पास ही कही इनका स्रोत है। आज मैने इस गिरि-शिखरकी उस चट्टानको बाँहोमे भरकर अनेक बार चूमा है और मुझे ऐसा लगा है कि गोखारगिरिकी भी एक आत्मा है और यह विशाल पर्वत उस आत्माका एक सुन्दर सुकुमार शरीर है, जो मेरी बाँहोमे पूरा समा सकता है और मेरी आत्मा गोखारकी आत्मासे बहुत बडी है।

५—व्यय आयुतिथि १८–४–२२, महत्त्व-सख्या ४
कलावती २–४–१

यह पडोसकी एक खराब औरत है। बहुत लोग इसके यहाँ आते-जाते है। मुझे अक्सर यह हँसकर देखती है। आज उसने इशारेसे मुझे बुलाया भी है। तबसे मेरा मन बहुत खराब हो रहा है। ऐसे बुरे विचारको रोकना बहुत कठिन है।

१६—आय . आयुतिथि १६–८–८, महत्त्व-सख्या २०.
२–२–४ उमा

डेढ घटेकी परिचिता इस सुन्दरी नवयुवा बालिकाके मीठे चुम्बनोका मुझे जीवन भर ऋण मानना चाहिए। उनमे मिली हुई मिठास और तृप्ति मेरी इस नई प्यासके लिए कुछ समयको काफी होगी। क्या मै उसके लिए कभी कुछ कर सकूँगा ?

१७—आय . आयुतिथि २०–८–५, महत्त्व-सख्या २३.
२–२–० प्रोफेसर झा

पिछली रात इस नये शहरमे अपरिचित प्रोफेसर झा के घर शरण लेनी पडी है। उन्होने मुझे बातोमे लगभग सारी रात जगाया है। आज सुबह चाय पर बैठे हुए उन्होने मेरी पीठ पर हाथ रखकर कहा—'तुम्हारे पास साधन है, समाजके लिए तुम बहुत कुछ कर सकते हो, तुम्हे करना होगा। मैने तुम्हे खोज निकाला है।' समाजके लिए अपनी उपयोगिता और कर्त्तव्यका ज्ञान और उसके लिए सचित अपने सामर्थ्यका परिचय और सक्रियताके लिए एक नई गतिकी

प्रेरणा मुझे आज पहले-पहल प्रोफेसर झाके शब्दोसे मिली है।

१८—आय . आयुतिथि २१–४–१२, महत्त्व-सख्या १७.

२–३–४ दिवाकर : मित्र, डाक्टर

दिवाकरके हाथो आज मैंने एक कठिन रोगसे पुनर्जीवन पाया है। आज मैंने उन्हे मेरी आत्मा और मनसे ध्यान हटाकर मेरे शरीर पर ही अपना ध्यान और शक्ति एकाग्र करते देखा है। शरीर-चिकित्सककी सफलता और देवत्व-का रहस्य आज मैंने डाक्टर दिवाकरकी स्थिर आँखोमे देखा है। इसके पहले उदासीनताके अवसरो पर मित्र दिवाकरसे मैंने मित्रताके जो पाठ सीखे है, उनके लिए मेरी अगली मैत्री भावनाएँ सदैव ऋणी रहेगी।

१९—आय · आयुतिथि २२–२–१०, महत्त्व-सख्या ६.

५–४–१ विश्वम्भरनाथ

यह एक सहृदय साहित्यप्रेमी धनिक है। पिछले सप्ताहसे एक कठिन विपत्तिमे फँस गया हूँ। कई जगह गया, किसीने झूठ-मूठको भी सहानुभूति नही दिखाई। आज विश्वम्भरजीने जिस सहानुभूतिसे मेरी कथा सुनी है और सहायताका जो वचन दिया है, उस 'वचनमात्र' के लिए मै उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। मेरी सहायता मेरे अपने बाहु-बलकी चीज़ होनी चाहिए, उनकी कोठीसे निकलकर मुझे ऐसा लगा है। अगर विश्वम्भरजी अपने वचनका पालन न कर सके—जैसा कि उनके दो-एक परिचितोने मुझे अभी बताया है—तो क्या मै उनकी आजकी कृपासे उऋण हो जाऊँगा ?—कभी नही !

२०—आय आयुतिथि २२–५–१२, महत्त्व-सख्या १८.

२–३–३ माधवराव

मेरा इनका सम्पर्क अधिक नही है। मेरे रिश्तेदारके मित्र होनेके नाते यह मेरे आदरणीय है और मुझपर कुछ स्नेह रखते है। मेरे एक मित्रकी दूकानमे कल रात चोरी हो गई है। उनका हाथ पहलेसे ही तग है। मेरे इन मित्रकी चर्चा और उस पर मेरी चिन्ताकी भनक माधवरावजीके कानमे पडने पर उन्होने पाँचसौका एक चेक मेरे हाथमे देते हुए कहा—'यह उन्हे दे दीजिए, दूकान सम्हलनेपर जब हो सकेगा अदा कर देगे। आपके मित्र जैसे मेरे मित्र।'

२१—आय : आयुतिथि २२–१०–५, महत्त्व-सख्या १४.

३–३–१ जगदीश

जगदीश एक बडे मिल-मालिकका लडका है। आज उसने मुझे घेरकर कहा—"मै तुम्हे अपने नये कारखानेमे साझीदार बनाऊँगा—तुम्हे यह मानना ही पडेगा, तुम पर मेरा विश्वास है।" जगदीशने आज मेरा एक नया रूप और नया महत्त्व मुझे दिखाया है। मुझे अपनी ऊँची ईमानदारी और लौकिक व्यवहारकुशलताका ज्ञान आज जगदीशने कराया है। जो महत्ता वह दूसरोमे खोजता है, वह उसमें मौजूद है। आज उसने, मानो ससार भरकी ओरसे जो सम्मान मुझे दिया है, उसे मुझे जीवन भर निभाना होगा। दिवाकर से मैने जो पाया है, जगदीशके हाथो उसे बढाना होगा।

२२—आय : आयुतिथि २३–०–१, महत्त्व-सख्या ३.

८–२–१ मीनू भाई

कल सडकपर मेरे एक साथीने इनसे मेरा परिचय कराया था और उस दो मिनटके परिचयके बाद अपनी कार स्टार्ट करते हुए इन्होने मुझसे कहा था—"हमारे घरमे आना कभी, चाय पियोगे तो चाय भी पिलवायेगे। कल शाम आ सकोगे?" मैने स्वीकृति दे दी थी और आज उनकी कोठी पर पहुँचने पर उन्होने 'आओ, भाई, तुम आ गये' कहकर मेरा स्वागत किया और अपनी एक आलमारीके दोनो पल्ले खोलते हुए कहा—"यह बहुत दिनसे तुम्हारा इन्तजार कर रही है। जो किताब पसन्द आये, ले सकते हो।" उनके 'भाई' कहनेमे मुझे एक अपूर्व स्थायित्व जान पडा और लगा कि सचमुच वह और उनकी अलमारी न जाने कबसे मेरा इन्तज़ार कर रही है। एक पुस्तक उनसे आज ले आया हूँ और अब तक उसे आधी पढ चुका हूँ। इस पुस्तकने मुझे अपने जीवनको समझने और जीनेके लिए एक नया और अमिट प्रकाश दिया है।

६—व्यय . आयुतिथि २३-३-२६, महत्त्व-सख्या २

गोपीनाथ ५-४-२

ज़रा-सी बात पर चिढकर इसने अब बात-बातमे मेरा अपमान और मेरे कामोमे रुकावट डालना शुरू कर दिया है। मुझे हानि पहुँचानेके लिए यह स्वय भी बडेसे बडा कष्ट सहनेके लिए तैयार है। न जाने इसने मुझसे कहाँका वैर निकाला है। पचास रुपये महीनेकी तरक्की पर इसने बाहर जाना इसीलिए नामजूर कर दिया है कि बाहर पहुँचकर यह मुझे नुकसान नही पहुँचा सकेगा। आज सुबह मेरे प्रशसक मित्र उमाचरनके पिताने मुझसे जो अनुचित प्रश्न

किये है और उमाचरनने मेरे पास आने-जानेकी जो मजबूरी बताई है वह गोपीनाथ की ही जहरीली करतूतका नतीजा हो सकता है। उमाचरनका विछोह गोपीनाथके पहुँचाये नुकसानोमे मेरा सबसे बडा नुकसान है। आज सारे दिन मेरा दिल गोपीनाथके लिए क्रोधमे जलता रहा है।

२३—आय आयुतिथि २३–३–२७, महत्त्व-सख्या ११.
४–०–० गोपीनाथ

गोपी बाबूके सम्पर्कने मुझे अपने क्रोधी स्वभावको पहचानने दिया है, मेरे क्रोधको उभारकर काबूमे लानेका मुझे अवसर दिया है। उन पर जो-जो दोष मैंने लगाये है, उनमेसे कुछ गलत भी हो सकते है। हो सकता है, उमाचरन या उसके पिता तक गोपीबाबूकी पहुँच ही न हो, अपना तबादला उन्होने किसी और वजहसे पसन्द न किया हो। अपनी मूर्खता अब मेरी समझमे आ रही है। अपने शब्दो या कामोसे नही तो अपने कठोर विचारोसे जरूर मैंने उनकी क्रोधाग्निको भडकाया है। विचारोकी क्रिया और प्रभावके सम्बन्धमे तो मै काफी पढ और समझ चुका हूँ। गोपी बाबूने सचमुच मुझे इस व्यायाममे डालकर मेरा बडा उपकार किया है। मै अपने स्नेह और सहानुभूतिके भावोसे उन्हे शान्त करनेका प्रयत्न करूँगा। गोपीबाबूने मेरे लिए नादान दुनियाका प्रतिनिधित्व किया हे। मुझे गोपी बाबूके वहाने ऐसी दुनियासे बरतना सीखना चाहिए।

२४—आय . आयुतिथि २३–७–२३, महत्त्व-सख्या ५.
७–४–१ राय अमरनाथ

राय अमरनाथ कुछ दिनोसे मेरे आदरणीय और मित्र है। आज उन्होने बातोमे कहा—"मै तुम्हारा हर कसूर माफ कर सकता हूँ। तुम्हारे मनमे उठनेवाली हरएक भली-बुरी बात सुन सकता हूँ, तुम्हारे हर सवालका जवाब देनेको तैयार रह सकता हूँ। एक बार मैने तुम्हे इसके 'योग' समझ लिया है और अब तुम्हारी कोई भी कमी, कमज़ोरी या बुराई मुझे तुम्हारे लिए उस लिहाजसे डिगा नही सकती, जिसे बनाये रखना मै इसानियतका अटल 'कर्त्तब्ब' समझता हूँ। तुम्हारी कोई भी खराबी तुम्हारी जिन्दगीका 'इस्थाई' अग नही हो सकती।" रायसाहबमे मैने आज एक ऐसा सुलझा हुआ और आदरणीय व्यक्ति पाया है, जिससे सहारा लेकर मै समाजसे मित्रताके प्रयोग करके कुछ आवश्यक पाठ तैयार कर सकता हूँ।

२५—आय · आयुतिथि २३–११–२६, महत्त्व-सख्या ४

८–१–० **घासवाला लडका**

बागके बाहरी लान पर बैठा मै विचारमग्न लिख रहा था। एक घास खोदनेवाले आठ सालके लडकेने अपना घास-का गट्ठर मेरे सामने पटककर कहा—'बाबू, जरा इसे देखे रहना, मै अभी आता हूँ' और चला गया। दस मिनट बाद वह लौटा और अपना गट्ठर सम्हालते हुए मुसकराकर बोला—"लो बाबू, अब खूब सोचना और लिखना, मै यह चला।" और वह उस खुले मैदानमे **दो-चार कदम चलकर ही एकदम विलीन हो गया**। मेरे सोचने और लिखनेके लिए उसने मुझे एक नई विचारधारा दी है, जिसके बिना मेरा सोचना बिलकुल अधूरा था। उसके गट्ठरकी तरह अब मुझे अपने

सभी छोटे-बडे, परिवार, पडोस और सडकके कर्त्तव्योकी भी रखवाली करनी है और अपनी ऊँची विचारधाराओ और कर्त्तव्योमे उन्हे बाधक नही, बल्कि उनका ही एक आवश्यक विस्तार समझना है।

	२१–२–४
	शेष धन ९६–०–१
११७–३–०	११७–३–०

[नोट—इसी कैशबुकका आगेका एक पन्ना बतलाता है कि प्रेमा, राहगीर, गोखार, मीनू भाई, गोपीनाथ और घासवालाके साथ उसका लेन-देन पहलेका भी है और रम्भा, राहगीर, उमा, जगदीश, मीनू भाई और राय अमरनाथके साथ उसका लेन-देन आगे भी चलेगा। इस नोट-का ध्यान रखकर उन विवरणोको पढ़नेसे वे कुछ और भी प्रकाश डालते है—रावी]

विश्व-कथा

कथा इतिहास-युगके पहले किसी पुराण-युगकी है।

सागरके एक छोटेसे द्वीपके किनारे उस दिन एक जहाज आकर रुका और दो नवयुवक कैदियोको उतार कर वापस लौट गया।

ये दोनो नवयुवक तत्कालीन चक्रवर्ती सम्राट्के राजकुमार थे एक लडाईमे एक अधीनस्थ विद्रोही राजा-द्वारा बन्दी बनाकर ये राजकुमार इस निर्जन वन्य द्वीपमे पशुओका आहार बननेके लिए छोड दिये गये थे। बन्दी राजकुमारोकी अपने हाथो हत्या करना शत्रु दलके विश्वासके अनुसार अधार्मिक था, और उससे कठिन दैवी विपत्तियोके उनपर आ पडनेकी आशका थी।

कई दिनके भूखे-प्यासे, दुर्बल-शरीर ये राजकुमार भटकते-भटकते एक झोपडेके समीप जा पहुँचे। द्वीपके उस भागमे कन्दमूल फल-जैसी भी कोई खाने योग्य वस्तु उन्हे नही दिखाई पडी थी। इस झोपडेमे किसी मनुष्यके होनेकी कल्पनासे उनके हृदयोमे आशाका सचार हो गया।

आगे बढकर उन्होने झोपडेका द्वार खटखटाया।

एक अत्यन्त रूपवती तरुणीने भीतरसे आकर द्वार खोल दिया। उन सुन्दर राजकुमारोको देखते ही वह उनपर मुग्ध हो गई। बडे स्नेह-सत्कारके साथ उन्हे भीतर ले जाकर उसने बिठाया। झोपडेमे कोई दूसरा व्यक्ति नही था। अतिथियोका परिचय पाकर उसने अपना भी सक्षिप्त वृत्तान्त बताया। वह रूत देशकी एक कन्या थी। उसके पिता गुप्त विद्याओके एक बड़े साधक थे। उन्होने किसी कारणवश अपनी दो स्त्रियोको इस निर्जन द्वीपमे बसा रखा था। यह तरुणी इस झोपडीमे रहती थी और

उसकी दूसरी बहन द्वीपके मध्य भागमे एक सुन्दर विशाल महलमे रहती थी।

'आप हमे नही मिलती तो हमारा जीवन ही समाप्त हो जाता। हम आपके अत्यन्त कृतज्ञ है। लेकिन हम पाँच दिनसे भूखे है। क्या आप पहले हमे कुछ खानेको दे सकेगी ?' बडे राजकुमारने अधीर होकर कहा।

'तरुणीका मुख उदास हो गया। खानेको तो इस झोपडीमे कुछ नही है, यहाँ आसपास भी खाने योग्य कोई वस्तु नही है। मै स्वय कुछ खाती-पीती नही हूँ। [1]मेरे पिताने मुझे एक फूल दे रखा है। उसे सूँघनेसे ही मेरे शरीर-निर्वाहका आवश्यक काम चल जाता है। मुझे सन्देह है, वह फूल आपकी भूख नही मिटा सकेगा। आप चाहे तो मेरी बडी बहनके महलमे जा सकते है। उसके पास खाद्य पदार्थकी कमी नही है। वह कुरूपा और कर्कश स्वभावकी होते हुए भी आपको खानेको अवश्य देगी। लेकिन वह फिर आपको मेरे पास नही आने देगी। सुन्दरीने विवश भावसे कहा।

"न आने देगी तो न सही, भोजन हमारी पहली आवश्यकता है।" बडे राजकुमारने छोटे भाईका हाथ पकडकर उठाते हुए कहा।

तरुणीने फूल लाकर अतिथियोके सामने प्रस्तुत किया। दोनोने उसे सूँघा। इससे उन्हे कुछ थोडी-सी ताजगी-सी अवश्य मिली, पर

---

[1]यह इस युगके लिए भी कोई असभव कल्पना नही है। योरपमे बवेरिया (कानर्स रिड्थ) की साध्वी थैरसा न्यूमैन और भारतमें बगालके बियूर ग्रामकी तपस्विनी गिरि बाला बिना कुछ खाये पिये वर्षोसे—सभवतः इन पक्तियोके लिखते समय भी—जीवित है। ये दोनो अपने शरीरके लिए पोषक तत्त्व सीधे सूर्यके जीवन तत्त्वसे लेती है। देखिये अमरीकाके बगाली योगी परमहस योगानन्द लिखित आत्म-कथा।—लेखक।

उनकी क्षुधा और निर्बलता दूर नही हुई । फूलसे शरीरके लिए आवश्यक पोषण ले सकनेका अभ्यास उन्हे नही था ।

"तब फिर" उसी बडे राजकुमारने चलनेके लिए खडे होकर कहा, "भूखसे मर जानेके पहले हमे जगलमे घूमकर खाने योग्य किसी वस्तुकी खोज करनी ही चाहिए । निरुद्यम बैठे रहकर मर जाना तो पाप है ।"

लेकिन छोटा राजकुमार उस सुन्दरीके प्रेमपाशमे भरपूर जकड गया था । अपने बडे भाईकी प्रकृतिसे विपरीत वह प्रेमी और सौन्दर्यपूजक स्वभावका था । उसने उस सुन्दरी कुटीरस्वामिनीको छोडकर भाईके साथ जाना स्वीकार नही किया । बडा राजकुमार अकेला ही चला गया ।

बडा राजकुमार बडी बहनके महलमे जा पहुँचा । कुमारकी प्रार्थना पर, कुछ सोचकर, उसने उसे खिला-पिला कर अपने महलमे ही दूसरे नौकरोके बीच रख लिया । उस महलकी स्वामिनीके असुन्दर रूप और कठोर स्वभावसे राजकुमारको घृणा अवश्य हुई, पर जीवनका प्रश्न यही हल होता था । वह वही रुक गया । राजकुमार खेती विज्ञानको अच्छी तरह जानता था । महलकी आसपासकी विस्तृत भूमिमे अन्न और फलोकी खेतीका काम उसके सुपुर्द कर दिया गया । कुछ ही वर्षोमे भाँति-भाँतिके अन्न और मीठे फलोकी उपजसे वहाँकी भूमि लहलहा उठी ।

छोटा राजकुमार उस तरुणीके प्रेममे इतना आसक्त हो गया था कि उसे किसी अन्य वस्तुकी इच्छा ही न रह गई थी । वह तरुणी भी उसपर हृदयसे निछावर हो चुकी थी । लेकिन यह प्रेम प्रसग अधिक दिन नही चल सका । उस फलकी सुगन्धने राजकुमारका अधिक दिन तक साथ नही दिया और वह धीरे-धीरे क्षीण होकर कुछ ही दिनोमे परलोकको प्रस्थान कर गया ।

बडे राजकुमारको यद्यपि खाने-पीनेकी कमी नही थी, फिर भी उसने इतना अधिक परिश्रम किया कि उसका शरीर भी शीघ्र ही टूट गया और छोटे भाईकी मृत्यु के कुछ ही दिन बाद वह भी मर गया ।

उधर सम्राट् अपने पुत्रोके लिए अत्यन्त व्यग्र थे। शत्रुको पराजित कर जब उसके अधिकारमे भी उन दोनोका पता नही चला तब देश-विदेशमे उनकी खोज होने लगी। जिस समय इस द्वीपमे उनके आदमी पहुँचे उस समय तक दोनो कुमार मर चुके थे। सारा समाचार सम्राट्के पास पहुँचा। वह अत्यन्त पीडित हुए।

गुप्त विद्याकी सहायतासे उन्होने दोनो राजकुमारोका समाचार परलोकसे भी प्राप्त कर लिया। उन दोनोको उन्होने फिर शीघ्र ही अपने पुत्रोके रूपमे जन्म लेनेके लिए बाध्य किया। इन दोनोके अतिरिक्त पहले भी उनके और कोई पुत्र नही था। वही दोनो राजकुमार महलोमे फिर पैदा हो गये। दोनोके रूप भी पहले जन्मके रूपसे बहुत कुछ मिलते-जुलते थे। बडा राजकुमार अबकी बार भी बडा था।

दोनो कुमार सयाने हुए। सम्राट्ने अपनी मृत्युसे पूर्व यथा समय राज्यके दो भाग करके उसे दोनो राजकुमारोको सौप दिया। सम्राट्की मृत्यु होते ही दोनोने अपने-अपने राज्यकी बागडोर सँभाल ली।

परलोक-निवासके समय छोटे राजकुमारने अपनी प्रेमकी साधना और प्रवृत्ति और बडेने कृषिका कौशल एव प्रवृत्ति इतनी अधिक जगा ली थी कि उनके पास दूसरी रुचि और समाईके लिए अवकाश ही नही रह गया था। देवताओको यह वरदान देना पडा था कि छोटे कुमारके प्रभावमे केवल प्रेम ही फूले-फलेगा, और बडेकी छायामे केवल धन-धान्य की ही बहुलता होगी। इन वरदानोमे उनकी पूर्व जन्मकी सहचरी और स्वामिनीका भी तान्त्रिक प्रभाव था।

बडे राजाका देश तेजीके साथ भाँति-भाँतिके धान्यो और खाद्य वनस्पतियोसे लहलहाने लगा। ऊसर भूमि भी उपजाऊ हो उठी। पहले, देशमे अन्नकी कुछ कमी भी पड जाया करती थी, किन्तु अब वह इतनी अधिकतासे उत्पन्न होने लगा कि उसकी खपत कठिन हो गई। अतिरिक्त अन्न और फलोकी भाँति-भाँतिकी सुराएँ बनने लगी। सुरा-निर्माण

विभागसे अधिक से अधिक अन्न खपाया जा सकता था। खूब अन्न उत्पन्न किया जाने लगा और शराबोका प्रचार बढ चला। इस समृद्धिके होते हुए भी उस राज्यके लोग एक दूसरेके प्रति उदासीन होने लगे। पारस्परिक प्रेमकी याचना उनके हृदयोसे घटने लगी। स्त्री-पुरुषोका पारस्परिक आकर्षण विलीन होने लगा। सन्तानोत्पत्ति भी एक भार कार्य समझा जाने लगा। राज्यकी जनसख्या धीरे-धीरे घट चली। कृषिकी कला और विज्ञान लोगोकी सर्वप्रथम रुचिका विषय बन गया।

छोटे राजाकी प्रजाका ह्रास दूसरे प्रकारसे, किन्तु और भी तेजीके साथ होने लगा। राज्यमे अन्नकी पैदावार घटने लगी। प्रेमकी प्रवृत्तिने उग्र रूप धारण कर लिया। केवल प्रेम और सेवाकी भावनासे प्रेरित होकर वे लोग खेती बारीका भी काम थोडा-बहुत करते थे, किन्तु कृषिकी देन उनके हाथोसे निकलती जाती थी। भोजनके अभावमे लोग तेजीसे मरने लगे। कुछ ही शताब्दियोमे भूतलका यह आधा खड निर्जन हो गया। राजामे चूँकि पुष्प-गन्धके द्वारा जीवित रहनेकी शक्ति इस जन्ममे आ गई थी—और उसकी पूर्व जन्मकी प्रणयी, वही चिरयौवना सुन्दरी पत्नी रूपमे उसके साथ रह रही थी—इसलिए वह अपने छोटेसे गन्ध-जीवी परिवारके साथ जीवित रहा।

बडे राजाकी प्रजा भी यथोचित प्रजननके अभावमे दूसरी प्रजाके विनाशकालसे तीन गुने समयमे समाप्त हो गई। इस बडे राजाने अत्यन्त प्रबल सुराओके योगसे एक ऐसा रसायन तैयार कर लिया था कि उसके प्रयोगसे उसका शरीर अत्यधिक कालके लिए अमर और अजर हो गया था।

भूलोकके सभी निवासियोकी स्वर्गलोकमे भीड हो गई। वहाँ सूक्ष्म शरीरोमे उन्हे खाने-पीनेकी कोई आवश्यकता नही थी, इसलिए प्रेम प्रवृत्ति वाले मनुष्योका जीवन अत्यन्त सुख और गहरे प्रेम-सम्पर्कोमे बीतने लगा। कृषि प्रवृत्तिवालोको चूँकि एक दूसरेसे कोई लगाव नही था इसलिए वे

सब अलग-अलग रहकर कृषि-विज्ञानके अध्ययन और खोजोमे तन्मय रहने लगे । स्वभावतया, दोनो प्रकारके व्यक्तियोको स्वर्गलोकके दो अलग-अलग प्रदेशोमे बसाया गया । कृषि-प्रवृत्ति वाले एक ही स्वर्ग खडमे रहते हुए भी एक दूसरेसे पृथक् थे ।

भूलोकके जीवन-विकासके ईश्वरीय विधानको किस प्रकार आगे बढाया जाय, यह देवताओकी चिन्ताका विषय बन गया । प्रेम-प्रवृत्ति वाले व्यक्तियोको ससारमे पुन जन्म देना व्यर्थ था, क्योकि भूलोकके जीवनका मुख्य आधार अन्न है । यह जाति वहाँ पनप नही सकती थी । कृषि प्रवृत्तिवालोके भी ससारमे अधिक टिकनेकी आशा नही थी । आवश्यक प्रजननकी प्रेरणा यदि थोडी बहुत उनमे जगाई भी जा सकती थी तो बच्चोकी सम्हाल और पालन-पोषणका कष्ट उठानेके लिए उन्हे तैयार करना असम्भव था । कुछ ही शताब्दियोमे उनके पुन स्वर्गमे ही डेरा आ जमानेकी पूरी सम्भावना थी । फिर भी भूलोकको जीवन ये ही लोग दे सकते थे ।

इस जातिके बीच पारस्परिक प्रेम उत्पन्न करनेके जब देवताओके सभी प्रयत्न विफल हो गये तब उन्हे एक नई युक्ति सूझी । प्रेम प्रवृत्तिवाली जातिके इनसे मिलने-जुलनेका मार्ग उन्होने खोल दिया । उस प्रेम जातिके व्यक्ति इस कृषि जातिके व्यक्तियोके सम्पर्कमे आते ही इन पर भी मुग्ध होने लगे, यद्यपि इस दूसरी जातिके लोगोने उदासीनता ही दिखाई । आपसमे तो इस जातिका प्रेम करना असम्भव था, क्योकि दो व्यक्तियोके बीच किसीकी ओरसे भी कोई आकर्षण नही था, किन्तु दूसरी प्रेम जातिके सम्पर्कसे धीरे-धीरे कृषि जाति वालोमे भी प्रेमकी प्रवृत्ति कुछ-कुछ जागने लगी और वे भी अपने इन प्रेमियोकी ओर आकृष्ट होना सीखने लगे—आखिर प्रेमका अकुर रक्खा तो सारी मानव जातिमे ही गया था ।

स्वर्ग लोकमे ही कुछ काल तक इस प्रेम प्रयोगको चलानेके बाद देवताओने दोनो जातियोमेसे कुछ व्यक्तियोको भूलोकमे भेजा और उन्हे

पहले बडे राजकुमारके उपजाऊ भूखडमे ही जन्म दिया। वहाँ अन्नकी कमी नही थी किन्तु लोगोके बीच प्रेम और उदासीनताका सघर्ष बहुत दिनो तक चलता रहा। एक ओर प्रेममे घुलनेवालो और दूसरी ओर प्रेमकी उपेक्षा करने वालोकी कहानियोमे ही उस युगका इतिहास लिखा जा सकता है। ज्यो ज्यो दिन बीतते गये और नई पुरानी आत्माओके बार-बार पृथ्वी पर जन्म होते गये त्यो-त्यो यह सघर्ष घटता गया। कृषि जातिके लोगोमे प्रेम करनेकी और प्रेम-जातिके लोगोमे कृषि करनेकी क्षमता धीरे-धीरे आने लगी। छोटे राजकुमारने अपने राज्यका अधिकाश भाग बडे भाईके राज्यमे सम्मिलित कर दिया और जन-सख्या सारे भूतल पर फैलने लगी। प्राय सभी भूखण्ड उपजाऊ होने लगे। प्रेम-जातिके व्यक्तियोके प्रभावसे ससारमे कला, ज्ञान और आध्यात्मिक शक्तियोका भी विकास होने लगा।

गुप्त पुराणोके कथनके अनुसार भूलोकके वर्तमान निवासी अनेक राष्ट्रो और राज्योमे बँटे हुए अभी बडे कृषिप्रवृत्तिवाले राजकुमारके शासनमे है, और छोटे राजकुमारका निवास अपने छोटेसे परिवारके साथ भूतलके एक अत्यल्प-ज्ञात, अनुपजाऊ भूखडमे है। सम्पूर्ण मानव जातिका लगभग तीसवाँ भाग इस समय भूतल पर सशरीर विद्यमान है। प्रेम-प्रवृत्ति और कृषि-प्रवृत्तिके लोग अभी तक निश्चित रूपमे अलग-अलग जातियोमे आन्तरिक रूपमे बँटे हुए है और उनकी आध्यात्मिक अथवा भौतिक रुचियोको सूक्ष्म दृष्टिसे देखकर पहचाना जा सकता है। पहले प्रकारके व्यक्ति अध्यात्मवादी और दूसरे प्रकारके भौतिकतावादी है। यह ठीक है कि ससारका जीवन कृषि प्रवृत्तिवालोके बल पर ही चल रहा है, किन्तु उनके प्रेरक आन्तरिक रूपमे, प्रेम-प्रवृत्ति वाले व्यक्ति ही है। प्रेमके बिना ससारमे जीवनका स्थायित्व असम्भव है। प्रेम-व्यक्तियोका प्रभाव धीरे-धीरे कृषि-व्यक्तियोके हृदयोमे घर करता जा रहा है। जब यह प्रभाव पूर्ण-रूपसे व्याप्त हो जायगा तब, किसी दूरातिदूर युगमे

ससारमे न अन्नकी उपज होगी और न उसकी आवश्यकता ही रहेगी। सारे भूतल पर छोटे राजकुमारका शासन हो जायगा और मानवताका निवास-ग्रह इतना सूक्ष्म हो जायगा कि स्वर्ग उसी पर उतर आयेगा।

यह सब होगा अथवा हो सकता है या नही, मै कुछ नही कह सकता, किन्तु कुछ दूरदर्शी वैज्ञानिको और दार्शनिकोका अभी भी यही मत है कि अन्नकी अपेक्षा प्रेम मनुष्यके लिए अधिक आवश्यक है और अन्नके अभावमे किसी सम्भावित साधन-द्वारा मानव जीवन स्थिर भी रह सकता है, किन्तु प्रेमके अभावमे उसका विनाश निश्चित है।

माया-यन्त्र

पावक और अगिरा नामके दो देवता एक बार कुछ अधिक सोमरस पी गये। सोमरसकी मात्रा कुछ इतनी अधिक हो गई कि उनकी सुध-बुध उनके बसमे न रही और उसी नशेकी मस्तीमे वे भूलोककी सैरको निकल पडे।

पृथ्वीके जिस नगरमे वे पहुँचे, वहाँके लोगोने उनके सुन्दर और तेजस्वी रूपोसे आकृष्ट होकर उन्हे चारो ओरसे घेर लिया।

"हम स्वर्गलोकके निवासी देवता है और सैरके लिए यहाँ तक चले आये है।" उन्होने लोगोके प्रश्नके उत्तरमे बताया।

पृथ्वीके निवासी उन दिनो सुखी और अपनी परिस्थितियोमे सन्तुष्ट थे और उन्हे पृथ्वीके बाहर किसी अन्य वस्तु या परिस्थितिके अस्तित्वका अनुमान न था, लेकिन इन देवताओको देखकर उनका जिज्ञासापूर्ण कुतूहल जाग उठा था और वे इस नये स्वर्गलोक और वहाँके निवासियोके बारेमे सभी बाते जान लेना चाहते थे। वैसे, देवताओकी ओरसे प्रबन्ध और प्रतिबध था कि भूलोकके मनुष्योको स्वर्गलोकके सम्बन्धमे कोई कुतूहल-जनक और व्यावहारिक जानकारी अभी न दी जाय, लेकिन चूकि ये दोनो देवता कुछ अधिक पिये हुए थे, इसलिए इन्हे इस प्रतिबधका ध्यान न रहा और इन्होने मनुष्योके प्रश्नोपर, स्वर्ग लोकका, वहाँके निवासियो और वहाँकी सुख-सुविधाओका यहाँ तक कि पृथ्वीसे स्वर्गलोक तकके मार्गका भी सारा भेद उनके सामने खोल दिया। इतना ही नही, लोगोके अनुरोधपर इन देवताओने अपने दैवी बलसे स्वर्गकी राहमे पडनेवाले सातो फाटकोकी चाबियाँ भी उसी समय गढ कर लोगोके हाथमे थमा दी।

यह सब करकरा कर ये दोनो देवता नशेमे झूमते-झामते स्वर्गलोककी

ओर लौट पडे। पावक और अगिरासे पहले ही भूलोकके कुछ तेज-दम मनुष्य उन चाबियोके सहारे स्वर्गलोकमे जा पहुँचे।

उन्हे देखते ही सारे स्वर्गलोकमे सनसनी फैल गई। भूलोकके ये मनुष्य यहाँ कैसे! इन्हे तो अभी नीचे, भूलोकमे ही रह कर अपने जीवन और शक्तियोका विकास करना चाहिए था, इनके यहाँ आनेसे तो स्वर्गलोकमे बडी गडबडी मच जायगी। इन्हे स्वर्गलोकके सुदृढ फाटकोकी चाबियाँ कहाँसे मिली? आशकाओसे भरे हुए ऐसे ही प्रश्न देवताओके मस्तिष्कोमे घुमड पडे।

देवराज इन्द्रको इसकी सूचना मिली, वह भी चिंतित हो उठे।

मनुष्योके सामने किसने यह असामयिक रहस्योद्घाटन किया है, इसका पता लगाते देर न लगी। राजकीय देवदूतोने पावक और अगिराकी कलाइयोमे स्वर्गीय सोनेके सुन्दर कडे पहनाकर देवराजके दरबारमे उपस्थित किया।

इन दोनो देवताओपर क्या बीती, यह कहकर मै इनका कोप-भाजन बननेका साहस नही कर सकता, लेकिन इस कहानीके पाठक मनुष्य (और देवता भी, जो कि पहलेसे ही यथेष्ट समझदार है) अब इतने समझदार हो गये है कि उस सबका बहुत कुछ ठीक-ठीक अनुमान कर सकते है।

न्याय क्रियासे निवृत्त होनेके पश्चात् देवराज इन्द्रने इस नई विपत्ति की रोकथामकी ओर ध्यान दिया।

"मनुष्योको तो अभी अपने लौकिक बल-वैभवकी कामनाओ और स्वार्थ-सिद्धियो-द्वारा अपने भौतिक व्यक्तित्वको सुदृढ बनाना चाहिए और उन्हीमे उनका सारा ध्यान बँटा रहना चाहिए। यदि अभीसे वे लोग स्वर्गकी ओर आकृष्ट हो जायगे तो उनकी भी शिक्षा पूरी न हो पायगी और उनके असामयिक स्वर्गारोहणसे हमारे कामोमे भी बडा बिघ्न पडेगा। स्वर्ग-पथकी जो चाबियाँ भूलोकवासियोको पावक और अगिराने दे दी है उन्हे हम, अपने दान-सम्बन्धी नियमोके अनुसार, अब वापस

नही ले सकते। ऐसी दशामे हमे मनुष्योका स्वर्ग-प्रवेश रोकनेका कोई उपाय जल्द ही सोच निकालना चाहिए।" इन्द्रने अपने दैव-दरबारको सम्बोधित करके कहा।

देवताओने अपनी-अपनी राये देनी आरम्भ की।

"स्वर्ग-मार्गके फाटक बदलवा देने चाहिए। इससे मनुष्योके साथ आई हुई चाबियाँ बेकार हो जायँगी।" एकने कहा।

"जिस नगरके लोगोके हाथ हमारी चाबियाँ आ गई है उन्हे स्वर्गपुरीके एक उपनगरमे स्थान देकर बसा लेना चाहिए। न वे लोग भूलोकको लौटने पायेगे और न दूसरे मनुष्योके यहाँ आनेका क्रम जारी रहेगा।" एक दूसरे देवताका सुझाव था।

"स्वर्गलोककी बस्ती यहाँसे हटाकर कही दूर बसा ली जाय, जहाँ तक मनुष्य न पहुँच सके।" तीसरेने राय दी।

इसी प्रकार तरह-तरहकी राये चलती रही।

सभा अभी किसी निर्णय पर नही पहुँची थी कि एक घबराये हुए देवदूतने दरबारमे प्रवेश किया।

"महाराज! मनुष्योने अपने लोकमे बडे-बडे कारखाने खोलकर ठीक वैसी ही चाबियाँ ढालनी आरम्भ कर दी है। उनका विचार है कि जितने मनुष्य भूतल पर रहते है, उतनी ही चाबियाँ बना डालेगे, जिससे प्रत्येक मनुष्यके पास सातो चाबियोका एक-एक गुच्छा हो जाय और वह जब चाहे स्वर्गमे आ सके।"

इस समाचारसे देवताओके हाथ-पैर और भी फूल गये, उनके माथे पसीनेके पानीसे तर हो गये और वह पानी भूतलके ऊपर घने बादलके रूपमे घिरा दीखने लगा।

"आप लोग चिन्ता न करे" दरबारकी पिछली पक्तिमे बैठे हुए कूट-कर्मा नामके एक देवताने खड़े होकर कहा, "मनुष्योको पृथ्वी लोकमे रोकने का प्रबन्ध मै कर लूँगा। इस कामका ठेका मुझे दे दिया जाय।"

कूटकर्मा स्वर्गलोकका एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आविष्कारक और व्यापारी ठेकेदार था और इसके कौशल पर देवताओको बहुत विश्वास था।

मनुष्योको पृथ्वीलोक पर रोकनेका ठेका उसे दे दिया गया। इसके लिए उसने साठ अरब द्राविष ('द्राविष' सम्भवत स्वर्गलोकका एक बड़ा सिक्का होता है) मागे और वह रकम उसे तुरन्त दे दी गई।

कूटकर्माने ग्रामोफोनके साउन्ड बाक्स-जैसे यन्त्रकी एक दो-मुखी जोडी बनाई। एक विशेष आकारकी वस्तुको सामने लाने पर उस यत्रके पहले मुखसे आवाज निकलती थी—"यह नही हो सकता" और दूसरे मुखसे आवाज निकलती थी—"इसे फिर देखेगे।"

आवश्यक सख्यामे इन यन्त्रोकी जोडियाँ तैयार हो जाने पर कूटकर्माने एकरात भूलोकके लगभग सभी मनुष्योकी छातियोमे, उनके सोते समय, वह यत्र जड दिया। जो लोग कारखानोमे दिन-रात काम करके उन चाबियोको बना रहे थे, उनकी छातियोमे वे यन्त्र नही जड़े जा सके।

उधर उस नगरके कारीगरोने बहुत बडी सख्यामे ऐसी चाबियाँ, उनका व्यवसाय करनेके लिए गढ ली।

जब वे कारीगर उन चाबियोको लेकर लोगोके पास बेचने गये तो उन्हे बडा ही निराशाजनक अनुभव हुआ।

चाबीकी उपयोगिता और आवश्यकता बताकर ज्यो ही वे किसी सम्भावित ग्राहकके सामने चाबियोका गुच्छा निकालते, वह तुरन्त कह उठता—"यह नही हो सकता।"

वास्तवमे उस आकार-प्रकारकी चाबियोका प्रतिबिम्ब पडते ही उसकी छाती पर लगाया हुआ वह यन्त्र ही ये शब्द बोल उठता था और यदि सीधा प्रतिबिम्ब न पडनेके कारण ये शब्द उससे न निकलते तो, तिरछा प्रतिबिम्ब पडनेपर "इसे फिर देखेगे" शब्द उस यन्त्रके दूसरे मुखसे निकल पडते। वह यन्त्र चाबियोके आकारसे सम्बधित कुछ ऐसी ही कारीगरीसे बनाया गया था। इस यन्त्रके निर्माणमे कुछ ऐसे मायावी बलका भी प्रयोग किया

गया था जिससे प्रत्येक मनुष्य यही समझता था कि यह उसकी व्यक्तिगत आवाज ही है, और भीतरसे इच्छा होते हुए भी अपनी इस पहले कही बातको पलटनेका साहस वह नही करता था।

चाबियोके निर्माता कारीगरोको मनुष्योकी इस 'प्रवृत्ति' से बडी निराशा हुई और कुछ दिनोकी असफलताओके पश्चात् उन्होने अपना प्रयत्न छोड दिया।

मनुष्योकी अगली पीढियोमे यह अतिरिक्त यन्त्र मनुष्य शरीरका एक परपरागत अनिवार्य-सा अग बन गया और लोग इसकी आवाजको ही निर्विवाद अपनी आवाज समझने लगे। स्वर्गलोकमे मनुष्योके अतिक्रमणका कोई भय न रह गया।

आगे चलकर देवताओने इन निर्मित चाबियोको अध्यात्म ग्रन्थोके रूपमे और उस वक्ष-जटित यन्त्रको मनुष्यके पार्थिव मस्तिष्कके एक जोड-के रूपमे परिवर्तित कर दिया और उसे उसके वक्षसे हटाकर सरमे जडवा दिया।

कहते है कि देवताओका यह प्रतिबन्ध अब कुछ टूटने लगा है और लोग स्वर्गलोक और उसकी चाबियोकी ओर कुछ ध्यान देने लगे है। फिर भी, अभी ऐसे ही लोगोकी सख्या अधिक है जो परलोकवादी, स्वर्गकी चाबी रखनेवाले अध्यात्म ग्रन्थोकी बात सामने आने पर बोल उठते है—"यह नही हो सकता" या "इसे फिर देखेगे।"

कभी जॉच करके आप भी देखिये, आपके मस्तिष्क या वक्षमे तो यह यन्त्र जडा हुआ नही है।

———

अर्थ-मन्त्री

लोकावत राज्यका राजा सौरपाल अत्यन्त बुद्धिमान और लोकप्रिय था।

राजकोषकी स्थायी आय राज्यकी चतुर्थांश भूमिकी कृषिसे—यह चतुर्थांश भूमि राज्यकी, तथा तीन चौथाई भूमि प्रजाजनकी सम्पत्ति होती थी—और शेष प्रजाजनके इच्छित दानसे होती थी। इस इच्छित दानका प्रबन्ध इस प्रकार था . हर पाँचवे वर्ष राजा राज्यके प्रत्येक नगर और ग्रामके दौरेके लिए एक दानपत्र लेकर निकलता था। राजाका आदेश था कि प्रत्येक देशवासी उस पात्रमे यथाशक्ति दान डाले, साथ ही यह भी आदेश था कि यदि कोई व्यक्ति इतना निर्धन है कि वह राज्यके पचवर्षीय लोक-सम्मेलनमे सम्मिलित होनेके लिए आवश्यक मार्ग और एक जोडी नये वस्त्र नही जुटा सकता तो वह तदर्थ उस दान-पात्रमे से पाँच रजत-मुद्राओसे लेकर पाच स्वर्ण-मुद्राएँ तक निकाल ले। लोग उस दान-पात्र-मे दान डालते थे और कुछ ऐसे भी दीन-निर्धन प्रजाजन होते थे जो आदेशा-नुसार उसमे से कुछ निकाल लेते थे। इस लेन-देनके पश्चात् जो धन राजकोषमे पहुँचता था वह प्राय कृषिकी आयके बराबर ही हो जाता था। राज्यमे और किसी प्रकारका कोई कर नही था। राजाकी यह पचवर्षीय यात्रा नौ मासकी होती थी—यात्राके अन्तमे गोदावरी-तटके एक विस्तृत मैदानमे वह पचवर्षीय मेला लगता था और राज्यके प्रत्येक परिवारका कम-से-कम एक सदस्य इस मेलेमे अवश्य पहुँचता था। मेले-मे राजाकी ओरसे सारी प्रजाका भर-पूर सत्कार किया जाता था और बडा आनन्द समारोह रहता था।

गोदावरीके तटवर्ती मैदानमे राज्यका पच-वर्षीय सम्मेलन जुडा हुआ

था। एकत्र किये हुए धनका कोष खोला गया। रजत और स्वर्ण-मुद्राओके साथ उस कोषमे एक ताम्र-मुद्रा भी निकली। राजकीय दान-पात्रमे आई हुई यह ताम्र-मुद्रा एक अभूत-पूर्व बात थी। जो इतना निर्धन है कि केवल एक ताम्र-मुद्रा ही राजकोषको दे सकता है उसने सम्मेलन-मे आनेके लिए वस्त्र और मार्गका व्यय दान-पात्रमेसे अवश्य लिया होगा, फिर इस ताम्रमुद्राके डालनेका क्या अर्थ ? सम्मेलनके निमित्त बसे हुए अस्थायी नगरमे डोडी पिटवाई गई कि जिस व्यक्तिने दान-पात्रमे ताम्र-मुद्रा डाली हो वह राजदरबारमे उपस्थित हो।

दूसरे दिन राजाज्ञानुकूल नये वस्त्र लपेटे हुए एक दुबला-पतला, क्षुधा-जर्जरित अधेड व्यक्ति दरबारमे उपस्थित हुआ।

"आपने दान-पात्रमे ताम्र-मुद्रा डाली थी ?" राजाने उसे खडा पाकर पूछा।

"महाराज !" उसने हाथ जोडकर स्वीकार किया।

"और आपने वस्त्र और मार्ग-व्ययके लिए दान-पात्रमे से कुछ लिया भी था ?" राजाने दूसरा प्रश्न किया।

"महाराज !" उसने दूसरी बात भी स्वीकार की।

उसी दिनसे राजाने उस व्यक्तिको अपने मन्त्रियोमे अर्थ-मन्त्रीके पद पर नियुक्त कर दिया।

दूसरे दरबारियोको राजाके इस चुनाव पर बडा आश्चर्य हुआ और उनमे अनेक असन्तुष्ट भी हो गये, और किसीने तो प्रकट रूपमे इस पर आपत्ति भी की।

राजाने इस आपत्तिका उत्तर दिया, "इसका निर्णय आप लोग अगले पचवर्षीय धन-सग्रहका परिणाम देखकर करे तो अधिक अच्छा हो।"

पॉच वर्ष बीत गये और अगले धन-सग्रहके पश्चात् लोक-सम्मेलन उसी प्रकार जुडा।

एकत्र धनका कोप खोला गया। अबकी बार उसमे सोने-चॉदीकी

मुद्राएँ कम और ताम्र-मुद्राओका ही ढेर अत्यधिक था। एकत्र धनका योग लगाया गया —वह पिछली बारसे पॉच गुना था।

सभी दरबारी आश्चर्य-चकित रह गये।

महाराज मुसकराये। सभी दरबारियोको लक्ष्य करके उन्होने कहा—

"अबकी बार असाधारण धन-सग्रहका कारण आपमेसे कोई बता सकते है।"

सब चुप रहे।

महाराजने नये अर्थ-मन्त्रीको आदेश दिया कि वे इसका भेद बताये।

नये अर्थ-मन्त्रीने कहा—

"मैंने प्रजाजनको आदेश भेज दिया था कि कोई भी व्यक्ति अपने सामर्थ्यसे अधिक दान-पात्रमे दान न डाले। फलत. जो लोग सकोच या प्रदर्शन-भावसे प्रेरित होकर अपनी समाईसे अधिक धन देते थे उन्होने अपनी समाई भर कुछ कम ही धन दिया है, और अधिकाश प्रजाजन जो केवल कुछ ताम्र-मुद्राएँ ही दे सकनेकी समाईके कारण इस दान-यज्ञमे पहले भाग नही लिया करते थे, अवकी बार इसमे स्वच्छन्द-भावसे अपना सहयोग दे सके है। लोग पहले केवल लेना और न लेना ही ठीक-ठीक जानते थे, अब राज्यके प्रति अपने अनिवार्य कर्तव्य और उत्तरदायित्वको समझकर सहज भावसे देना भी सीख गये है।"

नये अर्थ-मन्त्रीकी सफल बुद्धिमत्ता दरबारियोको स्वीकार करनी पडी।

———

सुखके साथी

स्वर्गलोकमे देवताओके राजा इन्द्रका दरबार लगा हुआ था। पृथ्वीलोकसे आई हुई एक महान् मनुष्यकी आत्माने उसी समय उस दरबारमे प्रवेश किया।

इन्द्रने उस मनुष्यात्माका यथोचित स्वागत किया और उसे आदर-पूर्वक एक अच्छे आसन पर बिठाया।

जो मनुष्यात्माएँ इस योग्य होती है कि पृथ्वीलोकमे अपना जीवन पूरा करके शरीर त्यागते ही सीधे स्वर्ग लोकमे पहुँच सके उनकी देवताओमे बहुत बडी महिमा मानी जाती है और उन्हे बहुत आदर मानके साथ लिया जाता है। ऐसी मनुष्यात्माओसे देवताओको इस पृथ्वीलोकके सम्बन्धमे बहुत-सी नई और उपयोगी बाते ज्ञात होती है और उस जानकारीके सहारे वे इस लोकका प्रबन्ध अधिक अच्छाईके साथ कर पाते है।

"कहिये महात्मन्!" राजा इन्द्रने बडी उत्सुकताके साथ उस मनुष्यात्मा से पूछा, "हमारी प्रिय भूलोककी मनुष्यजातिके सम्बन्धमे जो भी कुछ आप विशेष बात बता सकते हो उसे सुननेके लिए यहाँ उपस्थित सभी देवता उत्सुक है। आपने ससारमे बहुत साधनापूर्ण और सफल जीवन बिताया है, मानवजातिके सम्बन्धमे आपकी अनुभवी सम्मति हम लोगोके लिए विशेष महत्त्वकी वस्तु होगी। मनुष्य-जातिने तो अब तक बहुत कुछ अपना विकास कर लिया होगा!"

"मनुष्य-जातिके सम्बन्धमे"—मनुष्यात्माने कुछ रूखेसे स्वरमे उत्तर दिया, "भूलोकके मनुष्य तो विकासमे बहुत पिछडे हुए है। वे बहुत स्वार्थी है और एक दूसरेके केवल सुखके ही साथी है। दु खमे कोई किसीका पूछनेवाला नही। मैने एक बडे समृद्ध और सुखी परिवारमे जन्म लिया था। बचपनसे जवानी तकके दिन मैने सोने-चाँदीसे खेल कर बिताये।

तो स्वर्ग लोकका वातावरण इन कीटाणुओके विषसे दूषित हो जायगा और देवताओका स्वास्थ्य सकटमे पड जायगा। इसलिए आप जल्दसे जल्द इसे भूलोकमे दोबारा जन्म देनेका प्रबन्ध कीजिये।"

धर्मराजके साथ इस सम्बन्धमे कुछ और वार्ता-सलाह करनेके बाद अन्तमे इन्द्रने कहा .

"और देखिये, इसके सचित भले और बुरे कर्मोमेसे बुरे कर्मोका कुछ अधिक और अच्छे कर्मोका कुछ कम ही अश इसे अगले जन्ममे भोगनेके लिए दीजिएगा।"

"सो तो है ही।" धर्मराजने कहा, "ऐसा किये बिना तो इस मनुष्यका कल्याण हो ही नही सकता।"

धर्मराजके सहायक लिपिका-दलने बडी सरगर्मीके साथ दौडधूप करके उस मनुष्यात्माके लिए उपयुक्त परिस्थितियोके बीच शीघ्र ही जन्मका प्रबन्ध कर दिया।

मानव-समाजके एक नीच-निर्धन परिवारमे उसे जन्म दिया गया। उसका बचपन बडे कष्ट और निरादरकी दशामे बीता। लेकिन युवावस्थाके आरम्भसे ही उसके दिन पलट गये। अपने परिश्रम और पूर्व जन्मकी साधना-शक्तिके सहारे वह धीरे-धीरे एक बडा धनपति सेठ बन गया। लेकिन इसके साथ ही उसके पूर्वजन्मके घृणा और अहकारके सस्कार भी जाग उठे, उसकी प्रकृति निर्मम और कठोर हो गई। उसके पास अतुल धन-सम्पत्तिके होते हुए भी लोग उसके पास फटकना तक नापसन्द करने लगे। जो कुछ लोग उससे मिलते भी वे स्वार्थ-वश हृदयमे घृणा और शब्दोमे दिखावटी सम्मान लिये हुए। धीरे-धीरे अनुभवोके पकनेपर उसे लगने लगा कि वह समाजसे बहिष्कृत है, कोई उससे प्रेम नही करता। वह अपने जीवनमे एक सूनेपन, एक दुख.दायी अभावका अनुभव करने लगा। जो थोडेसे अच्छे कर्म उसे इस जन्ममे प्रारब्ध कर्मके रूपमे भोगनेके लिए दिये गये थे और जिनके द्वारा ही वह निर्धनसे धनवान बन सका

था उन्ही अच्छे कर्मोके प्रभावसे उसके हृदयमे अब घृणाके बदले कुछ यह चिन्ता होने लगी कि किस प्रकार वह लोगोको अपनी ओर आकृष्ट करके उनका स्नेह-सम्मान प्राप्त करे। लेकिन चूँकि उसके बुरे कर्म ही इस जन्ममे प्रबल थे इसलिए वह इस दिशामे कुछ कर नही सका और अपने अभावको धनसे प्राप्त होनेवाले नाच-रग और भोग-विलासके द्वारा पूरा करनेका प्रयत्न करने लगा। मनुष्यका साथ और मनुष्यका प्रेम उसे जीवन भर प्राप्त न हो सका और उन्ही विषयोमे अपने जीवनके अन्तिम दिनोको डुबाये हुए एक दिन वह इस ससारसे विदा हो गया।

भूलोक और स्वर्गलोकके बीच भुवर्लोकमे उसे बहुत कालतक रुकना पडा। मनुष्यके प्रति घृणा और मानवीय प्रेमके अभावके और भी कडवे—हज़ार गुना कडवे—अनुभवसे भुवर्लोकमे उसे हुए। उसे ऐसा लगता रहा कि वह उसी पृथ्वी लोकमे रह रहा है, सब लोग आपसमे प्रेम-व्यवहार करते है लेकिन उसकी ओर कोई भी ध्यान नही देता। उसका हृदय उनके लिए कभी असह्य घृणासे भी भर उठता और साथ ही कभी-कभी उनके प्रेम-व्यवहारके लिए उसका मन छटपटाने भी लगता। उसकी यह मानसिक पीडा पागलपनकी सीमा तक पहुच गई। अन्तमे धीरे-धीरे उसे जान पडने लगा कि लोगोकी इस उदासीनतामे दोष उसका ही है। उसने ही पहले उनसे घृणा करके उन्हे अपने प्रति उदासीन बनाया है। इस विचार-परिवर्तनसे उसे कुछ शाति मिलने लगी। धीरे-धीरे लोग उससे सहानुभूति और स्नेह भी करते जान पडने लगे। अब उसके हृदयकी घृणा क्षमा और प्रेममे तेज़ीके साथ बदलने लगी और उसका दृष्टिकोण बहुत उदार हो गया।

एक दिन अचानक उसने अपने आपको स्वर्गलोकमे राजा इन्द्रके दरबारमे पाया।

अबकी बार इन्द्रने सब देवताओ समेत खडे होकर उसका विशेष आदर सम्मानके साथ स्वागत किया।

"कहिए महात्मन्" अबकी बार भी राजा इन्द्रने उससे वही पहले वाला प्रश्न किया," मनुष्य जाति और भूलोकके सम्बन्धमे अबकी बार आप क्या समाचार लाये है।"

"महाराज" मनुष्यात्माने उत्तर दिया "मनुष्यजाति बडी तेज़ीके साथ आगे बढ रही है। भूलोकके प्रारम्भिक युगमे मनुष्य एक दूसरेका साथ देना बिलकुल नही जानता था। वह न सुखमे दूसरेका साथ देता था, न दु खमे। अब उसने एक श्रेणी आगेका पाठ सीख लिया है। वह सुखमे दूसरोका जी खोलकर साथ देने लगा है। आगे चलकर वह दु खमे भी दूसरोका साथ देना सीख जायगा। यही प्रगति रही तो मनुष्य-लोकमे देव-लोककी सभी सुख-सुविधाएँ धीरे-धीरे प्रस्तुत हो जायेगी।"

"मनुष्य सुखमे दूसरोका साथ देने लगा है, इसमे भला मनुष्य जातिके कौनसे हित और विकासका लक्षण है ? हित तो तब होता जब वह दु ख-मे दूसरोका साथ देने लगता" एक देवताने प्रश्न किया।

"दु ख बटानेसे आधा होता है, सुख बटानेसे चौगुना होता है। सुख-की बढतीका मार्ग यही है कि उसे बटाने वाले लोग मिले। बिना दूसरोके बटाये मनुष्यका सुख सुख ही नही रह सकता। मनुष्यको सुख बटाने वालोका भी उतना ही कृतज्ञ होना चाहिए जितना दु ख बटाने वालोका।" मनुष्यात्माने उत्तर दिया।

देवताओने उस मनुष्यात्मासे स्वर्गलोकमे ही रहनेका बहुत आग्रह किया, लेकिन उसे अपनी मनुष्यजातिसे इतना अधिक प्रेम हो गया था और वह उसकी कुछ ऐसी विशेष सेवा भी करना चाहता था कि अधिक दिन स्वर्गलोकमे रुकना उसने पसन्द नही किया। सुना है कि उसने ससारमे फिरसे जन्म ले लिया है और प्रेम तथा सेवाका सन्देश उसके जीवनके प्रत्येक कार्यसे झरता रहता है और उसके प्रेमियो तथा प्रियजनोका क्षेत्र बहुत बडा है।

जल-नगरी

एक राजाका राज्य बहुत समृद्ध और उसकी प्रजा बहुत सुखी थी। राजाका दरबार लगा हुआ था और उस दिन सारे देशसे आये हुए क्षेम-दूतोकी दरबारमे पेशी थी। क्षेमदूत राज्यके उन कर्मचारियोका नाम था जो सारे देशमे घूम कर प्रजाके दुःख-सुखकी सूचनाएँ एकत्र करके राज-दरबारमे पहुँचाते थे। महीनेमे एक दिन उन सबको दरबारमे उपस्थित होना पडता था।

"महाराज, प्रजामे किसीको भी कोई दुख नही है। प्रजाका बच्चा-बच्चा सुखी और प्रसन्न है। इस महीने एक भी दुखी व्यक्ति सारे राज्यमे ढूँढने पर भी नही मिला।" क्षेमदूतोके प्रधानने दरबारमे खडे होकर कहा।

महाराज मुसकराये और दरबारके दूसरे कामोमे लग गये।

कला, कौतूहल और विज्ञानके साधनोकी उस राज्यमे कोई कमी नही थी। जिस सुन्दर झीलके किनारे वह राजधानी बसी हुई थी, उस झीलके भीतर राजाने एक बहुत सुन्दर नगर बनवाया। सुन्दर-सुन्दर भवन, सडके, बाग, बगीचे और हाट-बाट सभी कुछ उस नगरमे थे। जलके भीतर वैज्ञानिक उपायोसे काफी हवा और रोशनी उस नगर तक पहुँचानेका प्रबन्ध किया गया था। तीन महीनेके भीतर यह नगर बनकर तैयार हो गया। इस जल-नगरीमे लगभग दो लाख व्यक्तियोके आरामसे बसनेकी गुजाइश थी।

राजधानीके बहुतसे लोग इस जल-नगरीमे बसनेके लिए उत्सुक हो गये। कुछ ही दिनोमे वह नगरी खचाखच आबाद हो गई। उस नगरीमे बसनेवालोको एक खास तरहका चर्म-कवच पहनकर जाना पडता था, जिससे पानीके लगातार सम्पर्कसे उनके शरीरकी चमडी गले नही।

आँखोपर एक खास तरहका चश्ना—जिससे पानी आँखोमे न जाय—और इसी तरह नाक और कानोपर आवश्यक झिल्लियाँ उन्हे पहननी पडती थी और जबानपर एक खास तरहका रोगन लगाना पडता था जिससे पानीके भीतरकी कुछ कडवी और जहरीली चीजे उसपर असर न करे। उस जल-नगरीमे बसनेवालोको स्वतत्रता थी कि जब चाहे ऊपर अपने राजधानी वाले घरोमे आकर रहे। जल-निवासका कुतूहल कुछ जल-विहार-प्रिय लोगोको इतना बढा कि उन्होने अपना अधिक समय वही बिताना पसन्द किया और धीरे-धीरे वहाँके निवासी बन गये।

कुछ बरस बीतने पर राजाने एक बार क्षेम-दूतोकी पेशी वाले दरबारमे आज्ञा दी कि कुछ क्षेमदूत जलनगरीमे जाकर वहाँके लोगोकी खैर-खबर लाये। क्षेमदूतोके प्रधानने बारह क्षेमदूत इस कामके लिए नियुक्त कर दिये।

अगले महीने दरबारमे वे बारहो क्षेमदूत भी उपस्थित हुए। उन्होने जल-नगरीके सम्बन्धमे अपने-अपने वक्तव्य दिये। कुछने कहा कि वे सभी लोग पूर्ण 'सुखी और सतुष्ट है'। कुछने कहा कि उनमेसे कुछ लोग सुखी है और कुछ दुखी भी है, और यह कहकर उनके कुछ दु ख-कष्ट गिना भी दिये। इन दूसरे प्रकारके क्षेमदूतोको कुछ लोग जल-नगरीमे ऐसे दीख पडे थे जिनके कान, नाक, आँख, मुँह या टाँगोमे यथेष्ट हवा या प्रकाश न लगनेके कारण कुछ रोग, पीडाएँ या दुर्बलताएँ उत्पन्न हो गई थी और वे उन कष्टोसे दुखी थे।

इन वक्तव्योको सुनकर महाराजने कहा, "आप लोगोकी सूचनाओमे मतभेद है। मै जलनगरीके सम्बन्धमे सच्ची जानकारियाँ चाहता हूँ। आप लोग फिर वहाँ जाये और अगले महीने वहाँके सच्चे समाचार लाकर मुझे दे।"

महाराजके इस असन्तोषसे क्षेमदूतोका प्रधान मन-ही-मन बहुत

लज्जित हुआ। अबकी बार वह स्वय उन बारह क्षेमदूतोके साथ जल-नगरीमे गया।

अगले महीनेके दरबारमे उपस्थित होकर क्षेमदूतोके प्रधानने कहा, "महाराज, जलनगरीके सभी निवासी अत्यन्त दुखी है।"

महाराज मुसकराये। "क्या आप सब लोगोकी अबकी बार यही राय है?" उन्होने दूसरे क्षेम-दूतोको लक्ष्य करके पूछा।

"नही महाराज!" एक क्षेमदूत ने कहा, "मुझे तो ऐसे बहुतसे लोग वहाँ मिले जो पूर्णतया सुखी और सन्तुष्ट है। महाराज चाहे तो दरबारमे बुलाकर स्वयम् उनके मुँहसे ही सुन सकते है। ऐसे दो सहस्र व्यक्तियोकी सूची मै स्वय वहाँसे लिख लाया हूँ।"

चार-पाँच और भी क्षेमदूतोने इस दूसरे क्षेमदूतकी बातका समर्थन किया।

महाराजकी भवो पर असन्तोषके बल पड गये। "आप लोग फिर जाइए और सच्ची सूचना, एकमत होकर अगले महीनेके दरबारमे प्रस्तुत करनेका प्रयत्न कीजिए।"

"अवश्य महाराज, अगली बार हम अवश्य एकमत होकर सच्ची सूचना महाराजकी सेवामे उपस्थित कर सकेगे।" प्रधान क्षेमदूतने अविचलित भावसे कहा।

सभी दरबारी जलनगरीके सम्बन्धमे सच्ची बाते जाननेको उत्सुक थे। वे सभी इस सम्बन्धमे अनिश्चयमे पडे हुए थे। जलनगरीके सभी लोग दुखी है, प्रधान क्षेमदूतकी यह बात उन्हे बहुत अविश्वसनीय जान पडी।

अगले मासके दरबारमे वे सब क्षेमदूत उपस्थित हुए। दरबारियोको यह देखकर बडा आश्चर्य और कुतूहल हुआ कि जल-नगरीके लिए नियुक्त सभी क्षेमदूत—उनके प्रधानको छोडकर—पूरा जल-परिधान पहने हुए ही आये थे।

"महाराज, हम सभी अबकी बार एकमत होकर सूचना लाये है कि

जल-नगरीके सभी लोग दुखी है।" प्रधान क्षेमदूतने कहा और सभी दूसरोने उसका समर्थन किया।

दरबारियोका आश्चर्य और कुतूहल और भी बढ गया। महाराज मुसकराये। "हमारे दरबारी दुख-कथाको सुननेके लिए उत्सुक है। अबकी बार आप लोग, जान पडता है, बहुत गहरी छानबीन करके यह समाचार लाये है!" महाराजने कहा।

"नही महाराज!" उन बारहोमेसे एक क्षेमदूतने कहा, हमलोग तो अबकी बार जलनगरीमे गये भी नही। वास्तवमे तो हमे पहली यात्रामे ही सूझ जाना चाहिए था कि जलनगरीके सभी लोग दुखी है।

महाराजने सभी दरबारियो पर एक खोजपूर्ण दृष्टि डाली। सभी-के मुखो पर आश्चर्य और अनिश्चयकी हवाइया उड रही थी।

'प्रधान क्षेमदूतने अबकी बार हमे कामसे तो छुट्टी दे रखी थी, लेकिन इस जल-परिधानको बराबर पहने रहनेका आदेश दे दिया था। इस परि-धानका बन्धन ही कौन-सी कम मुसीबत है! न इससे हम पूरी तरह देख सकते है, न सुन सकते है, न स्वाद और सुगन्ध ले सकते है, न खुल कर चल फिर ही सकते है। जल-नगरीके दूसरे सुखो-दुखोमे वहाँके लोग इस आवश्यक, स्थायी दुखको भूले रहते है, लेकिन सबसे बडा दुख तो यही है, और यह यहाँ सबके साथ सदैव लगा हुआ है।" उसी दूसरे क्षेमदूतने कहा।

"आप जल-नगरीकी पहली सचाई ढूँढ लाये और आगे और भी सचा-इयोकी खोज करेगे" महाराजने कहा, "लेकिन जैसी यह सचाई जल-नगरीके बारेमे मालूम हुई है, क्या वैसी ही कोई सचाई हमारे इस सारे राज्यके सम्बन्धमे भी सच नही हो सकती? क्या यह सम्भव नही कि राज्यके क्षेमदूतोने सारी प्रजाके सुखी होनेका जो समाचार पिछली बार दिया था वह भी ऐसे ही किसी तरह गलत हो?"

राज्य भरके उपस्थित क्षेम-दूतो और दरबारियोमेंसे किसीने इस बातका उत्तर न दिया। दरबारमे सन्नाटा छाया रहा।

भगवान बुद्धकी बताई, ससारकी चार महान् वास्तविकताओमे 'दु ख या क्लेश' भी एक वास्तविकता है। शरीरके बन्धनमे बँधना हीं एक सुनिश्चित क्लेश है।

नई पूजा

ऋषिवर कीलालका आश्रम बस्तीसे दूर नही था। पडोसके गाँवके लडके वहाँ तक खेलने आ जाया करते थे। कीलाल ऋषिका छोटा पुत्र हर्मिष इन ग्रामीण बालकोके आकर्षणका विशेष केन्द्र था। ६ वर्षकी आयुमे ही वह इतना मेधावी और सर्वप्रिय हो गया था कि उस गाँवके सभी बालक उसके स्नेही सखा बन गये थे। कीलाल ऋषि अपने पुत्रकी ऐसी प्रवृत्तिसे बहुत प्रसन्न और आशान्वित थे।

बालक हर्मिषका बाह्य और आन्तरिक अध्ययन द्रुत गतिसे चल रहा था। वह पूरे १४ वर्षका भी नही होने पाया था कि देवगुरु बृहस्पतिने उसे अपने स्वर्गलोक स्थित आश्रममे विशेष अध्ययनके लिए बुला भेजा। कीलाल ऋषिने सहर्ष बृहस्पति देवके आदेशका पालन किया। भूलोक सम्बन्धी एक विशेष कार्यभारको सँभालनेकी तैयारीके लिए उन्होने हर्मिषको उसके पास भेज दिया। हर्मिषके ग्रामवासी सखाओने ही नही, गाँवके सभी नर-नारियोने भी रुँधे हुए कठ और भरी हुई आँखोसे बालक हर्मिषको बिदा दी। उसका विछोह उनके लिए सचमुच अत्यन्त दु सह था।

गुरुदेव बृहस्पतिके आश्रममे चौदह वर्ष तक सक्रिय अध्ययनके पश्चात् ऋषिकुमार भूलोकमे अपने पिताके आश्रममे लौट आया। अनेक सिद्धियो-शक्तियोसे सम्पन्न ऋषिकुमारकी गणना अब देव-ऋषियोमे कर दी गई थी और पृथ्वीका भार सम्हालनेका काम, पूरे एक मन्वन्तर युगके लिए उसे सौपा गया था। दूसरे ग्रहो-नक्षत्रोके साथ पृथ्वीका ठीक सन्तुलन, पृथ्वीके सागरो, महासागरो, भूधरो और भूखडोकी ठीक व्यवस्था और उसमे समय-समय पर आवश्यक हेर-फेर आदिका काम उसके सुपुर्द था।

वह आवश्यकतानुसार पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि या आकाश तत्त्वके रूप धारण कर सकता था और इच्छा मात्रसे ही अपने शरीरको अणुसे भी छोटा और हल्का या पर्वतराजसे भी बडा और भारी बना सकता था।

हर्मिष कब, किस प्रकार अपने इन कार्योका सचालन करता था, यह जन-साधारणकी दृष्टि और समझसे बाहरकी बात थी। फिर भी उन्हे उसकी ऊँची शक्तियोका पता था। वह पूर्ववत् सुन्दर, सुकुमार मानवशरीरधारी होकर अपने पिताके आश्रममे रहता था और अपने पूर्व परिचित सखा-स्नेहियोसे मिलने-जुलने और उनका सहृदय सत्कार करनेका अब भी थोडा-बहुत अवकाश निकाल लेता था।

देवलोकसे लौटते ही उसने अपने बालपनके सभी सखाओको एकत्रित किया और कहा

"पृथ्वीलोककी कुछ विशेष सेवाके लिए यद्यपि देवताओने मुझे एक महत्त्वपूर्ण पदका अधिकार दिया है और उस सेवाके लिए कुछ विशेष सिद्धिया-शक्तियाँ भी प्रदान की है, फिर भी तुम लोगोके लिए मै तुम्हारा वही स्नेही हर्मिष हूँ। मै तुम्हारे स्नेहभावका वैसा ही कृतज्ञ हूँ और अपनी सीमाके भीतर तुमसे वही नाता निभाना चाहता हूँ। तुम लोग निस्सकोच बताओ कि मै तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

हर्मिषके ये सभी साथी युवा हो चुके थे। स्नेहके साथ-साथ उसके तेज बलके आगे एक श्रद्धा-सम्मान-जनित भयकी ही भावना भी उनके हृदयोमे हर्मिषके लिए जाग उठी थी।

"हम—हमे आप अपने कृपा-पात्र भक्तो, पुजारियोमे स्थान दिये रहिये, यही आपकी हमारे ऊपर सबसे बडी कृपा होगी।" उनमेसे कुछ-ने कहा।

"आपके सामने हम है ही किस योग्य! आप हमे अपना अनुचर सेवक समझिए। आप ही हमारे रक्षक और पालक पोषक है।" कुछ दूसरोने उत्तर दिया।

"हम तो आपके द्वारके भिखारी है, भगवन् ! जिस वस्तुकी आवश्यकता होगी, आपसे ही मॉगेगे । हमारे कोई बडे भाग्य ही जगे थे जो हमने आपके आश्रमकी समीपवर्ती भूमिमे जन्म लिया और बचपनसे ही आपकी छत्रछायामे पले ।" तीसरे प्रकारके सखाओने निवेदन किया ।

हर्मिषके बचपनके सभी साथी अपनी-अपनी बात कह चुके थे और हर्मिष उन्हे अपना सहृदय स्वीकृतिपूर्ण उत्तर दे चुका था कि उसकी दृष्टि कुछ दूर हटकर बैठे हुए एक युवक पर पडी ।

"मित्रायु !" हर्मिषने उसे नामसे सम्बोधित करते हुए स्निग्ध स्वरमे कहा "तुम कैसे चुपचाप बैठे हो ? तुम भी कुछ कहो ।"

"मैं भी कुछ कहूँ ?" युवकने अकस्मात् सावधान हो कर कहा—"इसमे कहनेकी बात ही क्या है । मुझे बडी प्रसन्नता और बडा गौरव है कि मेरा एक मित्र इतनी ऊँची गति और महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचा है । फिर भी मै जैसा पहले तुम्हारा मित्र था वैसा ही अब भी हूँ । इसमे नई, कहने-सुननेकी बात क्या है ?"

'पहले जैसा मित्र !' सभी उपस्थित युवकोने आश्चर्यचकित दृष्टिसे मित्रायुकी ओर देखा और उसकी धृष्टता और मूर्खताकी बात सोचते रह गये । कहॉ हर्मिष और कहॉ मित्रायु ! यह अब भी हर्मिषकी मित्रताका दम भरता है । मित्रायु तो अपने साथियोमेसे ही अधिकाशसे निम्नतर स्थितिका युवक था ।

हर्मिषने मित्रायुकी ओर भी उसी स्वीकृतिपूर्ण दृष्टिसे देखा और तत्पश्चात् सत्कार-पूर्वक सबको बिदा दी ।

दिन बीत चले । हर्मिष देवके प्रति उनके इन साथियोकी श्रद्धा-भक्ति जागती गई । गॉवमे ही सीमित न रह कर उसके भक्तो, सेवको और याचकोकी सख्या सारे भूमडल पर तेजीसे बढ गई । उसकी पूजा उपासनामे उन्होने कोई कमी नही छोडी, हर्मिषने भी उनकी सभी मॉगोको पूरा किया । हर्मिषकी गणना भूलोकके प्रमुख देवताओमे होने लगी । पृथ्वी-

की बहुत बडी, लगभग दो तिहाई जन-सख्या उसे ही अपना इष्टदेवता मान कर पूजने लगी।

पृथ्वीके निवासियोके लिए सृष्टिके चार पदार्थोमे से तीन—पुण्य, बल और वैभव (अथवा धर्म, अर्थ और काम) के भडार हर्मिषके हाथमें ही थे। दैवी योजनाके अनुसार हर्मिषका यह कर्तव्य था कि वह पृथ्वीके मनुष्योको इन पदार्थोसे यथायोग्य इस प्रकार भरा पूरा रखे कि पृथ्वी अपने निश्चित मार्ग पर सुख गतिसे आगे बढती जाय।

जगह-जगह हर्मिष देवके पूजा-मन्दिर बन गये। प्रात साय लोग इन मन्दिरोमे एकत्रित होकर उसकी स्तुति और प्रार्थना करने लगे। भक्तजन प्रार्थना करते—"भगवन्, हमे पुण्य दीजिये।" सेवक जन प्रार्थना करते—"भगवन् हमे अपने बल का सहारा दीजिये जिससे हम अपने मनोरथ पूरे कर सके।" और याचक जन प्रार्थना करते "भगवन्! हमे हमारे इच्छित वैभव प्रदान कर कृतार्थ कीजिये।"

भूलोकके पुण्य, बल और वैभव—धर्म, अर्थ और काम—का भडार धीरे-धीरे घट चला, क्योकि इन पदार्थोके याचको और व्यय-कर्त्ताओकी मॉग बहुत बढ चली थी। उन लोगोने बडी बेरहमीसे इन पदार्थोका व्यय प्रारम्भ कर दिया था और अपने लिए अपने पौरुषसे इनका उत्पादन बिल्कुल बन्द कर दिया था। भूलोकके शेष एक तिहाई व्यक्तियोके लिए इन पदार्थोकी कमी पडने लगी। और हर्मिषकी चिन्ता बढने लगी।

हर्मिष देवके सकेतो पर भी भक्तो, सेवको और याचकोने अपनी मॉगे बन्द नही की। उन्होने कहा, "आप सर्वसमर्थ है। आपका भण्डार कभी घट सकता है? ऐसी निरादरपूर्ण बातकी हम कल्पना भी नही कर सकते। हम आपके अत्यन्त भक्त है। हम जो चाहेगे, आपसे ही लेगे, हमे और कुछ करनेकी आवश्यकता नही। आपकी सर्व-समर्थता और सर्व-सम्पन्नतामे सन्देह करके हम अपने भक्त पदको और आपके भगवन्त पदको कभी नही लजायेगे।"

हर्मिष देव किसी याचकको खाली नही लौटा सकते थे । धीरे धीरे पृथ्वीके तीनो पदार्थोका भण्डार रीता होने पर आ गया । हर्मिषने दूसरे लोकोके भडारपतियोसे ऋण रूपमे कुछ पदार्थ माँगे पर उन्होने भू-वासियोकी प्रवृत्तिको देखकर ऋण देनेसे इन्कार कर दिया । उन्होने सहानुभूतिपूर्ण खेदके साथ कहा कि इस ऋणकी अदायगीकी उन्हे कोई आशा नही और ऐसे जोखिमका काम वे नही कर सकते ।

हर्मिष देवका शरीर तेजीसे आते हुए सकटकी चिन्तामे घुलने लगा ।

उस साँझ हर्मिष देवके आश्रममे, पूजा-वेलामे भक्तो, सेवको और याचकोकी भीड लगी थी । लोग अपनी-अपनी प्रार्थनाएँ उपस्थित कर रहे थे । हर्मिषका मुख आज विशेष रूपसे म्लान था ।

सहसा उस भरी सभामे हर्मिषके बालपनके साथी मित्रायुने प्रवेश किया । वह वर्षों बाद आज अपने गाँवको लौटा था ।

"भगवान् हर्मिष देवका मुख आज इतना चिन्तित, उदास क्यो है—मै इसका कारण जान सकता हूँ ?" मित्रायुने हर्मिष देवसे सीधा प्रश्न किया ।

"मेरी चिन्ताकी बात क्या पूछते हो मित्रायु ! आज तुम बहुत दिन बाद आये हो । तुम भी अपनी अभीष्ट वस्तुएँ माँगो—पुण्य, बल, वैभव ।"

"मैने बचपनसे आपसे कभी कोई वस्तु नही माँगी । मैने तो सखा भाव प्रारम्भसे निभाया है, यही अब भी मेरे मनमे है । आपके पुण्य, बल और वैभवका भण्डार अक्षय, अनन्त है तो हुआ करे, मुझे उसमे से कुछ लेनेका कभी भी ध्यान नही है । मित्रके नाते मै तो स्वय अपना ही पुण्य, बल और वैभव—वह कितना ही नगण्य हो—आपकी भेट करता हूँ । कहते-कहते मित्रायुने अजलि बाँध कर अपने दोनो हाथ उसकी ओर बढा दिये ।

हर्मिषका चेहरा दमक उठा, वहाँके वातावरणमे एक बिजली सी दहक उठी । पुण्य, बल और वैभवकी तीन पतली धाराएँ भूलोकके पदार्थ भडारोमे जा मिली और उनकी प्रगतिसे सारे लोकोमे एक सिहरन-सी

दौड गई। दूसरे लोगोने भी तीनो पदार्थोकी मोटी-मोटी धाराएँ भूलोकके भडारमे प्रवाहित कर दी।

मनुष्योने देव-ऋणकी अदायगी प्रारम्भ कर दी, यह समाचार सूक्ष्म विद्युत्-गतिसे उन सबके पास पहुँच गया था और लोकहितके लिए अब उन्हे अपने-अपने कोषोसे ऋण देनेमे कोई आशका नही रह गई थी।

भूलोकका रीता पदार्थ-भडार भरकर अन्तरिक्षमे उमड चला। सारी प्रकृति आह्लादसे थिरक उठी। मानव पुत्रोमेसे एक और देव-वर्ग तक उठ आया था।

पृथ्वीकी गति-विधि सुधर गई। देवगुरु भगवान् बृहस्पतिने मित्रायुका हर्मिषके उत्तराधिकारीके रूपमे तिलक कर दिया।

अनुमान है कि जब मित्रायु भूलोकके हर्मिषपदका भार सम्हालेगा तब उसके भक्त मित्र-रूपमे ही उसकी पूजा करेगे।
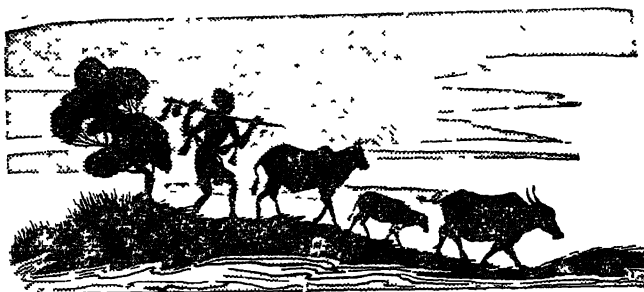
साहित्यिक भूतसे भेंट

जमना तटके जिस ग्राम-आश्रममे मै रहता हूँ वहाँसे सिकन्दराका पुराना रेलवे स्टेशन ३ मील दूर है। गाडी पहले कभी इस छोटे-से रेलवे स्टेशनपर रुकती थी, पर आजकल यह टूटा हुआ है। शामकी सैरके लिए मै उस ओर कभी नही जाता हूँ, पर उस दिन उधर ही निकल गया था।

घूमता हुआ जिस समय मै रेलकी पटरीके पास पहुँचा, दिल्लीकी ओर-से पजाब मेल आकर उसी समय मेरे समीप ही रुक गया। सिकन्दराका स्टेशन वहाँसे करीब डेड फर्लांग आगे था। जो डिब्बा मेरे सामने रुका, उसमेसे एक हृष्ट पुष्ट युवक नीचे उतरा और गाडी चल दी। युवकके हाथमे केवल एक चमडेकी अटैची थी।

"क्यो मिस्टर", युवकने मेरे पास पहुँचकर बडी बेतकल्लुफीसे मेरे कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "आप पढे-लिखे आदमी मालूम पडते है, फिर भी जान पडता है, पासके ही किसी गाँवमे रहते है।"

मैने अपने गाँवका नाम उसे बता दिया।

"वही मुझे चलना है। आपके गाँवमे कुछ भूत भी रहते है?"

"भूत!" मैने कुछ चौककर युवकको पाँवसे सिर तक देखा, "शायद कुछ रहते हो। मेरा तो किसीसे परिचय नही है। आप उन्हीमेसे किसीके रिश्तेदार जान पडते है।"

युवक खिलखिलाकर हँस पडा।

"मै समझ रहा हूँ, आप ही मिस्टर रावी है, जो पत्र-पत्रिकाओमे कुछ लेख-वेख, कहानियाँ-वहानियाँ लिखा करते है।"

"जी हाँ" मैने सहजभावसे कहा, यद्यपि उनके ये शब्द मुझे अशिष्ट और निरादरपूर्ण-से लगे।

"तब आपने हिन्दी काफी पढी ही होगी ।"

"मैंने हिन्दी नही पढी तो क्या आपने मेरे लेख-वेख, कहानियाँ-वहानियाँ, बगला या तामिल भाषाकी पत्र-पत्रिकाओमे देखी है ?" मैंने इस पढे-लिखे और सभ्य दीखनेवाले युवकके मूर्खतापूर्ण प्रश्नसे कुछ खीझ कर कहा ।

"हिन्दी जाननेवाले लोग जानते है कि भूत शब्दका अर्थ होता है, जीव, प्राणी । भाषा टीकावाली गीतामे लिखा है—कृष्ण भगवान् कहते हैं कि जो मुझे सब भूतोमे विद्यमान देखता है. .आदि-आदि । इस प्रकार सब मनुष्य भी भूत ही हुए । तब फिर आपने यह कैसे कहा कि आपके गाँवमे कोई भूत नही है या आपका किसीसे परिचय नही है ?"

"मै समझा । अबकी बार मैंने ही अपने उस साथीकी कमरको हाथसे लपेटते हुए कहा 'आप कोई साहित्यिक भूत है । अहोभाग्य कि आपके दर्शन हुए ।"

"अब आप समझे ! मै एक साहित्यिक ही भूत हूँ और एक साहित्यिक ही भूतके—यानी आपके—ही पास आया हूँ, एक साहित्यिक ही कामसे ।"

"आजका दिन मेरा अच्छा है । आपने मुझे चिट्ठी लिखी होती, मै स्टेशन पर आपको लेनेका कुछ प्रबन्ध करता । खैर, पहले अपना परिचय तो दीजिए ।" मैंने उत्सुक होकर कहा ।

"स्टेशन पर लेनेके लिए चिट्ठी क्यो लिखता जब कि गाडीको साढे पाँच घटे लेट आना था और आगरा स्टेशनसे ढाई मील पहले इस जगह रुकना था, जहाँ आपकी हाज़िरीका प्रबन्ध था ?"

वह रुका । मैंने पहली बार उसे कुछ सदिग्ध, आश्चर्यकी दृष्टिसे देखा । "और परिचय देनेसे पहले" वह कहने लगा "परिचयसे पहले मुझे आपसे उस आवश्यक कामकी बात कहनी है, जिसके लिए मै आया हूँ ।"

"ऐसी मुसीबतकी बात है तो कहिए, पहले कामकी ही बात कह डालिए।" मैने कहा।

"मै आपको कहानी लिखनेके लिए एक ज़रूरी प्लाट देने आया हूँ।"

"तब तो आप सचमुच एक ऐसी बडी मुसीबतके मारे आये है कि अपना नाम तक बतानेका आपमे दम नही है। आपने खुद ही उस प्लाट पर कहानी क्यो नही लिख ली?" मै उसका किसी-न-किसी तरह कुछ मजाक बनाना चाहता था।

वह मुसकराया। 'मै भी लेखक हूँ, यह आपने ठीक ही समझा। लेकिन अगर मै अपने प्लाटो पर कहानियाँ स्वय लिखा करूँ तो दिन भरमे एक कहानीसे अधिक नही लिख सकता। मेरा नियम यह है कि मै दिन भरमे कम-से-कम बीस प्लाट सोचता हूँ और उन्हे बीस लेखकोको दे देता हूँ। मै एक 'सीनियर ग्रेड' का लेखक हूँ।"

युवकने मेरी ओर एक पैनी दृष्टि डाली। वह गम्भीर हो उठा था। मुझे भी गम्भीर होना पडा।

"पहले आप यह बताइए कि जो कुछ आप लिखते है उसका कुछ उद्देश्य भी, और उसके बीच कोई निश्चित सिलसिला भी होता है।" उसने पूछा।

"यह प्रश्न ज़रा टेढा है। इसकी छान-बीन तो घर बैठकर इतमीनान-से बात करने पर होगी।"

"पर बैठने और इतमीनान मनानेकी फुर्सत आपके पास हो सकती है, और आपके साथ छान-बीन करनेसे नतीजा भी कठिनाईसे ही कुछ निकल सकता है इसलिए मुझे स्पष्ट शब्दोमे ही अपनी बात कह देनी चाहिए। उसने कहा।

"कहिए, कहिए मै तो उसका स्वागत करता हूँ।"

"अपने लेखोमे आप हमेशा यह उद्देश्य सामने रखिए कि आपको पाठकोके सोचनेके लिए कोई न कोई अधिक अच्छी बात, अनुभव करनेके

लिए कोई न कोई अधिक अच्छी भावना आपको देनी है और इसका अन्तिम ध्येय यह है कि उन्हे कोई न कोई अधिक अच्छा काम करनेके लिए प्रेरित करना है—वह काम बेहतरीकी किसी भी दिशा, किसी भी क्षेत्र और किसी भी विषयका काम हो सकता है।"

"मेरा यही उद्देश्य रहता है और प्राय सभी भले-मानस लेखकोका यही उद्देश्य रहता है।" मैने अप्रभावित भावसे कहा।

"नही रहता भाई साहब, प्राय नही रहता।" उसने उत्तेजित स्वरमे कहा।

"आपको कोई अच्छी या सरस बात सूझती है, आप उसे दिलचस्प शैलीमे लिख डालते है, स्वान्त सुखाय या पाठकोकी वाहवाहीके लिए, और अखबार वालोसे पैसा कमानेके लिए उसे छपने भेज देते है। यह ऐसा ही है जैसे कारीगर खूबसूरत गुब्बारे बनाये, उन पर सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाये, अच्छे-अच्छे उपदेश और कारआमद नुस्खे भी उन पर लिख दे और फिर उन्हे अपने सिरके ऊपर हवामे यो ही छोड दे। वे गुब्बारे जिन कुछ लोगोके हाथ लगेगे वे उनसे कुछ लाभ तो अवश्य उठाएगे, पर उस कारीगरकी कारीगरी बहुत कुछ उद्देश्यहीन ही कही जायगी। आप लिखते है, लेकिन लिखते समय आप अपने पाठकोको और पाठको पर अभीष्ट प्रभावको भूले रहते है।"

"किसी एक विचारधाराके हिसाबसे आपका यह दृष्टिकोण ठीक हो सकता है, लेकिन आम तौर पर कलाका तकाज़ा तो यही है कि जो कुछ लिखा जाय उसके भावमे ही इतना तन्मय हो जाया जाय कि पाठको और प्रभावोकी ओर ध्यानका अवकाश न रहे," मैने कहा।

"यह ठीक है" उसका स्वर विशेष कोमल हो गया, "लेकिन जिस एक विचारधारामे चलनेवाले आप और मै दोनो है उसके अनुसार हमे लिखते समय पाठको और उन पर अभीष्ट प्रभावो पर बराबर दृष्टि रखनी चाहिए। आपके लिखे हुए विचार कहाँ, किस वेगसे, किन लोगोपर

जाकर क्या काम करते है—इसका पूरा चित्र आपके सामने रहना चाहिए। ऐसा करनेसे आपके विचारोको आपकी पूरी प्रेरक प्राण शक्ति मिलेगी। पाठ्य विचारोके मुकाबले पाठकोका महत्त्व आपके लिए अधिक होना चाहिए।"

"आपका यह दृष्टिकोण मेरे लिए विचारणीय है इसमे मुझे बहुत कुछ तथ्य दीखता है।" मैने स्वीकार किया।

"आप चमत्कारोमे विश्वास करते है।" अचानक उसने नया प्रश्न उठाया।

"अगर आप कोई दिखा सके।"

"यह तरस खानेकी बात है कि आमतौर पर लोग चमत्कारोमे विश्वास नही करते, और इससे भी अधिक तरस खानेकी बात यह है कि बहुतसे लोग उनमे विश्वास करते है।" उसने गम्भीर भावसे कहा।

"आपका मतलब ?"

"आम तौर पर लोग अपने आस-पास घटनेवाले चमत्कारोकी ओरसे आँखे बन्द किये रहते है, उन्हे देख-सुन कर भी उनकी ओर ध्यान न देते हुए उन पर विचार करनेसे कतराते है। ये लोग तरसके काबिल है लेकिन कुछ लोग ऐसे है जो चमत्कारोको देख-सुन कर उन पर मनमाने मूर्खतापूर्ण ढग पर विश्वास करते है और उन्हे अपनी समझ और शक्तिसे बाहरकी बाते समझ कर उनसे डरते है। ऐसे लोग और भी अधिक दयाके पात्र है। चमत्कार मै उसको—"

"चमत्कारकी आपकी परिभाषा क्या है ?" मै साथ ही साथ कह उठा।

"वही बता रहा हूँ। चमत्कार मै उन घटनाओको कहता हूँ जिन्हे साधारण मनुष्य अपने समझे हुए प्राकृतिक नियमो और अपनी समझ बूझ और शक्तिके बाहरकी देखता है। आमतौरपर आजकलकी सभ्यतासे भरे हुए लोगोको ऐसी बातोकी ओर ध्यान देनेकी फुर्सत नही होती। अगर

ऐसी विचित्र-सी कोई बात वे सुनते है तो उस पर पहले तो विश्वास नही करते, विश्वास करते है तो उसे किसी छिपे हाथकी चालबाज़ी या मानसिक भ्रम-रोगोके सिद्धान्तोसे हल करना चाहते है। अगर वह चालबाज़ी या 'मानसिक भ्रम-रोग' स्वय उनके या उनके किसी समीप स्वजनके पीछे पड जाता है और किसी चौकसी या दवादारूसे काबू नही आता तब उनके हाथ-पैर फूल जाते है और वे अन्ध विश्वासकी ओर दौड पडते है।"

"सचमुच चमत्कार इतनी काफी सख्यामे होते रहते है कि उनकी ओर. .." मैने कुछ और निकालनेके विचारसे उत्साह दिखाया।

"किताबे पढिये—बडे-बडे विद्वान् खोजियो और वैज्ञानिकोकी किताबे। सरकारी सनदोसे प्रमाणित घटनाओकी रिपोर्टे आपको ढेरो मिलेगी। किसी बडे प्रकाशक पुस्तक विक्रेतासे इस विषयकी पुस्तकोका सूचीपत्र मँगा लीजिए। योरोपमे साइकिक रिसर्च और स्पिरिट कम्यूनियन आदि पर जो बडी-बडी सस्थाएँ काम कर रही है उनकी खोजोकी ओरसे दुनिया आँख बन्द किये न रह सकेगी।"

"हो सकता है। तो फिर चालबाज़ी और भ्रमरोग चमत्कारोका कारण नही होते?" मैने पूछा।

"होते है, शायद ७५ फीसदी मामलोमे। लेकिन शेष २५ फीसदी मामलोमे जो चमत्कारके नियम काम करते है वे भी तो नियम ही है।"

"चमत्कारके नियम! उसके भी नियम होते है?"

"होते है। तीस वर्ष पहले इस देशके एक अनपढ ग्रामीणके लिए बिना बैलोके भागनेवाली मोटर गाडी, सम्भवत हनुमानजीकी सिद्धि-द्वारा चलने वाला एक चमत्कार थी, लेकिन आपके लिए समझी-बूझी मशीन है। मेरी आजकी भेट अभी आपके लिए चमत्कार हो सकती है, लेकिन दो सौ वर्ष बाद ऐसी भेटे सहज स्वाभाविक समझी जायगी।"

'आजकी आपकी भेटमे मेरे लिए चमत्कारकी क्या बात है ?' मैंने कुछ चौककर सिरसे पैर तक उसे देखते हुए कहा ।

"आपकी आँखे अभी नये पैदा हुए बच्चेकी आँखो-जैसी है, चीजो पर टिकना नही जानती । पाँच मिनट और सब्र कीजिए । आपकी सम्पुटिका कहाँ है ?"

"ओह—यह रही । मैंने जेबसे अपनी नोटबुक हाथमे ले ली ।"

"चमत्कारपूर्ण घटनाएँ भी जीवनकी घटनाओका एक विभाग है ।" युवकने मेरी नोटबुक अपने हाथमे लेते हुए कहा, "चमत्कार जीवनका एक अनिवार्य अग है, उसका बाह्य जीवन पर प्रभाव भी अनिवार्य और अनवरत है। वास्तवमे सारा जीवन ही एक गुप्त चमत्कार है । आप प्रकट चमत्कारकी ओर भी हाथ बढाये । अपनी साहित्यिक प्रवृत्तियोका एक भाग इसे भी बनाये, आपमे उसके लिए उपयुक्त माद्दा है । साहित्यका यह भी एक आवश्यक अग है ।"

'आप चाहते है कि मै भूत-प्रेत आदि पर साहित्य पढ़ूँ और लिखूँ !' मैंने कहा ।

मेरे मित्रका अट्टहास गूँज उठा ।

'उसके लिए काफी मजबूत दिल आपका नही है । वह छिछली चीज है । वैसे कोई बुरी चीज़ भी नही है, यद्यपि झझट और गिरावटके मौके उसमे बहुत है । आपके लिए मेरा मतलब ऐसी घटनाओ और मनुष्यकी छिपी हुई शक्तियोके अध्ययन और लेखनसे है जिनसे मनुष्यकी सात्त्विक जिज्ञासा, विश्वास और खोजकी प्रवृत्तियाँ बढे । आप आश्चर्य करना सीखिये और सिखाइए । जो आश्चर्य नही करता, उसके प्रति जिज्ञासा नही रखता और उससे आँख चुराना चाहता है, वह बिल्कुल अधूरा मनुष्य है । महान् लेखक कारलाइलने कहा है, 'जो मनुष्य आश्चर्य नही कर सकता जो आश्चर्य करनेका आदी नही है वह भले ही अगणित रौयल सोसायटियोका सभापति हो और सभी प्रयोगशालाओ और अनु-

सन्धानशालाओका सार और निष्कर्ष उसीके सिरमे भरा हो, वह ऐनककी ऐसी जोडी है जिसके पीछे कोई आख नही है ।' कहते हुए उसने मेरी नोटबुक मे कारलाइल का यह कथन लिख भी दिया—

"The man who cannot wonder, who does not habitually wonder (and worship) were he president of innumerable-Royal Societies and carried.. .the epitome of all Laboratories and observatories with their result, in his single head—is but a pair of spectacles behind which there is no eye"

—Carlyle in Sartor Resartus

"साधारणतया चमत्कारोकी आधारशिला चौथी नाप—फोर्थ डाइमेशन—होती है । इस विज्ञानके जाननेवाले इस नापका भी प्रयोग करते है । इसी नापके मार्गसे वे प्राय आते-जाते और वस्तुओको लाते ले जाते है । समयको ही जो लोग चौथी नाप कहते है वे गलती करते है । चमत्कार विज्ञानके विद्वान् अन्वेषक जैकब वानग्रेनके शब्दोमे जादू या चमत्कार कमवेश असाधारण बातोको पूर्णतया स्वाभाविक ढगसे, लेकिन सूक्ष्म और साधारणतया अपरिचित साधनो-द्वारा, कर दिखलानेकी विद्या और कला है । जादू चमत्कारके प्रयोग जब स्वार्थसिद्धिके लिए, घृणा और प्रतिहिसाके लिए, हानिकर प्रकृतिवाले व्यक्तियोकी सहायताके लिए और दूसरोको क्षति पहुँचानेके लिए किये जाते है तब वह दुष्काम कुत्सित या 'काला जादू' कहलाता है । जब इसका प्रयोग बिना किसी पुरस्कारकी कामनाके सहायता, प्रोत्साहन और साथियोकी रक्षाके लिए किया जाता है तो वह शुभ काम या 'श्वेत जादू' कहलाता है ।" कहकर इस विद्वान्के भी ये शब्द उसने मेरी डायरीमे लिख दिये—

"Magic is the science and art of accomplishing more or less remarkable things in a perfectly natu-

ral way, but with uncommon and subtle means. Magic is called malevolent or 'black' when performed for mercenary purposes, for spite and revenge, to help the criminally inclined, and to hurt others. It is called beneficent or 'white' when it is done gratuitously, to help, to encourage and to protect fellow-beings." —Jacob Bonngren

जिस पेडके सहारे खडे होकर हमारा यह लिखना-पढना हो रहा था, मैने अचानक आश्चर्यके साथ देखा, वह रेलवे लाइनसे अधिक-से-अधिक एक फ़र्लांग दूर उसी स्थानके पास था जहाँ मेरा साथी रेलसे उतरा था।

"हाँ, यह भी एक चमत्कार है कि डेढ घण्टेकी यात्राके बाद हम दोनो वहीके वही है" युवकने मुसकराते हुए कहा, "आपके घरके कितने पास तक पहुँचकर हम लोग कब इधरको लौट पडे, आपने बताया भी नही!"

सचमुच मुझे ध्यान नही आया कि कब हम लोग वापस इस ओरको लौट पडे। इसका मुझे बहुत-कुछ दुःख भी हुआ।

"आपकी बातोमे मै ऐसा कुछ भूल गया! कोई बात नही, दो-तीन मीलकी अतिरिक्त सैर ही सही, चलिये।" मैने उसका हाथ पकडकर घर की ओर मुडते हुए कहा।

"मुझे बहुत जल्द वापस जाना है। आपने मुझे राह पर वापस होते समय रोका नही क्या इसे आप चमत्कार नही मानेगे।"

इसी समय रेलगाडीके आगराकी ओरसे आनेकी आवाज़ सुनाई देने लगी।

"जब मेरा ध्यान किसी बातमे लग जाता है तो इस तरहके चमत्कार ढेरो घट जाते है।" मैने उपेक्षापूर्वक कहा।

"ख़ैर, इसके पहले आपने आज और कोई चमत्कार देखा था?" उसने पूछा।

"मैने नही देखा ।"

"वही तो मै कहता हूँ, आपकी आँखे अभी चीजो पर ठहरना नही जानती । आम दुनियावालोका यही हाल है ।"

हमारे समीप पहुँचकर दिल्लीकी ओर जानेवाली गाडी धीमी होने लगी ।

"मेरी गाडी आ पहुँची है । पिछली बार मुझे उतारनेके लिए गाडी का इस स्थान पर रुकना आपने चमत्कार नही माना तो अबकी बार इस गाडीको मुझे लेनेके लिए रुकना तो आप चमत्कार मानेगे ?"

मै कुछ विचलित हुआ ।

"इसी जी० आई० पी० मे मेरे एक प्रतिभाशाली मित्र है । उनकी इस लाइनके प्राय सभी रेलवे गार्डो और ड्राइवरोसे मित्रता है क्योकि वह उनमेसे किसीको भी कभी चाय पिलाये विना नही छोडते । इस तरहके चमत्कार मेरे वह मित्र दो-एक बार करके मुझे दिखा चुके है । उनके लिए पहलेसे सूचना होने पर ये कार्यकर्ता किसी भी जगह, किसी बहाने, मिनट भरको गाडी रोक सकते है ।"

"तब मुझे भय है कि आप कभी भी किसी चमत्कार पर विश्वास नही करेगे ।"

"देखूँगा तो करूँगा ही ।" मैने कहा ।

"मै कृतज्ञ हूँगा ।" युवकने कहा और—

उसका हाथ मेरे हाथसे गायब हो गया । मैने चारो ओर घूमकर देखा, उसका कही भी पता नही था और रेलगाडी रुकनेका इरादा छोड कर अपनी पटरीपर चली जा रही थी ।

'साहित्यिक भूतसे भेट'—मैने अपने अगले लेखका नाम निश्चित किया ।

गोलमेज परिषद्

यह ईसाकी चवालीसवी शताब्दी है।

कला और विज्ञानके विकाससे ससार बहुत कुछ सुखी और समृद्ध है। पृथ्वी, जल, अग्नि और वायुकी कुछ ऐसी चेतनापूर्ण शक्तियोका विज्ञान-ने पता लगा लिया है, जिन्हे प्राचीन पौराणिक कल्पनाके बहुत कुछ अनुकूल 'देवता' का नाम दिया जा सकता है। प्राचीन पौराणिक नामावलिके अनुसार पृथ्वी तत्त्वके देवताका नाम वैश्रवण, जलके अधिपतिका नाम विरूधक, अग्निके अधिष्ठाताका विरूपाक्ष और वायुके सचालक शासक का नाम धृतराष्ट्र विज्ञानने स्वीकार कर लिया है। पृथ्वीके प्रबन्ध और लोकहितके लिए इन तत्त्वोका सचालन इनके अधिष्ठाता उपर्युक्त चार देवताओ या दिग्पालोके हाथमे अभी तक है।

मनुष्य जातिने विद्या और विज्ञानमे इतनी उन्नति कर ली है कि वह अपने लिए अब इन तत्त्वोका प्रबन्ध अपने हाथमे लेना चाहती है। उसकी यह माँग किसी हद तक समुचित भी है।

भूतल पर जल वर्षाका वितरण ठीक नही है। खेतिहर प्रदेशोमे प्राय ठीक समय पर यथेष्ट वर्षा नही होती और कभी-कभी अतिवृष्टिसे उन्हे भारी हानि उठानी पडती है। बस्तियोसे दूर दुर्गम वनोमे मेघोका अधिकाश जल व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। अतएव वायुके सचालनका प्रबन्ध देवताओको मनुष्यके हाथ हस्तान्तरित कर देना चाहिए। मनुष्य ही जब जैसा ठीक समझेंगे वायुका सचालन कर उसे आवश्यकतानुसार ठडा या गर्म रखकर समुद्रोसे मेघ तैयार करेंगे और जहाँ आवश्यक समझेंगे, उन्हे ले जाकर बरसायेंगे। इस प्रकारका सघर्ष वायुके अधिपति देवता धृतराष्ट्र और मनुष्योकी प्रतिनिधि सस्थाके बीच पिछले कुछ वर्षोसे चल

रहा था। वायुराज धृतराष्ट्रका कहना था कि वायु-सत्ताको मनुष्योके हाथ हस्तान्तरित करना ही उनका अन्तिम उद्देश्य है, लेकिन मनुष्य जाति दूरदर्शितामे अभी इतनी विकसित नही है। उसे अभी एक-आध शताब्दी और ठहर कर इस उत्तरदायित्वको अपने ऊपर लेना चाहिए।

लेकिन मनुष्योको इस उत्तरसे सन्तोष नही था। उन्होने इस अधिकार-की प्राप्तिके लिए आन्दोलन उठा रखा था और उसी आन्दोलनके बढते हुए दबावका यह परिणाम था कि देवताओ और मनुष्योकी एक गोलमेज परिषद सयोजित की गई थी।

गोलमेज परिषदकी सभा जुडी हुई थी।

"वायु-सचालन विभागका काम हमारे हाथमे आ जाने पर हमारा कृषि विभागका वार्षिक व्यय चौरासी खरब डालरसे घट कर केवल अड-तालीस अरब डालर रह जायगा। हमारे समय और शक्तिकी बचत इसी अनुपातसे समझी जा सकती है। नहरो और बाँधोका खर्च ९७ प्रतिशत घट जायगा। भूतलकी खेतिहर भूमिमे हमे ३३ प्रतिशत वृद्धि-की आवश्यकता है। आगामी दस वर्षोंमे हम सुगमतापूर्वक ऐसा कर लेगे। हमे आश्चर्य है कि हमारी ये आवश्यकताएँ वायुके बुद्धिमान देवता धृतराष्ट्रकी दृष्टिसे अब तक कैसे छिपी हुई है। लोकहितके लिए वायुके सचालनमे देवराज धृतराष्ट्रकी पूरी दिलचस्पी नही है, या इसका काम उनके वयोवृद्ध हाथोसे कुछ बाहर हो चला है, ऐसा कहनेकी धृष्टता तो मै नही कर सकता। स्वतन्त्रता और सद्भावनाके इस युगमे मै देवताओसे फिर एक बार बलपूर्वक अनुरोध करता हूँ कि वे मनुष्योके प्रति अपनी उदार सद्भावनाका परिचय दे और उनकी इस सामयिक एव समुचित मागको स्वीकार करे।" मानव पक्षके एक अधिकारी वक्ताने बोलते हुए कहा।

"भूतलके कुछ प्रदेशोमे हवाएँ इतनी ठडी चलती है कि वहाँ हमारा कार्य करना दुस्तर हो जाता है और कुछ प्रदेश गर्म लू से ऐसे झुलसते रहते

है कि वहाँ रहना ही कठिन हो जाता है। ग्रीष्म ऋतुकी तपती दोपहरियोमे अक्सर समय हो जाने पर भी हफ्तो तक आकाशमे बादलोका नाम नही होता और लोगोका घरसे निकलना एक दु सह तपस्या हो जाती है।' अपने हाथमे इस विभागको लेकर हम ऐसी गडबडी कदापि न रहने देगे।' मानवदलके एक दूसरे वक्ताने कहा।

"ऐसी गडबडियाँ आप नही रहने देगे और साथ ही इस बातका भी प्रबन्ध करेगे कि वायु-सचालन विभागके मान्यमन्त्रियो और उनके बेटो-भतीजोके सिरो पर असह्य धूपके समय बादलके टुकडे छाता बनकर उसके साथ-साथ चला करे।" देवता-दलके एक सदस्यने बीचमे ही कटाक्षपूर्ण परिहास किया।

देव-दलकी ओरसे ठहाकेकी एक हँसी परिषद् भवनमे गूँज उठी।

देवताओ और मनुष्योके बीच इस कथित मैत्रीपूर्ण सम्मेलनमे अविश्वास और असन्तोषकी एक स्पष्ट भावना जाग उठी। दोनो पक्षोकी दलीलोमे बहुत कुछ गरमाहट आ गई। मानवदलका असन्तोष देख कर अन्तमे देव-दलके प्रमुखने मनुष्योके ही पक्षमे अपनी सम्मति परिषदके सामने रखी।

"मनुष्यो और देवताओके बीच विश्वास और सद्भावना बनाय रखनेके लिए मै बडेसे बडा मूल्य देनेको तैयार हूँ। हम चाहते थे कि मानव जातिकी वायुविभाग सम्बन्धी सेवा कुछ दिन और अपने हाथमे रखकर मनुष्योको इसकी सम्हालके योग्य हो जाने देते, लेकिन जबकि हमारे मानव-बन्धु इसमे हमारे ही किसी स्वार्थका सन्देह करते है तो हमे इस विभागको अपने हाथमे रखनेकी कोई इच्छा नही है। अगले सूर्योदयके समयसे हम यह विभाग मनुष्योको सौपनेके लिए प्रस्तुत है। मेरा विश्वास है कि मेरे देव-स्वजनोको अब इसमे कोई आपत्ति नही है।" वायुके अधिपति पूर्वीय दिग्पाल देवराज धृतराष्ट्रकी ओर आशयपूर्ण दृष्टि से देखते हुए देव दलके प्रमुखने कहा।

"हमे कोई आपत्ति नही होगी।" धृतराष्ट्रने कहा, "हम अगले सूर्योदयके समयसे अपनी वायुसचालिनी सेनाको वापस ले लेगे। हमारा छोटे-से-छोटा कर्मचारी भी भूतलकी वायुको हाथ नही लगायगा। मानव-दल सहर्ष इसका निजी प्रबन्ध कर ले।"

मानव प्रतिनिधियोके चेहरे इसे सुनते ही फीके पड गये।

"इस कथनसे आपका गहरा असन्तोष प्रकट होता है। वायु सचालनके लिए हम उपर्युक्त मनुष्योकी सेना भला कहाँसे लायेगे? वायु-सचालन-का सारा काम आपकी पवन-सेना पूर्ववत् करती रहेगी, उसे केवल हमारी आवश्यकताओके अनुसार हमारे आदेशो पर काम करना होगा। देव-ताओके अनिवार्य सहयोगका मूल्य तो हम नही घटाना चाहते। उसके बिना हमारा काम भी तो नही चल सकता।" मानवदलके प्रमुखने अनु-नयपूर्ण स्वरमे कहा।

पवनकुमारोकी सेना पूर्ववत् वायुका सचालन करेगी, उसे अगले सूर्योदयके समयसे देवराज धृतराष्ट्रकी जगह मानवदलके प्रधान वायुमत्री का आदेश मानना होगा—इसी निश्चयके साथ गोलमेज परिषदकी कार्य-वाही समाप्त हुई।

अपनी विजयके उपलक्षमे मनुष्योने उस रात सारे भूतल पर बडी खुशियाँ मनाई।

अगले दिन सूर्योदयके समयसे सारे भूतलका वातावरण ही बदल गया। गर्म प्रदेशोमे शीतल, मन्द, सुवासित हवाये वहने लगी, ठण्डे प्रदेशोकी वायु-मे कुछ गरमाहट आ गई। बरफानी प्रदेशोमे वायुका प्रवाह लगभग बन्द करके उन्हे सुखद बना दिया गया। मेघोके दल तपती प्यासी धरती पर बरसनेके लिए उमड चले। आवश्यक दिशाओमे उनका रुख सम्हाल लिया गया। वायु-द्वारा सचालित शीत, उष्णता और तरलताका कही भी अभाव नही रह गया, कही भी अपव्यय नही रह गया। सुख-स्पर्शी मनोनुकूल वातावरणमे सारा ससार थिरक उठा।

मानव जातिको एक नया स्वराज्य मिल गया था ।

दिन-रात, सप्ताहो और महीनोके पीछे-पीछे वर्ष पर वर्ष बीतने लगे । धरती हरियालियोसे महक उठी । धन-धान्यकी समृद्धिके साथ-साथ सारा भूतल एक सुखकर उपवन बन गया ।

विश्वराष्ट्रकी अदालतमे दो राष्ट्रोके बीच सघर्षका एक मामला प्रस्तुत हुआ ।

उनमेसे एकने दूसरे पर किसी व्यावसायिक मतभेदके कारण चढाई कर दी ।

विश्वराष्ट्रकी अदालतने आक्रमणकारी राष्ट्रको अपनी सेनाएँ दूसरे राष्ट्रकी सीमासे तुरन्त हटा लेनेकी आज्ञा दी, किन्तु इस आज्ञाकी कोई सुनवाई न हुई । विवश हो विश्व-अदालतने बल प्रयोगका आश्रय लिया ।

अणुवम, ताप-किरण, विष-किरण, राहुकिरण, शाप-किरण आदि घातक साधनोका प्रयोग विश्व-अदालतने विनाश-कार्योके लिए स्वय ही वर्जित मान रखा था, किन्तु पवन शक्तिके प्रयोगके सम्बन्धमे अभी तक कोई वैसा वर्जनात्मक नियम नही बना था ।

"पवन-शक्तिका प्रयोग करके क्यो न इस अत्याचारको एकदम ठडा कर दिया जाय ?" विश्व-अदालतके एक सदस्यने अपनी नई सूझ प्रस्तुत की, "आक्रमणकारी सेनाओको उनके मोर्चोसे उडाकर देखते ही देखते समुद्रके गर्भमे सुलाया जा सकता है ।"

थोडेसे वाद-विवादके बाद अदालत-समितिने इस सुझावको प्रयोगके लिए स्वीकार कर लिया ।

आँधियोके एक भयकर तूफानने आक्रमणकारी सेनाओको समुद्रमे ला डुबाया ।

लेकिन इसमे आक्रमणकारी राष्ट्रसे अधिक आक्रान्त राष्ट्रकी क्षति हुई । उसके अनेक नगर धरतीमे लोट गये, लाखोकी धन-जनकी हानि

हो गई । नदियोका पानी बाँधोको तोड कर नगरोको डुबा बैठा । वायु-के आक्रमणका क्षेत्र भी तो वह अभागा आक्रान्त देश ही था ।

"विश्व-अदालतने न्याय नही किया । रक्षाकी ओटमे हमारे प्रति वैमनस्यका बीज अदालत-समितिमे कही न कही अवश्य उग आया है ।" आक्रान्त देशके निवासियोकी पुकार उठी ।

नियमानुसार विश्व-अदालतको जॉच समिति नियुक्त करनी पडी और जॉचका खुला विवरण ससारके सामने रखना पडा । इस दुर्घटनामे सचमुच एक षड्यन्त्रका हाथ पकडा गया । वायु-सचालन विभागके एक ऊँचे कार्यकर्ताने, जो सयोगवश आक्रमणकारी देशका ही एक नागरिक था, वायुसचालनकी दिशा और दबावमे पक्षपातसे काम लिया था, नही तो दूसरे सब कुछको बचाकर बडी आसानीसे केवल आक्रमणकारी सेनाओको ही वायुबलका लक्ष्य बनाया जा सकता था । और इस कार्यके लिए इस कार्यकर्त्ताकी नियुक्ति आक्रमणकारी देशके वायु-विभाग सम्बन्धी मन्त्रीने कुछ भीतरी चाल चल कर इस प्रकार करा दी थी कि दूसरे देशोके मन्त्रियोका ध्यान इस ओर नही आ पाया था ।

वायु विभागकी सीटोके बटवारेमे सशोधनका प्रश्न विश्व-अदालतमे उठ खडा हुआ ।

विगत सघर्षके फलस्वरूप ससारके अधिकाश राष्ट्र दो पक्षोमे बँट गये और उनके बीच तनातनी भयकर रूप धारण करने लगी ।

विश्व-अदालतके भवनमे उस समय सभा जुडी थी और मामला इतना उलझ गया था कि वायु-सचालनकी सत्ताको फिरसे देवताओके हाथोमे लौटा देनेका प्रस्ताव एक सदस्यने उपस्थित कर दिया था ।

इस प्रश्न पर कुछ निर्णय करनेके लिए देवताओ और मनुष्योकी एक और गोलमेज परिषद बुलाई जाय इसी बात पर विचार हो रहा था । अदालतके कुछ सदस्योका अनुमान था कि शायद वायु सत्ताको अपने हाथ-

मे वापस लिए बिना देवता लोग मनुष्योके इस झगडेका कोई हल बता कर उसमे कोई सहयोग दे सकते है ।

अचानक अदालत-भवनके भीतरके सारे वातावरणसे वायु बाहर खिच गई——हवाके अभावमे लोगोका दम घुटने लगा ।

किसी स्वार्थी देशके निवासी वायु इजीनियरने कोई शरारत की है, लोगोको समझते देर न लगी । वे सब अदालत भवनसे निकलकर बाहर भागने ही को थे कि वायुके एक प्राण-प्रद झोकेके साथ-साथ लोगोने अदालत-भवनमे वायु देवता धृतराष्ट्रको उपस्थित देखा ।

"सचमुच वह किसी स्वार्थी, सकुचित-हृदय वायु इजीनियरकी शरारत ही थी । गोलमेज परिषदके जुडने तक आप लोगोका जीना असम्भव देखकर मैने स्वय वायुसचालनका कार्य एक दम अपने ऊपर वापस ले लिया है । विद्या और विज्ञानकी उन्नति ही शक्तिको सम्हालनेके लिए पर्याप्त नही है, उसके लिए मनुष्य जातिमे निस्वार्थता और आध्यात्मिक बुद्धिके जागनेकी भी आप लोगोको प्रतीक्षा करनी पडेगी ।" वायुराज धृतराष्ट्र कह रहे थे ।

शासकोंका उपनिवेश

महाराज मनुस्वान्के शासनकालमे मगल-ग्रहका साम्राज्य बहुत समृद्ध था। उस समय उस ग्रहकी सस्कृति और कला उच्च श्रेणी पर पहुँची हुई थी।

ग्रहके नये खोजे हुए एक द्वीप पर साम्राज्यका एक नया उपनिवेश बसानेके लिए महाराजको ऐसे प्रबन्धको, शासन-अधिकारियो, शिक्षको और साधारण नागरिकोकी आवश्यकता थी जो उस नये उपनिवेशमे बसनेके लिए तैयार हो। इसके लिए सारे राज्यमे यह घोषणा कर दी गई कि जो लोग नये उपनिवेशमे जाकर बसनेके लिए तैयार हो वे राजकीय उपनिवेश-विभागको अपने आवेदनपत्र भेज दे और साथ ही यह भी लिखे कि वे किस हैसियतसे वहाँ जाना पसन्द करेगे।

इसी बीच महाराजने यह भी प्रबन्ध किया कि जो लोग साधारण नागरिकके रूपमे उस उपनिवेशमे जाना चाहेगे उन्हे आदर्श नागरिकताकी यथेष्ट शिक्षा वहाँ पहुँचनेवाले शिक्षक, प्रबन्धक और शासक वर्ग-द्वारा राज्यकी राजधानीमे ही, उपनिवेशमे पहुँचनेसे पहले ही दे दी जाय। इस शिक्षणके लिए अलग एक विशाल भवन भी, विद्यालय या भाषणालयके रूपमे, बनवाया गया। साथ ही, उपनिवेशके प्रथम नगरकी नीव भी डाल दी गई। इस नगरमे पहले पाँच सहस्र नागरिक-वर्गके परिवारो तथा पचास शासक-शिक्षकवर्गके परिवारोके निवासका प्रबन्ध किया गया। नगरके मध्य भागके विशेष खुले सुविधापूर्ण स्थानमे, अपेक्षा-कृत विशेष सुन्दर और विशद भवन अधिकारी वर्गके लिए बनवानेका आयोजन किया गया।

आवेदन-पत्रोके आनेकी निश्चित अवधि पूरी हो जानेपर, आये हुए

आवेदन-पत्र खोले गये। शासक-शिक्षक-वर्गके रूपमे जानेवाले पाच सहस्र व्यक्तियोके आवेदन-पत्र आये थे और साधारण नागरिकके रूपमे जानेवाले केवल पाँच व्यक्तियोके!

इसमे प्रार्थियोका कोई दोष नही था। उस राज्यके प्राय सभी निवासी शिक्षित, सुयोग्य और शासन-व्यवस्था या किसी न किसी अन्य कलामे निपुण थे।

पूर्व निश्चित प्रबन्धके अनुसार राजधानीके उस नये नागरिक विद्यालयमे नये उपनिवेशके शासक-शिक्षक-वर्ग द्वारा शासित नागरिक वर्गकी शिक्षा प्रारम्भ हो गई।

विद्यालयकी शासन-व्यवस्था और शिक्षण-प्रणालीमे विवश होकर कुछ परिवर्तन करने पडे। स्थानावकाशके अनुसार विद्यालयके शिक्षक वर्गको शिष्य-वर्गके स्थान पर और शिष्य-वर्गको शिक्षक वर्गके स्थान पर—अधिकारी वर्ग ही यहाँ शिक्षक और नागरिक वर्ग ही शिष्य वर्ग था—बैठना पडा, और चूँकि दैनिक शिक्षणके घण्टोमे पाँच सहस्र अध्यापकोके पूरे भाषण नही हो सकते थे, इसलिए शिक्षा-प्रणाली यह कर दी गई कि सभी शिक्षक अपनी-अपनी उस दिनकी शिक्षाको सूत्र रूपमे, क्रमानुसार अपने-अपने स्थानो पर खडे होकर एक ही एक वाक्यमे कहते जायें। शिष्यवर्गको यह आदेश था कि वह अपने मनोगत प्रश्न शिक्षक-समूहके सामने उपस्थित करे और शिक्षक-वर्गका यह कर्त्तव्य था कि उसमेसे जो भी व्यक्ति प्रस्तुत प्रश्नका सबसे अच्छा, अधिकार-पूर्ण उत्तर दे सके, दे।

नागरिक शिक्षणके अन्तर्गत उस विद्यालयमे पाँच विषयोकी शिक्षा दी गई। वे विषय ये थे: १—स्वास्थ्य एव स्वच्छता २—पारस्परिक सहयोग, ३—पर-अधिकार ४—व्यवस्था-पालन एव आज्ञाकारिता, ५—विकासकी दिशाएँ। पर-अधिकारके अन्तर्गत अपने पडोसीकी सुख-सुविधा और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी पूरी और सुलझी हुई शिक्षा दी गई थी, विकास-

की दिशाओके अन्तर्गत उद्योग, कृषि, व्यवसाय, दर्शन, परलोक दर्शन, विज्ञान, अन्तर्जगत् तथा अनेक ललित कलाओ एव विद्याओकी शिक्षा समाविष्ट थी।

विद्यालय बन्द करनेके पहले अन्तिम दिन महाराजने स्वय उपस्थित होकर दीक्षान्त भाषण दिया। अपने भाषणमे नये उपनिवेशके नागरिकोको अनेक उपयोगी परामर्श देनेके पश्चात् महाराजने अपनी और नागरिक वर्गकी ओरसे अधिकारी वर्गको उनकी अमूल्य शिक्षाओके लिए धन्यवाद भी दिया।

यथा-समय यह प्रवासी दल नये उपनिवेशमे जा बसा। निवास-व्यवस्थामे यहाँ भी एक अनिवार्य परिवर्तन करना पडा—प्रवासियोकी सख्याके अनुसार शासित नागरिकोको शासक अधिकारियोके निवास-गृहोमे और अधिकारियोको नागरिकोके निवास-गृहोमे बसना पडा।

अधिकारी वर्गके पाँच हजार व्यक्तियोके पास अधिकृत वर्गके पाँच परिवारोके शासन और व्यवस्थाका काम क्रियात्मक रूपमे, नगण्य ही था। आदर्श नागरिकताकी उत्कृष्ट शिक्षा पहले ही पा चुकनेके कारण उन पाँच परिवारोके बीच किसी प्रकारकी अव्यवस्था, उच्छृखलता या सघर्षका अवकाश नही था। शासक वर्गके न्यायालयो, शिक्षणालयो और व्यवस्था विभागोमे कोई काम नही था। लेकिन अधिकारी वर्गके सामने एक नई ही समस्या उठ खडी हुई थी। अधिकृत-वर्गकी तो नही, पर अपने अधिकारी वर्गकी सुव्यवस्थामे उन्हे कुछ कठिनाइयाँ दीखने लगी थी। अधिकारी वर्गके व्यक्तियोके कुछ विशेष अधिकार होते थे और उन्हे जनसाधारणके नियमोसे शासित और सचालित नही किया जा सकता था। अपने-अपने शासन या शिक्षण सम्बन्धी विषयोके वे कुशल अधि-कारी थे और राज-नियमोमे उनके सम्मानके लिए विशेष अवकाश रखा गया था। अपने-अपने विषयके अधिकारी होनेके कारण उन सबका पद प्राय बराबर ही था और कोई किसीका अनुशासन नही स्वीकार कर सकता था।

पाँच हजार अधिकारी वर्गके परिवारोका, जिनकी जनसख्या पच्चीस हजारके लगभग थी, एक घनी तग-सी बस्तीमे एक साथ मिल कर रहना एक नई बात थी। अपनी मातृ-भूमिमे वे सब अलग अलग, एक दूसरेसे स्वतन्त्र रहनेके आदी थे। उनका काम अपने विभागके शासितो या शिक्षार्थियोसे ही पडता था, जो उनकी इच्छाओ और आदेशोका आदर-पूर्वक पालन करते थे। उन्हे दूसरोकी व्यवस्था करना आता था, स्वयं व्यवस्थित होना नही, दूसरोको मिलाकर एक साथ चलाना आता था, स्वय मिलकर चलना नही, उन्हे कर्तव्योका ज्ञान था, लेकिन अपने अधिकृत वर्गोके कर्तव्योका, उन्हे अधिकारोका भी ज्ञान था, लेकिन केवल अपने अधिकारोका।

नागरिकता और पारिवारिकता तो आखिर उन अधिकारी-वर्गके व्यक्तियोके जीवनमे भी थीं ही। उनकी भी आवश्यकताएँ एक नागरिककी आवश्यकताएँ थी। आवश्यक साधनो और स्वतन्त्रताओकी सकीर्णताके कारण उपनिवेशमे एक सघर्ष प्रारम्भ हो गया। शासन-विशारदोने कहा—'हमारे आदेशोका सभीको तत्काल पालन करना चाहिए। इसके बिना व्यवस्था रह ही नही सकती।' कलाविशारदोने कहा—'शासन-वेत्ता कलाकी आवश्यकताओ और सीमाओको क्या समझे, कलाकारकी गति-विधि पर उन्हे कोई रोक नही लगानी चाहिए।' न्याय-विशारदोने कहा—'इन सभी पारस्परिक झगडो-मतभेदो और इनकी सीमाओका निर्णय हमारे हाथमे होना चाहिए, हमारी कसौटी पर परखे बिना कोई आदेश और कोई व्यवस्था उपयोगी नही हो सकती।' इन्ही मतभेदो और व्यावहारिक जीवनके छोटे-बडे पारस्परिक सघर्षोको लेकर उस नये उपनिवेशकी बस्तीमे कलह और अशातिका सूत्रपात हो गया।

उपनिवेशमे अराजकता बढी और उसकी सूचना महाराजको मिली। महाराजको उपनिवेशमे तुरन्त ही उपस्थित होना पडा।

महाराजका दरबार लगा और उनमे अधिकारी और अधिकृत-वर्गके

सभी लोग निमत्रित किये गये । उपनिवेशकी समस्याओपर प्रकाश डालते हुए महाराजने अन्तमे अधिकारी-वर्गको सम्बोधित करते हुए कहा—"आपमेसे प्रत्येक अपने-अपने विषय और विभागका विद्वान् एव अधिकारी है । हमारे राज्यमे इतने कुशल विशारदोका होना हमारे लिए गर्वकी बात है । किन्तु आपमेसे कोई भी दूसरे विषय या विभागकी न यथेष्ट जानकारी रखता है और न उसके प्रति कोई आदर या उदारताका भाव रखता है । इस उपनिवेशके शासित-वर्गके व्यक्ति किसी विषयमे भी आपके बराबर दक्ष नही है, फिर भी उन्होने सभी विषयोकी आवश्यकतानुसार यथेष्ट जानकारी और उनका व्यावहारिक उपयोग आपसे सीख लिया है । उनमेसे प्रत्येक आदमी एक दूसरेसे सामजस्य एव सहयोग रखता हुआ प्रत्येक विभागका काम सम्हाल सकता है । इसलिए मै, उपनिवेशके हितोको सामने रखता हुआ, आजसे शासन और शिक्षणका कार्य अधिकृत वर्गके पाँचो व्यक्तियोके हाथ सौपता हूँ और आप लोगोको अधिकृत वर्गकी भाति उनके लिए बनाये हुए विधानके अनुसार रहनेका आदेश देता हूँ । ऐसा करनेसे आप लोग धीरे-धीरे अपने एकागी व्यक्तित्वको सम्पूर्ण बना लेगे । शासक और शिक्षक बननेके लिए एक सीमा तक, एकागी ज्ञान पर्याप्त होता है, किन्तु शासित और शिक्षित केवल पूर्णाग ज्ञान वाले ही बन सकते है । अपने पूर्व-पद पर पुन पहुँचनेके लिए ऐसे ज्ञानकी आपको आवश्यकता है । मानव-विकासमे सीखने और सिखाने, दोनोका क्रम, सूर्यकी अशेष यात्रामे पूर्व और पश्चिमकी भाति बराबर चलता रहता है । मगलग्रहका जीवन-काल समाप्त होने आ रहा है । हमारी मानव-जाति अब पृथ्वी लोक पर पहुँच कर अपना अगला विकास प्रारम्भ करेगी और वहाँके प्रारम्भिक युगमे इस उपनिवेशके ये पाँच शासित व्यक्ति ही शासकके रूपमे और ये पाँच सहस्र शासक व्यक्ति शासितके रूपमे अवतीर्ण होगे । तब तक, अपने नये लोककी परिस्थितियोका अभ्यास आप लोग इस उपनिवेशमे ही रहकर करेगे !"

कामकी घण्टी

उस रात हमारी गाडी तीन घण्टे लेट, एक बजे रातको मुजफ्फरपुर पहुँची। स्टेशनसे हमने ताँगा लिया और किसी आरामदेह होटल या धर्मशालाकी खोजमे चल दिये। शहरकी लगभग सभी धर्मशालाओ और होटलोका दरवाजा खटखटाया। अधिकाशके दरवाजे ही नही खुल सके और जिनके खुल भी सके उनमे जगहकी तगी निकली। हम नीदमे भरे, निराश, स्टेशनके मुसाफिरखानेमे ही बिस्तर लगानेके लिए लौट रहे थे कि सडकके किनारे, शायद हमारे ताँगेकी आहट पाकर ही, एक मकानका दरवाजा खुला और घरके मालिकने बाहर आकर ताँगेवालेसे रुकनेका इशारा किया। ताँगा रुक गया।

"आपको कही जगह नही मिली, उतरिये, आज आपको मेरा ही मेहमान होना है।" उन सज्जनने हमारे बक्सके ऊपर रखी हुई डोलचीको ताँगेसे उतारते हुए एक पुराने परिचित स्वजनके-से स्वरमे कहा।

यह सज्जन हमारे पुराने परिचित या स्वजन तो नही थे, हाँ, पाँच स्टेशन पहलेसे मुजफ्फरपुर स्टेशन तक वह रेलके डिब्बेमे हमारे पडोसी अवश्य थे। वह भी मुजफ्फरपुर जा रहे थे और वहीके निवासी थे। मै अपने पुस्तक-प्रकाशन गृहकी एजेन्सियाँ स्थापित करनेके लिए दौरे पर निकला था और इसी सिलसिलेमे मुझे दो दिन मुजफ्फरपुर ठहरना था। इससे अधिक एक दूसरेकी जानकारी दिखाने वाली मेरी उनकी कोई बात नही हुई थी। उन्हे ही अब अपनी निराश्रयताके अवसर पर अपना मेजबान पाकर हम उनके आग्रहको टाल न सके।

एक साफ-सुथरे, सजे-सजाये कमरेमे दो बिछे-बिछाये हुए बिस्तर मानो पहलेसे ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने इन अकारण उदार

के एक छोटे कमरेमे, जिसमे सम्भवत एक लम्बे कोचके अतिरिक्त और कुछ नही था, चले गये ।

वकील साहबके इस व्यवहार पर हमे बडा आश्चर्य हुआ लेकिन उनकी श्रीमतीजीने एक सरल-सी मुस्कराहटके साथ हमारा समाधान किया, "इन्हे कभी-कभी अचानक इस तरहका काम लग जाता है । इसमे इन्हे न जाने कितनी देर लग जाय । हम लोग तो खाये ही" और रोटीका एक ग्रास बनाकर उन्होने अपने पास बैठी हुई मेरी पत्नीके मुँहमे सटा दिया । हम सबने खाना शुरू कर दिया ।

"वकील साहबको अचानक उस कमरेके अन्दर ऐसा क्या काम लग सकता है ?" मैने अपनी उत्सुकताको अदम्य पाकर श्रीमती वकीलसे पूछा। हम इस परिवारसे उस समय तक काफी बेतकल्लुफ हो चुके थे ।

"लौटकर वह खुद ही आपको शायद बता सकेगे ।" उन्होने उत्तर दिया ।

हमारा भोजन समाप्त हुआ । हम अपने सोनेके कमरेमे जा पहुँचे, लेकिन वकील साहबकी कोई खबर न मिली । होते-होते कमरेकी घडीने दस बजा दिये । वकील साहबके सम्बन्धमे मेरी उत्सुकता इतनी बढ गई थी कि मुझे नीद नही आ रही थी ।

पॉच मिनट बाद मैने अपने कमरेके किवाड पर एक हलकी थपकीके साथ एक धीमी आवाज सुनी, "आप जाग रहे है ?"

मेरी पत्नीने उठकर किवाड खोल दिये । वकील साहबकी लडकी सुनन्दा हमारी खबर लेने आई थी ।

"आप सोने न जा रहे हो तो आप दोनोको बुलाया है ।" सुनन्दाने कहा।

हम दोनो उसके साथ चल दिये। वकील साहब भोजनके कमरेमे थे, उनका थाल उनके सामने आ चुका था ।

"ऐसे बेवक्त खानेके लिए मुझे माफ कीजियेगा ।" उन्होने कुछ मुस्कराते हुए कहा ।

"आपने वक्त पर खाना नही खाया तो जिस समय भी आप खायेगे वह बेवक़्त तो नही कहा जा सकता" मैने उनकी बातको न समझते हुए ही उत्तर दिया। वह भोजन करने लगे।

"आगरेमे आपके मकानके पास ही आपके कोई करीबी रिश्तेदार रहते है ?" उन्होने प्रश्न किया।

"हॉ, मेरे एक साढू साहब मेरे मकानके पास ही रहते है।" मैने बताया।

"आपका उनका बहुत गहरा प्रेम है ?" उन्होने प्रश्नके ही स्वरमे कहा।

"है तो।" मैने अगली बातके लिए उत्सुक होकर उत्तर दिया।

"उनकी अभी दो घटे पहले मोटर-दुर्घटनासे मृत्यु हो गई है।" उन्होने मेरी ऑखोमे एक स्थिर दृष्टि डाल कर कहा।

मै विचलित हो उठा। जिनकी मृत्युका यह समाचार था वह ससारके मेरे इने-गिने स्नेहियोमे एक प्रमुख स्थान रखते थे। आयुमे वह मुझसे बहुत बडे थे और हमारे इस नातेदारीके सम्बन्धके बहुत पहलेसे ही हमारे पारिवारिक मित्रके नाते वह मुझसे गहरा स्नेह रखते थे। इस समाचारके आघातसे कुछ सावधान होने पर ही मुझे ध्यान आया कि मै वकील साहबकी इस सूचना पर अविश्वास करनेकी बात तक नही सोच पाया था। अब अपनी बुझी-सी आशाकी ओर पॉव उठानेका प्रयत्न करते हुए मैने शका की—

"आपको जैसे भी यह सूचना मिली है उसकी सचाई पर क्या आपको कोई सन्देह नही है ? इस घटनाकी सूचना आपको कैसे मिली ?"

"ऐसी घटनाओकी सूचनाएँ मेरे पास तक आनेका एक खास प्रबन्ध है, और वह इसलिए कि उनके सम्बन्धमे कुछ करना मेरे रोजानाके कामो का एक अग है।"

मैने केवल एक प्रश्नभरी दृष्टिसे देखा।

"दुनियामे हर घडी सैकडो लोग ऐसी दुर्घटनाओसे मरते रहते है।

इस तरह अचानक शरीर छोडने पर वे जिस हालतमे अपने आपको पाते है, उसमे उनके दिल-दिमाग अक्सर बहुत डरे और घबराये हुए होते है। उनकी सेवा-सहायता करने और उन्हे उनकी नई हालतकी ठीक जानकारी करानेके लिए, खासकर पहली जर्मन लडाईके समयसे, एक बालिण्टियर कोर या स्वयसेवक दल कायम किया गया है। इस दलके स्वय-सेवकोका फिलहाल खास काम यही है कि वे नये मरे हुए लोगोकी मदद पर फौरन पहुँचे। मै भी इस दलका एक वालिण्टियर हूँ।"

मेरे कृपालु आतिथ्यकारकी ये बाते मेरे लिए एकदम नई और आश्चर्य-जनक थी। अगर पिछले अडसठ घटोसे मैंने उन्हे परखा न होता तो मै उनकी बातोको एक पागल, उखडे हुए दिमागकी बाते मान सकता था। एक परमस्नेहीके आजीवन वियोगके आघातको इन विचित्र बातोने मेरे मनमे बहुत-कुछ छिन्न-भिन्न कर दिया।

"आपका ध्यान" उन्होने फिर कहना प्रारम्भ कर दिया "अभी तक इस दुर्घटनाके बहुत छोटेसे हिस्से पर ही अटका हुआ है, इसी लिए आपको अभी तक इसका सदमा लगा हुआ है। लेकिन इस घटनाका जो बडा भाग है, वही आपके, मेरे और उस बिछुडे हुए सम्बन्धीके खास मतलबकी चीज़ है।"

नये मित्रकी इस बातने मुझे सावधान कर दिया।

"यह दुर्घटना कैसे, कहाँ हुई? आपको तो पूरी ही बात हुईमालूम होगी।" मैने पूछा।

"मथुरा स्टेशनके पास एक रेलवे क्रासिंग पर इजनसे उनकी मोटर लड जानेसे।" उस घटनाका पूरा विवरण देते हुए उन्होने बताया।

बड़ी कष्ट-पूर्ण वह मृत्यु थी। सुनते-सुनते मै एक बार और सिहर उठा।

"लेकिन उस घटनाका यह बहुत थोडा शुरुआती हिस्सा है।" उन्होने मानो मुझे पहले कही हुई बातकी याद दिलाई।

"अगली पूरी बात सुननेको मै उत्सुक हूँ, आप बताइए न ।' मैंने दोबारा सावधान होकर कहा ।

"उनके प्राण निकलनेके तीन मिनट बाद मै घटना-स्थल पर पहुँच गया । उस समय वह इतने डरे और घबराये हुए थे कि मेरे तीन-चार नमस्कारोका उन्होने कोई उत्तर नही दिया । वह अपनी टूटी हुई कार और उसके भीतर पडी हुई खूनसे लथ-पथ लाशसे गज भरके फासले पर खडे हुए हिलनेका नाम ही नही ले रहे थे । उनके हृदयमे उस समय बडे भयकर विचार उठ रहे थे । वह कुछ आत्म-कल्पित भयकर निर्दयी यम-दूतोके आनेकी राह देख रहे थे । जीवनमे किये हुए उन कामो पर उनका ध्यान एकाग्र हो रहा था जिन्हे वह भयकर पाप समझते थे । शास्त्रोमें पढे हुए यमदूतो और नरक-यातनाओकी कल्पना उस समय उनके सामने साकार-सी हो उठी थी । वह अपने आपको कठोर दण्डका भागी और एक ऐसा परबश बन्दी समझे हुए थे जिसे एक कदम भी अपनी इच्छासे हिलने-डुलनेकी स्वतन्त्रता न हो । यह कैसी दुर्भाग्यकी और साथ ही आश्चर्य-जनक बात है कि जो मनुष्य अपने सशरीर जीवनमे मनमाना काम करनेके लिए अपने-आपको बहुत कुछ स्वतन्त्र पाता है वही एक ऊपरी शरीर से छुटकारा पाने पर अपनी मूर्खतापूर्ण कल्पनाके द्वारा अपनेको इतना परतत्र समझने लगता है—जैसे वह अब किसी दूसरे निर्दयी और भयकर ईश्वरके राज्यमे आ गया हो !"

वकील साहबकी आँखोमे एक चमक और होठोमे एक स्निग्ध मुसकान दौड गई । दो क्षणके लिए वह चुप हो गये ।

"मुझे इन बातोसे बडी सान्त्वना मिल रही है । आगे, इसके बाद मेरे साढू साहबका क्या हाल रहा ?" मैंने पूछा ।

"ट्रेनके अधिकारियो और मुसाफिरोकी भीड चारो तरफसे घिर आई । लाश समेत मोटर हटाकर सडकके किनारे लगा दी गई । लेकिन उनका ध्यान इनमेसे किसी बात पर नही था, वह अपने विचारोमे डूबे हुए और

अपनी लाशसे मानो गजभर लम्बी रस्सीसे बँधे हुए उसके पास ही खडे थे। बडी कठिनाईसे मै अपने-आपको उनकी दृष्टिमे ला सका। उन्होने मुझे देखते और मेरे शब्दोको सुनते हुए भी मेरे साथ वहाँसे हटनेका साहस न किया। उन्हे मुझ पर जरा भी विश्वास नही हो रहा था। अन्तमे मैने वहाँसे अपनी शक्ल हटाकर और आपका रूप रखकर उनका ध्यान आकर्षित किया। अब वह एक दम मुझसे लिपट गये और मेरे साथ आनेमे उन्होने एक बडी कैदसे छुटकारेका सा अनुभव किया। अब वह सन्तोषजनक रूपसे अपना काम कर रहे है और प्रसन्न है।"

"मेरा रूप धरकर!" मै इस विचित्र मनुष्यके शब्दोमे डूबने-सा लगा।

"आपका रूप धरकर" वह कह रहे थे, "आप कुछ चौक उठे है, लेकिन यह एक मामूली-सी बात है। आप पर उनका विश्वास है इसलिए ऐसा करना एक समुचित ही उपाय था। हम लोगोको अपने कामके लिए अपने सूक्ष्म शरीरोमे जैसा चाहे वैसा रूप धरना भी सीखना पडता है।"

मुझे लगा कि मै एक सिद्ध महात्माके सामने हूँ। लेकिन मेरा रूप धरकर! क्या इसका यह मतलब नही कि मेरे रूपका भी कोई विशेष महत्त्व है—मै सोच रहा था।

"मनुष्य मरनेके बाद भी इतना चेतन और स्वतन्त्र रहता है यह बात मुझे बहुत स्वाभाविक और आशाजनक जान पडती है। आपकी इन बातोमे मुझे नया प्रकाश मिल रहा है। मै इस पर अविश्वास नही कर पाता" मैने कहा।

"क्योकि ये बाते आप पहली बार ही नही सुन रहे है। आप इन्हे अपने पूर्व जन्ममे भी सुन और समझ चुके है। जीवनके इन अधिक व्यापक क्षेत्रोमे आपको भी आगे कुछ काम करना है।" उनकी मुसकान प्रखरतर हो उठी थी।

"मुझे भी काम करना है यह कितनी आश्चर्यजनक, महान् और सौभाग्यकी बात होगी। कब और कैसे और किस रूपमे मुझे ऐसे ऊँचे

कार्यों और उनकी जानकारीके मार्ग पर पडना होगा ?" मैंने उत्सुक होकर पूछा। मेरे हृदयके सारे दु:ख-सन्तापका स्थान अब एक उमडती हुई जिज्ञासाने ले लिया था।

"आप क्या समझते हैं कि आप यो ही, अकारण ही उस रातसे मेरे मेहमान हुए हैं ? उस रातकी भेटका कोई दूर तक गया हुआ गहरा कारण और उसका आगे दूर तक फैला हुआ कोई बडा अभिप्राय क्या आप नही देखते ?"

मैंने स्वीकार किया कि उनका मेरा सम्पर्क निस्सन्देह एक दूर-व्यापी कार्यकारणकी शृंखलासे सम्बद्ध हो सकता है।

"और अपने जिस अगले कार्य-क्षेत्रको आप अभी बहुत ऊँचा और अपने दूसरे साथियो और परिचितोकी तुलनामे आपको बहुत ऊँचा उठाने वाला समझते हैं वह तो एक बहुत शुरुआती, निचले दर्जेका ही कार्य-क्षेत्र है। हो सकता है कि उसकी ठीक स्थितिको समझनेमे आप कुछ दूसरे नौसिखियोकी तरह बहुत देर लगाये। लेकिन ऐसे कामोसे ऊपर अगणित काम और भी है और उनके करनेवाले आदमी भी इस दुनियामे मौजूद है। यह भी आवश्यक नही कि आपके जिन दूसरे परिचितोका इस तरहके जरा भीतरी कार्य-क्षेत्रोमे प्रवेश नही है वे विकास या बडप्पनमे आपसे कम ही हो। उनके विकासका स्तर, दिशामे आपसे भिन्न होते हुए भी, आपके बराबर या उससे ऊँचा हो सकता है।" उन्होने मानो मुझे एक हानिकर गलतफहमीसे सावधान करनेके लिए कहा।

इस चेतावनीके बिना मै सचमुच एक गलत दिशामे बहने जा रहा था।

घडीने उसी समय बारह बजाये। वकील साहबका भोजन बहुत पहले ही समाप्त हो चुका था—खाली थालके सामने बैठे वह अभी तक मुझसे बात कर रहे थे।

"आपको सोनेके लिए बहुत देर हो गई है। बाते फिर होती रहेगी।

कोई खास बात आपको कहनी है ?" उन्होने बिदाईका आदेश-सा देते हुए पूछा ।

"एक बात पूछूँगा। जितनी इस तरहकी आकस्मिक मौते होती है क्या उन सबकी आपको सूचना मिल जाती है ?" मैने पहलेकी अटकी हुई एक शकाका निवारण चाहा ।

"यह तो मुमकिन नही है। मेरी जैसी हैसियतके वालिटियरको चौबीस घटेमे एक या दो ऐसे मौकोकी सूचना दी जा सकती है । इस दलमे काम करनेवाले भी तो सैकडो है । मेरे पास इस समय आपकी मौजूदगी की वजहसे ही आपके सम्बन्धीकी मौतकी सूचना और उनकी सेवाका काम मुझे दिया गया है, वर्ना यह किसी और को, जो किसी दूसरी तरह उनके करीब होता, दिया जाता।"

इस समाधानके बाद हम अपने-अपने शयन-कक्षोमे जा पहुँचे ।

दूसरे दिन मैने अपने दौरे पर आगे प्रस्थान किया। वकील साहब अब मेरे मित्र है । उन्होने इस घटनाको तो लेखबद्ध करनेकी मुझे अनुमति दे दी है, पर अपना नाम देनेकी अनुमति नही दी। मेरा उनका सम्पर्क चल रहा है और जिस तरहके भीतरी कार्यक्षेत्रके वह कार्यकर्ता है वैसे कार्यक्षेत्रमे मेरा भी प्रवेश यदि इस जन्म के भीतर ही हो जाय तो वह एक बहुत बड़ी लेकिन कोई आश्चर्यकी बात न होगी ।

———

कहानीकी खोजमें

"तुम मुझसे ब्याह करोगी सोना ?" पाँच वर्षका बालक हरिदास अपने पडोसकी साथ खेलनेवाली चतुर्वर्षीया वालिकासे पूछ रहा था,—"मेरी माँ कल कहती थी कि सोना बहुत सुन्दर लडकी है ।"

"मेरी माँ भी कहती है कि मेरी सोना मुहल्ले भरकी लडकियोमे सबसे सुन्दर है । मै तुमसे ब्याह करूँ तो तुम मुझे अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाओगे ?"

"जरूर सुनाऊँगा । मैने अपनी मासे बहुत अच्छी-अच्छी कहानियाँ याद कर रखी है ।"

"तुम्हारी माकी कहानिया तो मैने सुनी है । मेरी मा भी बहुत अच्छी-अच्छी कहानिया कहती है । अपनी माकी कहानियाँ भी मैने सुनी है । तुम अपनी ही कोई अच्छी कहानी सुनाओगे ?"

"अपनी कहानी ?" बालक कुछ चिन्तामे पड गया, "अपनी कहानी मै कोई नही जानता । दादाकी, ताईकी और छोटे नानाकी मै थोडी-सी कहानियाँ सुना सकता हूँ ।"

"तो फिर तुम अपनी एक भी कहानी नही सुना सकते ?" सोनाने कुछ निराश भावसे एक लम्बी साँस लेते हुए कहा ।

"नही-नही, मै तुम्हे अपनी भी कहानी जरूर सुनाऊँगा ।" बालकने हठात् आत्मविश्वास बटोरकर कहा और बालिकाका हाथ छोडकर चुपचाप सोचने लगा ।

× × ×

"तुम मुझे अपनी कोई कहानी सुना सकते हो ?" हरिदासने दूसरी सुबह घरसे निकलकर बाहरके मैदानमे खेलते हुए अपने खेलके साथियोसे

पूछा । वह जानना चाहता था कि उसके साथियोमे से दूसरा भी कोई कोई अपनी कहानी सुना सकता है या नही ।

लडकोने बताया कि वे सभी कहानियाँ बहुत-सी सुना सकते थे, लेकिन उनमेसे कोई अपनी कहानी नही थी—वे सब दूसरोसे सुनी हुई कहानियाँ ही थी ।

हरिदास आगे बढ गया । वह बस्तीके बाहर जा पहुँचा ।

जगलकी पगडण्डी पर उसे दो यात्री मिले ।

"तुम किसके, किस गॉवके लडके हो ? जगलमे क्या रास्ता भूल गये हो ?" उन्होने हरिदाससे पूछा ।

"मै इसी गॉवमे रहता हूँ", हरिदासने अपने गॉवकी दीखती हुई छतोकी ओर उगली उठाकर कहा, "मै रास्ता नही भूला हूँ । क्या मुझे तुम अपनी कोई कहानी सुना सकते हो ?"

"हम तुम्हे बहुत-सी कहानियाँ सुना सकते है, लेकिन चलो पहले तुम्हे तुम्हारे गॉवमे पहुँचा दे । छोटे लडकोका इस तरह जगलमे अकेले घूमना ठीक नही है ।" उन्होने कहा ।

"मुझे अपने गॉवका रास्ता मालूम है । लेकिन क्या तुम मुझे ऐसी कहानी सुना सकते हो जो किसी दूसरेसे सुनी न हो—तुम्हारी खुद अपनी ही कहानी हो ?"

उन राहगीरोको दूसरोसे सुनी हुई कहानियाँ ही मालूम थी, उन्होने स्पष्ट किया । हरिदास आगे बढ चला । उन आदमियोको भी इस लडके की अधिक चिन्ता करनेकी फुर्सत नही थी ।

चलते-चलते हरिदासको कई दिन बीत गये । राहमे पडनेवाले गाँवोके मन्दिरोमे जो भोजन और खेतो और बनोमे जो अन्न या कन्द-मूल-फल उसे मिल जाते उन्हे ही वह खा लेता और रातकी नीद और दोपहरीका विश्राम जब उसकी थकानको उतार देता, तो वह चल देता ।

एक दिन एक बड़े नगरके पास एक चौड़ी सड़क पर उसे नगरकी रानीकी सवारी मिली।

रानीकी नजर अपनी पालकीके झरोखेसे झाककर इस बालकपर पड़ी। इतने सुन्दर बालकको अकेला जाता देखकर रानीने उसे अपने पास बुलवा लिया। रानीकी कोई सन्तान नही थी। उसने सोचा कि इस बालकको गोद लिया जा सके तो कितना अच्छा हो! रानीके चलनेके प्रस्ताव पर हरिदासने उससे वही प्रश्न किया।

'क्या तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओगी ?"

और 'अपनी कहानी' की बानगीके खोजी हरिदासको पूर्ववत् निराश होकर और उससे भी अधिक उस मातृहृदया महिलाको हताश करके आगे बढ जाना पड़ा।

हरिदासकी यात्रा चलती रही और देश-देशके, रूप-रूपके, रग-रगके, आयु-आयुके—तरह-तरहके लोग उसे मिलते रहे लेकिन कोई भी उसे अपनी कहानी न सुना सका।

ग्यारह वर्ष बीत गये और अब हरिदास सोलह वर्षका सुन्दर नवयुवक था।

चलते-चलते एक सरोवरके किनारे छ सुन्दर तरुणियाँ उसे सरोवरके जलमे क्रीडा करती हुई दीख पडी। उन्होने भी उसे देखा और उसके रूपपर मुग्ध हो गईं।

"तुममेसे कोई मुझे अपनी कहानी सुना सकती हो ?" हरिदासने स्वागत-सत्कार पूर्वक उनकी आँखोके निमन्त्रण पर उनके पास जाकर पूछा।

"अपनी कहानी ? अपनी कहानी ?"वे छहो कह उठी और हताश भावसे एक दूसरेका मुँह देखने लगी।

हरिदास आगे बढ गया, उनके मनकी मनमे ही रह गई।

आगे एक सुन्दर सजे उपवनमे उसे एक अत्यन्त रूपवती, बहुमूल्य वस्त्राभूषणोसे शृगार-सज्जिता रमणी मिली।

"हाँ-हाँ, परदेशी युवक, तुम मेरे पास ठहरो, मै तुम्हे अभी अपनी और तुम्हारी जिसकी भी तुम चाहोगे उसीकी कहानी सुनाऊँगी—ऐसी कहानी जो आज तक किसीने किसीसे न कही हो।" हरिदासके प्रश्नोके उत्तरमे इस चतुर रमणीने मोहक कटाक्षके साथ उसकी ओर देखते हुए कहा।

हरिदासने सतोषकी सास ली। तरुणीके आदेशानुसार वह वही ठहर गया और शामके निश्चित समयपर जब वह उसके पास कहानी सुनने पहुँचा तो उस युवतीने कहना प्रारम्भ किया—

"एक था युवक अत्यन्त रूपवान, और एक थी युवती, परम सुन्दरी। युवक किसी वस्तुकी खोजमे देश-विदेश पार करता हुआ उस सुन्दरी युवतीके उपवनमे जा पहुँचा।"

"हूँ!" हरिदासने हुकारी दी।

"युवतीकी दृष्टि जब उस युवक पर पडी तो वह उस पर रीझ गई।"

"ठीक ही तो है" हरिदासने समर्थन किया और एकदम उठ खडा हुआ। "यह कहानी तो मै भी जानता हूँ और प्रत्यक्ष ही देख रहा हू। यह कहानी तुम्हारी कहानी नही है क्योकि मै भी इसे जानता हूँ, और यह मेरी कहानी भी नही है क्योकि तुम भी इसे जानती हो। 'युवती युवक पर रीझ गई' ऐसी कहानियाँ तो बहुतसे लोगोकी कही-सुनी कहानियाँ है।"

युवती कुछ कहकर उसे रोके, इसके पहले ही वह चल दिया।

"तुम-जैसे एक हृष्ट-पुष्ट युवककी मुझे आवश्यकता है।" एक बड़े नगरमे पहुँचने पर वहाँके एक धनी व्यवसायीने हरिदासको सामनेसे निकलते देखकर कहा।

"मै आपकी सेवा कर सकता हूँ, यदि आप मुझे कोई ऐसी कहानी सुना सके जो आपने किसी औरसे न सुनी हो और जिसे कोई दूसरा न जानता हो।" हरिदासने कहा।

"एक नही, सैकडो। गाहको और व्यापारियोके साथ मेरी एक-एक चाल एक कहानी है।"

"तब आपकी कहानियाँ आपको अपने गाहको और व्यापारियोसे मिलती है और वे भी उन कहानियोको पहले से ही जानते है।" हरिदासने कहा और आगे चल दिया।

आगे सुख वैभवसे पला, ससारके दु खोसे अनभिज्ञ एक राजकुमार और उसके बाद एक अत्यन्त दरिद्र, दुर्बल कष्टसे छटपटाता रोगी उसे मिले। इन दोनोने कहा कि उनकी जैसी सार्थक और सबसे अधिक सबल कहानी दूसरा कोई नही कह सकता। लेकिन उनकी कहानियोमे भी कोई वास्तविक नवीनता नही थी। दु ख-सुखकी उनसे भी गहरी कहानियाँ उसने सुन रक्खी थी और वैसी कहानियोको जाननेवाले बहुतेरे थे।

अगला व्यक्ति जो हरिदासको मिला, वह एक प्रसिद्ध कहानीकार था।

"अपने मस्तिष्कसे सैकडो-हज़ारो कहानियाँ रचकर मैने ससारको सुनाई है। मै निरन्तर कहानियोकी रचना करता रहता हूँ। बैठो मै तुम्हे अभी एकदम नई कहानी सुनाता हूँ।"

"आपसे शायद मेरा काम निकल आयेगा" हरिदासने उसके पास बैठते हुए कहा, "लेकिन आपको नई-नई कहानियाँ कहाँसे सूझती है?"

"मै लोगोमे—सभी तरहके लोगोमे—जाता हूँ, उनके जीवन और भावो-विचारोका गहरी दृष्टिसे अध्ययन करता हूँ। प्रकृतिकी क्रीडाओका मुग्ध आँखोसे अवलोकन करता हूँ। मनोविज्ञान और मनुष्यके कोमल, कठोर हार्दिक द्वन्द्वो "

"तब आप" हरिदासने बात काटकर कहा, "अपनी कहानियाँ तरह-तरहके लोगोसे लेते है, वे स्वतन्त्र रूपसे आपकी ही नही होती। मुझे

एक ऐसी कहानी सुननेकी आवश्यकता थी जो सबके लिए एकदम नई हो।"

कहानीकार हरिदासको सिरसे पाँवतक पूरा देख भी न पाया था कि वह चल दिया।

आगे घने वनमे उसे एक वृद्ध तपस्वी मिला।

"नई कहानी ?" हरिदासके प्रश्नपर तपस्वीने कुछ चौककर कहा, "नई कहानी तो बेटा दुनियामे रहते कोई कह ही नही सकता। यहाँकी सभी पिछली और अगली कहानियाँ पुरानी ही कहानियाँ है। लेकिन तुम्हे नई कहानीकी इतनी खोज है तो तुम अवश्य उसे प्राप्त करोगे। मेरा ध्यानयोग कहता है कि तुम उसके समीप आ गये हो।'

तपस्वीका आशीर्वाद पाकर हरिदास आगे बढा ही था कि पर्वतकी एक गुफासे एक शेरनी उस पर झपटी और उसके पहले ही प्रहारमे असावधान हरिदासके प्राण शरीरसे मुक्त हो गये।

पलभरकी मूर्छाके बाद तुरन्त ही होशमे आकर हरिदासने देखा कि वह वैसा ही हृष्ट-पुष्ट अक्षत-शरीर उस गुफाके द्वारपर खडा है और वह शेरनी बडे स्वादके साथ सामने पडे हुए उसके घायल शवका आहार कर रही है।

हरिदासके हर्ष और आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। उसका शरीर—अब वह अपने सूक्ष्म शरीरमे ही था—इतना हलका और फुर्तीला जान पड रहा था कि वह हर्षातिरेकसे नाच उठा। पर्वतकी एक शिला पर उसने एक मुक्का मारा और उसका हाथ बिना किसी रुकावटके, उसके भीतर धँस गया। हरिदासके आश्चर्यकी कोई सीमा न रही। मोटी-मोटी चट्टानोके भीतर स-शरीर घुस कर वह भाग-दौड करने लगा। शेरनीके पेटपर उसने अपना सिर दे मारा और यह लो, वह उसके शरीरके आर-पार निकल गया। शेरनी अविचलित भावसे अपने भोजनमे निमग्न रही। धरती पर पावकी ठोकर लगाकर हरिदासने ऊपर उछलनेका प्रयत्न किया और ऊँचे वृक्षोकी चोटियो पर नाचता हुआ वह पर्वतके सबसे ऊँचे

शिखरके ऊपर मँडराने लगा । अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह मर कर अपने दुर्भेद्य सूक्ष्म शरीरमे आ गया है और जहाँ चाहे स्वतन्त्रगतिसे जा सकता है ।

"क्या यह सब एक ऐसी नई कहानी नही है, जिसे मै अपनी कहानी कह सकता हूँ ? इसे मेरे सिवा दूसरा कौन जानता है ? सोनाके लिए मेरे पास यह कहानी कितनी अच्छी है ! सोना—" हरिदास सोच ही रहा था कि बिजलीकी सवारी पर सवार-सा वह एक दम सोनाके घर उसके कमरेमे जा पहुँचा ।

दिनका वह तीसरा पहर था और सोलह वर्षकी सुन्दरी युवती सोना हाथमे एक पुस्तक लिए पढ रही थी ।

"मै अपनी कहानी सुनाने आया हूं—एकदम नई, बिलकुल अपनी—सोना !" हरिदासने सोनाका हाथ अपने हाथमे लेनेका प्रयत्न करते हुए कहा, "तुम जानोगी कि मरनेके बाद मनुष्य कितना अधिक स्वतन्त्र हो जाता है ।"

हरिदासका हाथ सोनाके हाथमे धँस गया और उसकी मुट्ठी खाली ही बँध गई । उसके शब्दोने भी सोनाका ध्यान आकृष्ट नही किया और उसकी उपस्थितिका भी उसे कोई पता नही लगा ।

हरिदास निराश हुआ, लेकिन परिस्थितिको समझनेमे उसे देर न लगी । उसका शरीर रूप रगमे पहले जैसा होते हुए भी अब स्थूल नही था और उसके कठ भागमे स्थूल-शरीरधारी लोगोको सुन पडनेवाला शब्द उत्पन्न करनेके अवयव भी नही थे ।

हरिदास अपना रूप सोनाको नही दिखा सकेगा, अपनी कहानी नही सुना सकेगा, इस चिन्ताने उसके हृदयको एक गहरी निराशासे भर दिया ।

हताश, चिन्तामग्न वह पास पडे एक कोचके पास खडा रह गया ।

वह इतना विचार-मग्न हो गया कि समय बीतनेका उसे अनुमान ही नही हुआ।

"हरिदास!" अचानक हरिदासका ध्यान टूटा, सोना उसके सामने खडी पुकार रही थी।

हरिदासने देखा, रात काफी हो गई थी और सोनाका शरीर उसके विस्तरपर सोया हुआ था। उसका सूक्ष्म-शरीर—हर रातको मनुष्य अपने इसी सूक्ष्म शरीरमे सपनोकी सैर करता है—उसके स्थूल शरीरसे बाहर निकल आया था और वह पूरे तौरपर हरिदासको देख-सुन सकता था।

बरसोके बिछुडे हुए प्रेमी एक-दूसरे का हाथ लिये हुए आकाश-मार्गसे न जाने किस देशके अत्यन्त सुन्दर उपवनमे आ पहुँचे।

हरिदासने सोनाको अपनी कहानी सुनाई। कहानी निस्सन्देह नई और दुनियाके आम कहानी कहने-सुननेवालोके लिए अभी तक अज्ञात और अनोखी थी।

× × ×

बात अभी ताजा ही है, इसलिए सोना और हरिदास आजकल हर रात स्वप्नलोकमे मिलते है और हरिदास विस्तारपूर्वक नई-नई कहानियाँ उसे सुनाता है, लेकिन हर सुबह जागनेपर सोनाको उन सबकी याद भूल जाती है।

अब जागनेके छहो पहर सोनाको हरिदासकी याद आती रहती है और उसका जी न जाने कैसा, उसके लिए कसकता रहता है। हरिदासके साथ उसकी उस बचपनकी बातचीत, और उसके बाद ही हरिदासके चुपचाप घरसे निकल जानेकी घटना सोनाको उसके घरवालोने आजसे कई वर्ष पहले याद दिला दी थी और अब कोई नही कह सकता कि सोना हरि-दासके लिए मनमे क्या लिये बैठी है।

किसी न किसी सुबह सोना हरिदासके स्वप्न-मिलन और स्वप्नमे कही कहानीकी याद लिये हुए अवश्य जागेगी और तब उसके उमडे हुए

सुख और साथ ही बढे हुए दु खमे किसका पल्ला भारी होगा, मै नही कह सकता ।

लेकिन वैसे किसी सवेरेके आनेके पहले ही यह कहानी किमी पत्रमे छपकर सोनाके हाथोमे जा पहुँचेगी और उसे उस सवेरेके तूफानी द्वन्द्वोके लिए पहलेसे ही कुछ तैयार कर देगी।

दूसरे पाठक-पाठिकाएँ, आलोचक-आलोचिकाएँ, सम्पादक-सम्पादिकाएँ भले ही इस कहानीको बच्चोकी, परियोकी, अकल्पनीय कल्पनाओकी जैसी कहानी समझे, लेकिन सोना इसे पढकर ऐसा नही समझेगी और अपनी परिचित बालिकाओके समाजमे इस बातका भी ध्यान रखेगी कि आगे कभी कोई छोटी या बडी बालिका किसी प्रशसित प्रियजनके सामने उसकी जैसी कठिन माँग रखनेका साहस न करे ।
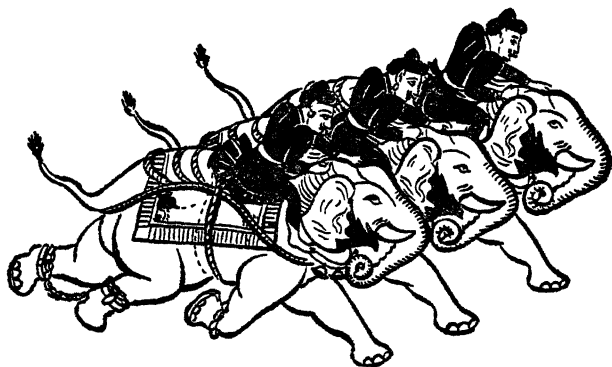
साथी नम्बर तीन !

मै अपनी मन-पसन्द जमुना किनारे वाली छतरीके नीचे बैठा एक पत्रके लिए कहानी पूरी करनेमे लगा था कि सीढियो पर पैरोकी आहटसे अचानक मेरा ध्यान खिचा और मैने देखा—कमीज, पायजामा और चप्पल पहने एक युवक छतरीके चबूतरे पर चढ आया था।

"माफ कीजियेगा, अगर मैने आपका कुछ हर्ज किया हो।" उसने मेरे पास आकर कहा—"मै महीपुर स्टेटका राजकुमार हूँ। महीपुर, आप जानते होगे, आसाममे अस्सी लाखकी एक बडी स्टेट है।"

मैने युवकको सरसे पाव तक देखा उसके कपडे कुछ मैले हो रहे थे और चप्पलके एक फीतेमे दूसरे चमडेका एक पैबन्द लगा हुआ था।

"बैठिये-बैठिये, युवराजजी, आप कुशलपूर्वक तो है ? आपकी प्रजा तो आनन्दसे है ?" मैने उसे अपने पास बैठनेका इशारा करके कहा।

आसामकी महीपुर स्टेटका मैने कही नाम नही सुना था। मैने सोचा कि वह किसी भले घरका ही लडका है और कुछ पागल हो गया है।

"जी हॉ, सब ईश्वरकी कृपा है। मै इधर कृष्णकी जन्म-भूमि देखने आया था" वह कहने लगा, लेकिन मैने बीचमे ही बात काट कर कहा—

"आप तो इतमीनानसे बैठकर बात करेगे न ? अगर आपको जल्दी न हो तो पन्द्रह मिनटकी मुझे इजाजत दे दीजिए, मै अपना काम पूरा कर लू तब आपसे बाते करूँ। तब तक लीजिए, आप ये मूँगफलियॉ खाइये।" मैने अपने नाश्तेकी बची हुई कच्ची मूँगफलियॉ (मेरे डाक्टर मित्रने बताया है कि मूँगफलियॉ कच्ची ही फायदेमन्द, बल्कि बहुत फायदेमन्द होती है) उसके सामने सरका दी।

मुझे उसके चुप हो जानेकी आशा नही थी, लेकिन उसने मेरी बात मान ली, और १५–२० मिनट बाद लेख पूरा करके मैने उससे अपनी बात शुरू करनेको कहा।

"मै कृष्णकी जन्मभूमि देखने मथुरा वृन्दावन अपने नौकरो-चाकरोके साथ आया था। एक दिन मै वृन्दावनकी कुज-गलियोमे घूम रहा था कि एक चीता एक बच्चेको मेरे सामनेसे उठा कर ले भागा। मै उसे छुडानेके लिए उसके पीछे दौडा। जगलोमे उसके पीछे भागते-भागते मुझे तीन दिन और तीन राते बीत गई, तब जाकर मै उसे छुडा पाया।" वह बोला।

"आपने एक राजकुमारके योग्य ही काम किया। उस चीतेको आपने मार दिया या जीता ही पकड लाये?" मैने कहा।

"चीता भाग ही गया। मै जब लौटकर वृन्दावन पहुँचा तब मेरे सब नौकर-चाकर मेरे राज्यको लौट गये थे। मै अकेला ही, बे रुपये-पैसे, बे सरो-सामान पैदल लौट रहा हूँ। बहत्तर घटे बाद मैने ये इतनी मूँग-फलियाँ खाई है।"

"मथुरा-वृन्दावनवालोमे भी अब धर्म नही रह गया।" मैने कहा—"आपके इतने बडे पुण्यके कामकी उन्होने बिलकुल कदर न की और आपको पैदल भूखे-प्यासे वहाँसे चलना पडा।"

"अब मुझे यहाँसे शिलाँग तक रेलके किरायेकी ज़रूरत है। शिलाँग तक न हो सके तो कलकत्ते तक ही सही, वहाँ मेरे राज्यके कुछ व्यापारियोकी कोठियाँ है।"

पागल नही, यह मिस्टर तो ठगविद्याके कोई नये विद्यार्थी मालूम पडते है—मै सोचने लगा, इस विद्याके कच्चे विद्यार्थियोका एक शुरूआती पाठ यह भी है कि बाबूजी, रेलमे चोरी हो गई, टिकट पैसे सब चले गये, रेल-का किराया दे दीजिए। लेकिन यह हज़रत है बहुत बेवकूफ, इन्हे यह पता नही कि गप ऐसी हाँकनी चाहिए जो किसी हद तक सच मानी जा सके। हो सकता है, इनके दिमागमे भी कुछ खलल हो।

'आप भूखे भी तो है' मैने चलनेके लिए खडे होकर प्रकटमे कहा, 'चलिए मेरे साथ पहले भोजन तो कीजिए, किराये-विराएकी फिर सोचेगे ।'

ठग, चोर, उचक्का—कोई भी सही भूखा तो यह है ही और यथासम्भव हर रोज एक भूखेको अपने साथ खाना खिलाना और खास कर उसको, जो मेरी साहित्य साधनाकी इस छतरीके नीचे आ पहुँचे—मेरा एक प्रिय नियम था ।

मै उसे घर ले गया, और हम दोनोने भोजन किया । भोजनके समय मैने उसे इधर-उधरकी बातोमे अटकाये रखा । मै नही चाहता था कि मेरी पत्नीको भोजन कर चुकनेके पहले ही यह मालूम पड जाय कि उसका आजका अतिथि कोई पागल या उठाईगीर है और इस प्रकार उसकी अतिथि-श्रद्धामे कोई कमी आये ।

भोजनके बाद मै उसे दूसरे कमरेमे ले गया । मैने तय किया था कि अगर यह अपने उठाईगीरीके पेशेको छोडकर कोई नौकरी करनेके लिए तैयार हो सकेगा, तो इसकी कुछ मदद कर दूँगा—इस तरह शायद इसका जीवन कुछ ठिकानेकी राह पर आ जायगा ।

कमरेमे पहुँचकर मेरे कुछ कहनेके पहले ही उसने मेरे कन्धे पर हाथ रखकर मुझे नामसे सम्बोधित करते हुए कहा—

"आपने मुझे पहले पागल समझा, फिर ठग और बेवकूफ, अब आप मुझे और भी कुछ समझ सकते है ?"

युवकके इस वाक्यने मेरे मस्तिष्कको सरसे पावतक झकझोर दिया, लेकिन मै जल्द ही सम्हल गया । 'हॉ, अब मै आपको एक सुशिक्षित, बहुत चतुर, शरारत-पसन्द भला मानस और अपने किसी मित्रका मित्र और सम्भवत एक ऊँचा साहित्यकार समझ सकता हूँ ।" मैने उसका हाथ पकड़कर उत्तर दिया ।

"आपका यह अनुमान आपके योग्य ही है ।" उसने कहा, "आपके पिछले अनुमानोसे भी मै करीब-करीब सन्तुष्ट हूँ । एक शिक्षित व्यक्ति मेरी

उन बातो पर इससे अधिक अनुमान, आम तौर पर नही लगा सकता था। लेकिन आप जैसे खुले दिल और दिमाग वाले साहित्यिक कलाकारसे मैं थोडी और अधिक आशा करना चाहता था। जिस समय आपने मुझे पागल समझा उस समय पागल या ठग समझते, जिस समय ठग और बेवकूफ समझा उस समय ठग बेवकूफके साथ जो अब समझ रहे है वह भी समझते, और इस समय जो कुछ समझ रहे है उसके आगे भी कुछ कदम और बढाते तो मुझे आपसे पूरा सन्तोष हो जाता।'

"इसके आगे—इसके आगे मै आपको कोई भूत, प्रेत और समझ सकता हूँ—अगर आपको एक भला आदमी समझे जानेमे सन्तोष नही है।" मैंने कहा।

एक ठहाकेकी हँसीसे कमरा गूँज उठा।

"आपको जितना सहृदय और मिलनसार मैंने सुना था उतना ही पा रहा हूँ। मनुष्य जातिकी वर्त्तमान सहृदयतामे भूखे ठगो, उठाईगीरोको खाना खिलानेकी गुजाइश अभी आम तौर पर नही आई है। फिर भी मैं आपको अपना परिचय देनेमे अभी डरता हूँ। जब आप क्षण भरके लिए भी मुझे एक रियासतका राजकुमार तक नही समझ सके, तो जो कुछ मै हूँ उस पर आप एकदम कैसे विश्वास कर लेगे?" उसने अपनी हँसी पूरी करनेके बाद कहा।

"तब न सही, अब मै आपको रियासतका राजकुमार मान सकता हूँ। आदमीको समझनेमे थोडी-बहुत देर लगती ही है। आप कहिए तो सही, आप कौन-सी बला है।"

मै उसे जाननेके लिए उत्सुक था।

"अब आप मुझपर ठग-उठाईगीरका सन्देह तो नही कर सकते?"

"एक फीसदी गुजाइश तो मै इसके लिए भी रखूँगा ही।"

वह फिर हँस पडा।

"आपकी सावधानी और बुद्धिमत्ताका अब मै कायल हूँ" उसने कहा—"गोपाको आप जानते थे ?"

"गोपा ?—मै चौककर बोल उठा, "हाँ, गोपाको मै जानता था । आप . .   ?

गोपा पडौसके गाँवमे रहने वाला एक अहीरका लडका था । वह ढोर चराता था । करीब तीन महीने पहले चौदह बरसकी उम्रमे साँपके काटनेसे उसकी मौतके दो दिन पहले ही उसका मेरा परिचय हुआ था । उसीने मुझे जमना किनारेका यह स्थान दिखाया था और यही रहकर लिखने-पढनेकी मुझे सलाह दी थी । वह अपने पिछले जँन्मसे ही हिमालय-के एक महात्माका शिष्य था । वह एक ऊँचा सस्कारी जीव था और उसे अपने पिछले जन्मका और मौजूदा जन्मकी मौतका पहलेसे ही हाल मालूम था । उसने बताया था कि अपने पिछले जन्ममे वह मेरा सगा भाई था और उसने और मैंने एक ही साधनाशील गुरुकी सेवामे रहकर विद्याध्ययन किया था और बादमे वह उसी जन्মमे हिमालयके उन महात्माका शिष्य बन गया था ।

"मुझे भी आप उसीके भाई-बन्दोमे समझिये" मेरे प्रस्तुत मित्रने कहा, "मै यहाँसे चार मील दूर रेणुका आश्रमके पास रहता हूँ । मै बहुत दिनोसे आपको देख रहा हूँ । आज आपने जो कहानी पूरी की है, उसीकी एक बातसे खिचकर मै आपके सामने हाजिर हुआ हूँ ।

"आपने मेरी यह कहानी पढ ली है ! और मेरे सामने आनेके पहले ही !" मैंने मन ही मन गोपाको इस भरे-पूरे क्षेत्रके परिचयके लिए धन्यवाद देनेके बाद कुछ हैरानीके स्वरमे कहा ।

मेरा नया मित्र हँस पडा । "आप किताबे तो पढते है, लेकिन मौका पडनेपर उनसे सीखी बातोको भूल भी जाते है । क्या मै चार मीलकी दूरीसे आपके दिमागसे निकलते हुए विचारोको पढकर आपकी लिखी जाती

हुई कहानीको नही पढ सकता हूँ ? आपने तो मनोनियम पर बडे-बडे वैज्ञानिकोकी किताबे पढी है ।"

मैने अनुभव किया, मुझे इतनी छोटी-सी बात न पूछनी चाहिए थी। मैने अपनी भूल उसके सामने स्वीकार कर ली ।

आपकी आजकी कहानी प्रेम-कहानियोके प्रेमियोके दृष्टिकोणसे बहुत मार्मिक और ऊँची बन पडी है। लेकिन उसमे लोकेश्वरके साथ गोदावरीका विवाह कराकर और बादमे दिनेशको इस दुनियासे विदा करके गोदावरी और लोकेश्वरको लोकसेवाके कामोमे लगा कर आपने कहानीको ख़त्म कर दिया है। यह कहानीका कोई ऊँचा प्रभावशाली और सच्चा अन्त नही है । यहाँ पर असलियत आपकी निगाहमे छिप गई है ।

"असलियत छिप गई है !" मैने कहा, "आपका मतलब यही है न कि उस कहानीके घटना-विकासमे कला, कल्पना या मनोविज्ञानके दृष्टिकोण-से कोई कमी रह गई है ?"

'जी नही, कला और मनोविज्ञानसे मेरा कोई मतलब नही, मै तो यह बता रहा हूँ कि दिनेश, गोदावरी और लोकेश्वरकी और सब बाते तो आपने सच लिखी है, लेकिन गोदावरीको अन्तमे, उदासी भरा दिल लिये हुए आपने जो लोक-सेवाके कामोमे लगा दिया है और दिनेशका उसके पास कोई स्थान नही रहने दिया, वह गलत है। वह लोकसेवामे नही लगी, बल्कि उसका सबसे बडा और सबसे अधिक आकर्षक कार्य-क्षेत्र इस समय गोदावरी और दिनेशका सम्पर्क, उनका खुला हुआ प्रेम-व्यापार है ।'

'दिनेश, गोदावरी और लोकेश्वर मेरी कल्पनाएँ है। आप मेरी कल्पनामे कोई सुधार या विस्तारकी बात कहना चाहते है ?' मैने कुछ खीझ कर कहा ।

मेरी कहानी यह थी कि गोदावरी दिनेश पर मुग्ध होती है और फिर दोनोके दिलोमे एक दूसरेके लिए गहरा प्रेम हो जाता है। आगे चलकर दिनेशका मित्र लोकेश्वर गोदावरीको देखता है और उस पर मुग्ध हो जाता

है । दिनेश अपने मित्रके लिए गहरा त्याग करता है और अपनी जीवन-धाराका रुख बदल कर गोदावरीको लोकेश्वरसे विवाह करनेके लिए बाध्य करता है । दिनेशकी प्रसन्नता और उसकी 'आध्यात्मिक साधना' की सफलताके ,लिए गोदावरी, लोकेश्वरसे विवाह कर लेती है । अपने प्रियतमके प्रेम-सम्पर्कसे वचिता गोदावरी अपना मन बहलानेके लिए लोक-सेवाके कामोमे लग जाती है ।

"कल्पना" मेरा मित्र हँसता हुआ कह रहा था, "कल्पना आप और कहाँसे लेकर आयेंगे, भाई साहब ? आदमीकी कल्पना इधर-उधरकी घटनाओकी काट-छाँट और जोड-तोडका ही नतीजा हुआ करती है। गोदावरी, दिनेश और लोकेश्वर इस दुनियाकी, आपके पडोसके लखनऊ जिलेकी ही सच्ची और ताजी असलियतें है, उनके नाम भी करीब-करीब ये ही है और कहानीमे जितनी भी घटनाएँ आपने लिखी है, अन्तिमको छोड, बाकी सब ठीक है। आखिरी बात आप नही लिख पाये । वह यह है कि गोदावरीका मुख्य और सबसे अधिक मादक व्यापार इन दिनो उसके प्रेमी दिनेशके व्यक्तित्वमे ही समाया हुआ है । गोदावरी और दिनेशके पारस्परिक चुम्बनोकी सख्या गोदावरी और लोकेश्वरके चुम्बनोसे कही अधिक हो चुकी है ।"

मेरा मित्र खडा होकर मुझे घूरता हुआ मेरी हैरानी पर हँस रहा था । हैरानी भी नही, वह मेरी एक सुखद जिज्ञासा ही थी, जिसे अपनी बुद्धिसे ही समझ लेनेको मै बल लगा रहा था । मै जानता था कि मेरा अभ्यागत मित्र ठीक और मतलबकी ही बात कह रहा था और उसकी बातमे मेरे लिए कोई अच्छा सन्देश भी था ।

"महाशयजी" मैने अपनी झेप मिटाते हुए उससे कहा, "अच्छा परीक्षक बननेके पहले आदमीको शऊरदार शिक्षक बनना चाहिए । आप पहेलियाँ मत बुझाइये, साफ तौर पर अपनी बात पूरी कीजिए ।"

"आपकी इस कहानीका पूरा प्लाट मैने ही अपने एक मित्रके जीवनकी

सच्ची घटनासे लेकर आपके मस्तिष्कमे भेजा है। दिनेश मेरा मित्र है—वह हमारे भाई-बन्दोमे ही है। दिनेशके ही नाते गोदावरी और लोकेश्वर मेरे परिचितोके क्षेत्रमे आये है। गोदावरीके विवाह तककी घटनाएँ मैने आपके मस्तिष्कमे कल्पनाके रूपमे भेजी थी और आखिरी ठिकाना टटोलनेके लिए मैने आपको स्वतन्त्र छोड दिया था। बस, वही आप गडबड कर बैठे, बेचारी गोदावरीको लोक-सेवामे ठूस बैठे। इससे अच्छी, दूर-व्यापी कल्पना करनेमे आप डरते है, सभी कहानी लेखक डरते है और इसी लिए इससे आगेकी कल्पनामे उनके पाठक भी घबराते है। दिनेश और गोदावरीका गहरा प्रेम क्या आपकी रायमे उनके हाथोके बढे हुए नाखूनोकी तरह कट कर मिट्टीमे मिल जाना चाहिए और एककी मौतके बाद उसका सारा खेल खत्म हो जाना चाहिए ? प्रेम तो ऐसा मिट्टीका खिलौना नही है। आपने 'लाइव्ज ऑफ एल्कियोनी' (Lives of Alcyone)* मे सौके लगभग व्यक्तियोके जन्मजन्मान्तरके सम्बन्धोका हाल पढा है, क्या उसे आप अपनी साहित्यिक लोकसेवाके लिए अपनी कल्पनाके भी काममे नही ला सकते ? कर्मके देवता गोदावरी और दिनेशके प्रेम-बन्धन-को अपने नियमके भीतर यह अवकाश दे सके है कि आज वही दिनेश—उसका नाम अब दिनकर है—गोदावरीकी गोदमे खेलता हुआ दो बरस का एक खूब सूरत बच्चा है। गोदावरी और दिनेश अपने पिछले जन्ममे गहरा स्नेह करनेवाले सगे भाई थे। इस कहानीको आप मेहरबानी करके ठीक कर लीजिए।" उसने कहा।

'लेकिन मै गोदावरी और दिनेशसे प्रत्यक्षमे मिल भी तो सकता हूँ ?' मैने कहा।

"निश्चय ! कमसे कम इतना तो मुझे करना ही था। मैने अपने

---

*Lives of Alcyone **नामक बृहद् ग्रन्थ, जिसमें एल्कियोनीके क़रीब पचास पिछले जन्मो का हाल दिया हुआ है और जो** T P.H. Adyar, Madras **द्वारा प्रकाशित हुआ है।**

वायरलेससे उन्हे यहाँ आनेका निमन्त्रण भेज दिया है । एक सप्ताह बाद वे सुविधा पाकर यहाँ आ जायगे और आपसे परिचित होकर आपके मित्र बनेगे ।"उसने मेरा समाधान किया ।

"एक ही हफ्तेकी बात है तो मै इस कहानीको तभी ठीक कर लूँगा ।" मैने कहा ।

"लेकिन उस पत्रमे तो आज-कलमे ही आपको कहानी भेजनी है ?" उसने कहा ।

"उसके लिए दूसरी कहानी लिखकर भेज दूँगा—महीपुरके फटेहाल राजकुमारकी कहानी ।"

वह हँस पडा । "आपमे जान अच्छी है । आपकी गोपा वाली कहानी भी मुझे बहुत अच्छी लगी । दरअसल कहानी लिखने वाले जिन्दादिल दोस्तोकी दोस्ती हम लोग हमेशा ढूँढते रहते है और जिनके दिमागके दर-वाजे जरा भी खुले पाते है उनमे घुस जाते है । आनेवाले ज़मानेकी दिमागी तैयारियोके लिए हमारे कप्तानोका जिन लोगोकी सेवाओकी सख्त जरूरत है उनमे ऐसे कहानी-लेखकोका भी एक खास स्थान है । मै समझता हूँ कि आप मेरे ऐसे ही एक साथी बन सकते है ।"

वह चलनेके लिए उठ खडा हुआ । मैने भी वही खडे-खडे विदाई के हाथ जोड दिये—क्योकि ऐसे दोस्तोके बारेमे यह बिल्कुल निश्चित नही होता कि उन्हे पहुँचानेके लिए कितने कदमकी दूरी तक उनके साथ जाया जा सकता है और कितने कदम चलकर वे गायब हो सकते है ।

यह मिस्टर महीप—जब तक यह हजरत मुझे दोबारा न मिले और मै इनका नाम न पूछूँ तब तक मै इन्हे महीपके नामसे ही पुकारूगा—मेरे ऐसे तीसरे दोस्त है—पहले मिस्टर वेकट, दूसरे महाशय गोपा और तीसरे यह हज़रत महीप ।

महीपके चले जानेके बाद मै सोचने लगा कि गोदावरी और दिनेशका प्यार अब भी चल रहा है और वे सब एक सप्ताहके बाद मुझसे मिलेगे ।

निकट समस्या

एक राजाके पाँच लडके थे। ये पाँचो उसकी काफी बडी उम्रमे पैदा हुए थे।

एक दिन राजाने अपने पाँचो बेटोको बुलाया और कहा—

"मेरे बुढापेके दिन भी पूरे हो आये है और अब किसी भी दिन मुझे इस ससारसे बिदा होना पड सकता है। हमारे वशके नियमके अनुसार तो तुममेसे सबसे बडे कुमारको राजगद्दी मिलनी चाहिए लेकिन मै इस नियममे कुछ सुधार करना चाहता हूँ। तुममेसे जो राजकुमार आजसे लेकर अगले पच्चीस वर्षके भीतरकी प्रजाकी सबसे बडी और समीपवर्ती समस्याको खोजकर प्रजाकी तत्सम्बन्धी सेवा करेगा उसे ही मै राजगद्दी पर बिठाना चाहूँगा। तुम सभी बताओ प्रजाकी सबसे बडी और समीपवर्ती समस्या क्या हो सकती है।"

बडे राजकुमारने कहा, "हमारे देशमे अन्नकी अभी कमी है। मै अन्नकी उपज इतनी बढाऊँगा कि हर आदमीको भर पेट अच्छेसे अच्छा अन्न मिलने लगे।"

दूसरे राजकुमारने कहा, "राज्यमे बीमारियोका दौरा अक्सर हो जाता है और लोगोको जितना स्वस्थ और बलिष्ठ होना चाहिए उतने नही है। मै स्वास्थ्य और शारीरिक शक्तिके साधनोका प्रचार बढाऊँगा।"

तीसरेने कहा, "हमारा राज्य दूसरे समृद्ध राज्योके मुकाबले व्यापार-उद्योगमे बहुत पिछडा हुआ है। मै व्यापार और उद्योगकी उन्नति करूँगा।"

चौथेने कहा, "मै शत्रु राजाओके आक्रमणोसे राज्यको सुरक्षित करने-

के लिए राज्यका विस्तार करूँगा। आस-पासके राजाओको जीतकर अपना चक्रवर्ती राज्य स्थापित करूँगा। तभी प्रजाको सुखी करनेके साधन जुट सकेगे।"

पाँचवेने कहा—"मै कला, विज्ञान और शिक्षाका प्रचार करूँगा। जब तक हमारी शिक्षा और सस्कृतिकी जडे मजबूत न होगी तब तक न राज्य-प्रबन्ध सुगमतापूर्वक चल सकेगा और न प्रजा ही जीवनके सुखोको समझ सकेगी।"

राजाने कहा, "तुम लोगोके विचार बहुत ठीक है। ये पाँचो ऐसी बाते है जिनमेसे एक बिना भी राजा और प्रजाका काम नही चल सकता। तुम लोग जाकर अपनी-अपनी पसन्दके काम करो। अगले पच्चीस वर्षके लिए सबसे अधिक व्यापक समस्याको खोजकर जो प्रजाकी सबसे बडी सेवा करेगा, वही गद्दीका मालिक बनेगा।"

बडे राजकुमारको छोड शेष चारो राजाकी इस बातसे मन ही मन बहुत प्रसन्न हुए। उनमेसे हरेक समझता था कि उसका बताया हुआ काम ही प्रजाकी वर्तमान समयकी सबसे बडी समस्याका हल है।

इसके बाद राजाने राजगुरुको बुलवाया और उनसे निवेदन किया—

"गुरुदेव! मुझे अपने इन पाँचो बेटोसे कोई बडी आशा नही है। मेरी मृत्युके बाद राजकाज आप ही सम्हाले और पच्चीस वर्ष बाद जिस कुमारको सबसे अधिक योग्य देखे उसे ही राजगद्दी दे दे—अभी तो ये सब बच्चे ही है।"

राजगुरु मुसकराये! उन्होने कहा "राजर्षि, मै आपकी इच्छाको समझता हूँ। आप जैसे अवतारी राजाओसे ही ससारका शासन चल रहा है। आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।"

उसके अगले वर्ष ही राजाकी मृत्यु हो गई। राजगुरुकी आज्ञानुसार मन्त्रिगण राजकाज चलाने लगे। पाँचो राजकुमार अपने-अपने कार्यमे

सफलता पानेके लिए जी जानसे जुट गय । उनके प्रयत्नोसे राज्यकी दशा तेजीसे सुधरने लगी । राज्यका विस्तार भी पहलेसे अधिक हो गया ।

पच्चीस वर्ष पूरे होने पर राजगुरुने पाँचो राजकुमारोको राजदरबारमे एकत्र किया ।

"प्रजाकी सबसे बडी समस्या, जिसने पिछले पच्चीस वर्षोमे प्रजाको सबसे अधिक प्रभावित किया हो क्या है ?" राजगुरुने उनसे पूछा ।

पाँचो राजकुमारोने अपने-अपने कामको ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हुए, उसीके अनुसार उत्तर दिये ।

उन पाँचोके उत्तरोसे सन्तुष्ट न होकर राजगुरुने राजाके दासी-पुत्र को भी दरबारमे बुला भेजा । दिवगत राजाका, एक दासीके पेटसे उत्पन्न यह एक पुत्र और था । वह आयुमे इन पाँचोसे वडा था । प्रजा और राजपरिवारके विचारानुसार वह गद्दीका अधिकारी नही हो सकता था, इसीलिए राजाने दूसरा विवाह करके, दूसरी रानीके गर्भसे, ढलती आयुमे, ये पाँच पुत्र पाये थे । पहली रानीसे उनकी कोई सन्तान नही थी । इस दासी-पुत्र मे राजकुमारके योग्य कोई गुण नही दीखते थे । उसने समुद्रके किनारे एक कुटिया बना ली थी और अक्सर वही बैठकर बाँसुरी बजाया करता था, और बस्तियोमे जाकर प्रजा-जनोको इकट्ठाकर उन्हे तरह-तरहकी कथाएँ सुनाया करता था । लोग उसे स्नेह और आदरकी दृष्टिमे देखने लगे थे, फिर भी राजकुलका वैभव और तेज उसमे बिलकुल नही था ।

उस दासी-पुत्रके दरबारमे आने पर राजगुरुने उससे भी वही प्रश्न पूछा ।

"मृत्यु । प्रजाकी सबसे बडी समस्या, जिसने पिछले पच्चीस वर्षोमे प्रजाको सबसे अधिक प्रभावित किया है, वह मृत्यु है ।" उसने उत्तर दिया ।

राजगुरुकी आज्ञानुसार अनुसन्धानका एक नया विभाग खोला गया । भूख, रोग, निर्धनता, युद्ध, अशिक्षा और मृत्यु—इन छ समस्याओमेसे कौन-सी समस्या ऐसी है जिसने राज्यकी साटे चार करोड प्रजा अथवा

उसके पौन करोड परिवारोमे से सबसे अधिकको प्रभावित किया हो । इसी खोजके आँकडे एकत्र करनेके लिए यह विभाग खोला गया । अनुसन्धान विभागने पता लगाया कि मृत्यु ही पिछली पच्चीस वर्षोकी, इन छहो समस्याओमे प्रजाकी सबसे बडी समस्या रही है । पिछले पच्चीस वर्षोमे एक करोड प्रजाजन—एक चौथाई जन सख्याका तो इसने व्यक्तिगत अपहरण किया है । बडे से बडे युद्धमे—अब तकके सभी युद्धोमे मिलाकर भी—इतने व्यक्ति नही मारे गये । देशके पौन करोड परिवारोमेसे एक भी ऐसा नही जिस पर इसने आक्रमण करके,किसी न किसी परिजनको उठाकर, सारे परिवारको दुखी न किया हो । एक भी दिन ऐसा नही बीता जिस दिन इसने अपने कामसे प्रजाको छुट्टी मनाने दी हो । दूसरी समस्याएँ आती-जाती और रोक थामके भीतर रही है और उनकी पहुँचाई हुई हानि चिरस्थाई नही रही है, लेकिन मृत्युने प्रजाकी जो क्षति की वह कभी भी पूरी नही हो सकी । इसलिए मृत्यु ही प्रजाकी सबसे बडी समस्या है ।

दासी-पुत्रने पिछले तीस वर्षोमे सारी प्रजामे घूम-घूम कर लोगोको जीवन और मृत्युके बहुतसे भेद बताये थे । शास्त्रो और पुराणोकी कथाएँ और तरह-तरहके दृष्टान्त सुनाकर उसने लोगोके मनमे यह बसा दिया था कि मनुष्य अमर है, वह बार-बार शरीर धारण करता है, मरनेका दु ख नही करना चाहिए, मरनेसे डरना नही चाहिए और ऐसे ओछेपनके काम नही करना चाहिए, जिनसे इस जीवनमे तो कुछ लाभ हो जाय, लेकिन बादमे दु ख उठाना पडे । उसके उपदेशोसे लोग समझने लगे थे कि जीवन शरीरकी मृत्युके बाद भी जारी रहता है और केवल इस जन्ममे ही सुख उठानेकी धुनमे आगेकी बातको भूले रहना मूर्खता है, जब कि मृत्युके बादकी अवस्थाकी भी जानकारी मनुष्यको जीते-जी थोडी-बहुत हो सकती है ।

राजगुरुने इस दासी-पुत्रको ही राजतिलक दे दिया । प्रजा उससे

प्रेम करने लगी थी, इसलिए उसने भी अब इस अन-हुई प्रथाका विरोध नही किया। आखिर तो वही सबसे बडा राजकुमार भी था।

गद्दी पर बैठते ही उसने अपनी सैन्य-शक्ति बढानी शुरू की। पडोसके कुछ राजे मिलकर उस राज्य पर आक्रमण करनेकी तैयारी बहुत दिनोसे कर रहे थे। नये राजाके आदेश पर प्रजाजन बडी सख्यामे सेनामे भर्ती होनेके लिए जुड आये, सैन्य-दलोमे भी मृत्यु, परलोक और जन्मजन्मान्तरके जीवनके सम्बन्धमे बहुत-सी बाते बताई जाती थी और लोगोके दिलोसे मृत्युका डर बहुत कम हो गया था।

राजाको गद्दी पर बैठे दो वर्ष भी पूरे न हुए थे कि आस-पासके राजाओ-ने राज्य पर आक्रमण कर दिया। इस राज्यकी तैयारियाँ इसके लिए यथेष्ट हो चुकी थी। घनघोर युद्ध हुआ, लाखो व्यक्ति उसमे काम आये लेकिन अन्तमे शत्रुओकी ही हार हुई और इस राज्यकी सीमा बहुत अधिक बढ गई।

सबसे बडे राजकुमारकी खोजी हुई 'निकट-समस्या' प्रजाके बच्चे-बच्चेकी दृष्टिमे निकट-समस्या सिद्ध हो गई थी।
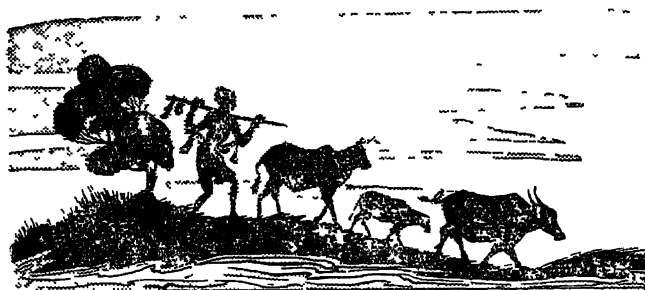
फ्रीमैसन

घटना ६ हजार वर्ष पहलेकी है ।

शासन और सभ्यताके दृष्टिकोणसे मिस्र देशकी गणना उन दिनों ससारके समृद्ध देशोमे होती थी । भूमध्यसागरके असीरा नामक छोटे-से द्वीपका शासन कुछ ही पहले मिस्रकी अधीनतामे आया था । असीराका शासक बडा अत्याचारी और पाशविक था, उसकी प्रजा आये दिन उसके विरुद्ध विद्रोह करती रहती थी । ऐसे ही एक जन-विद्रोहके फलस्वरूप असीरा पर मिस्रके शासकको आक्रमण करना पडा था और उसीमे अत्याचारी राजाकी मृत्यु हो गई थी । मिस्रके शासनकी छत्र-छायामे असीराकी शान्ति और समृद्धिका आभास दीखने लगा था । इस कथाके लिए इतनी ही पृष्ठ-भूमिका यथेष्ट है ।

× × ×

भव्य पिरैमिडोके देश मिस्रमे—यह देश इस कथाके अनुसार उस समय भी पिरैमिडोका देश था, यद्यपि आजके अधिकाश इतिहासकार मिस्रके पिरैमिड-भवनोकी इतनी लम्बी आयु माननेके लिए तैयार नही है—नील नदीके किनारे बसा हुआ विशाल नगर पिरोसा था ।

पिरोसा नगरके उस कोनेमे, जहाँ अपेक्षाकृत निर्धन और निम्नश्रेणीके लोग रहते थे, एक शाम एक नवयुवकने एक घरके द्वार पर थपकी दी ।

घरके मालिक, एक अधेड आयुके पुरुषने द्वार खोला । उसने देखा, बाहर चिथडे लपेटे एक थका-माँदा, लेकिन सुन्दर नवयुवक खडा है ।

"रातका भोजन और विश्राम चाहता हूँ । हो सके तो जीवन-निर्वाहके लिए कोई मजदूरी भी । आप दे सकेंगे ?" नवयुवकने याचना की ।

"अवश्य मिलेगा । लेकिन तुम्हारा नाम, निवासस्थान परिचय ?"

"यह न पूछिए। जानने पर शायद आप मुझे एक रातका भोजन और विश्राम भी अपने घरमे न दे सकेंगे। इन्ही प्रश्नोका उत्तर न देने-से मुझे किसीने स्थान नही दिया। क्या बिना ये बाते जाने आप भी मुझे एक रातका आश्रय नही दे सकेगे?"

"दे सकूँगा" भद्र पुरुषने क्षणभर सोचनेके बाद कहा, "तुम चोर तो नही हो?"

"नही"

"वन्दीगृहसे छूटकर भागे हुए अपराधी तो नही हो?"

"नही"

"किसीके खरीदे हुए दास तो नही हो?"

"नही"

"तब आओ। तुम मेरे सम्मानित अतिथि होगे। देखनेमे भी तुम मुझे सुन्दर, सुसस्कृत और आकर्षक जान पडते हो।"

नवयुवक निशोरस अपने आश्रयदाता साइलसके परिवारका एक प्रिय सदस्य बन गया। निशोरस असीराके अत्याचारी राजा नाइशोरसका पुत्र था। नाइशोरसके सपरिवार निधनके पश्चात् अपनी प्रजाके घातक निशानोसे बच कर वह किसी प्रकार मिस्र देशमे भाग आया था।

साइलसने जब राजकुमार निशोरसका यह परिचय जाना तो उसे बडी प्रसन्नता हुई और अपने आश्रयदानको उसने राज और समाजके नियमोके सर्वथा अनुकूल और नैतिकतापूर्ण बताकर निशोरसको अभय कर दिया।

"इस परिचयमे तो कोई ऐसी बात नही है जिसके कारण मिस्र देशका कोई भी सदस्य तुम्हे आश्रय देनेमे हिचक करता। असीराकी प्रजा या राज-परिवारके किसी भी व्यक्तिसे मिस्र-निवासीकी कोई शत्रुता नही है, बल्कि अब तो दोनो देशोके बीच सहयोग और भ्रातृभावका बन्धन और भी दृढ हो गया है। अपने पिताके अत्याचारोके लिए तुम तनिक भी उत्तर-

दायी नही हो। असीराके एक श्रेष्ठ नागरिकके रूपमे तुम मिस्रकी प्रजा और शासक वर्ग, दोनोके लिए आदरणीय हो।" साइलसने अपना मत प्रकट किया।

विदेशियोके लिए मिस्र देशका प्रमाणित नागरिक बननेके लिए उन दिनो यह आवश्यक था कि वे अपनी हैसियत, रुचि और योग्यताके अनुसार किसी-न-किसी सामाजिक सभा-सगठनके सदस्य बन जाये।

नियमानुसार साइलसने निशोरसको एक समाज विशेषका सदस्य बनानेके लिए प्रस्तुत किया।

"निशोरस!" निशोरसके कानमे उस समाजके सभा-मन्दिरमे पहली बार लाये जाने पर एक अपरिचित स्वर पडा।

"तुम हमारे समाज-विशेषमे सम्मिलित होना चाहते हो, किस उद्देश्यसे ?"

"मनुष्योके एक आदरणीय समाजमे सम्मिलित होनेके उद्देश्यसे, मनुष्यकी सेवा करने और इसके लिए अपने भीतर योग्यता जगानेके उद्देश्यसे।" निशोरसका उत्तर था।

"उद्देश्य तुम्हारा आदरणीय है, लेकिन जिन मनुष्योके समाज-विशेषमे तुम सम्मिलित होना चाहते हो, क्या उन्हे देख भी रहे हो ?"

"नही, क्योकि मै अन्धकारमे हूँ।"

निशोरसके चारो ओर सभाके प्रथम प्रवेशके नियमानुसार, सचमुच अन्धकारका एक पर्दा था और वह सभाकी उपस्थिति और दृश्यको नही देख सकता था।

"इस सभा-मन्दिरके बाहर भी, जहाँसे तुम अभी आये हो, क्या ऐसा प्रकाश नही था, जिसमे तुम मनुष्योको देख सकते ?"

"नही, इस मन्दिरके बाहर भी ऐसा प्रकाश नही था, जिसमे मै मनुष्योको देख सकता। बाहरके प्रकाशमे मै केवल मनुष्योके ऊपरी शरीरको ही देख सकता था, मनुष्योको नही।"

"तब तुम मनुष्योको देखनेकी आशा किसके सहारे करते हो ?"

"प्रकाशके सहारे ।"

"प्रकाशके सहारे यदि तुम मनुष्योको देख सकोगे तो उनके साथ क्या करोगे ?"

"उनसे प्रेम और उनकी सेवा ।"

"उनसे प्रेम और उनकी सेवाके लिए क्या तुम सौ वर्ष जीवित रहनेकी प्रतिज्ञा करते हो ?"

"ऐसा करनेमे असमर्थ हूँ ।"

"पचास वर्ष ?"

"असमर्थ हूँ ।"

"पाँच वर्ष ?"

"असमर्थ हूँ ।"

"पाँच दिन ?"

"असमर्थ हूँ ।"

"पाँच घटे ?"

"जीवित तो पाँच पल भी रहनेकी कोई प्रतिज्ञा नही कर सकता । जीवन अनिश्चित है, मृत्यु किसी भी क्षण आ सकती है ।"

"तब तुम किस प्रकार उनसे प्रेम और उनकी सेवा करनेकी आशा रखते हो ?"

"मै जीवनमे और इस जीवनके पश्चात् मृत्युमे उनसे प्रेम और उनकी सेवा करनेकी आशा रखता हूँ ।"

"तुम्हारी आशा प्रशसनीय है; लेकिन क्या तुम्हे जीवनके पश्चात् मृत्युकी दशाका अनुभव और उस दशामे प्रेम और सेवा करनेका अभ्यास है ?"

'नही है, लेकिन मैने सुना है कि मिस्र देशमे प्रत्येक ऐसे मनुष्यको, जो युवावस्था पर पहुँचकर, मनुष्योके किसी आदरणीय समाजमे सम्मिलित होने आता है, इस प्रकारका अनुभव और अभ्यास कराया जाता है ।"

"तुमने जो सुना, ठीक है। भौतिक जीवन और भौतिक मृत्यु मनुष्यके जीवनके ही दो, एकके बाद एक चलनेवाले, युग है। पहला उसके जीवनकी रात है, दूसरा दिन है। पहलेमे अपेक्षाकृत अन्धकार है, दूसरेमे अपेक्षाकृत प्रकाश। दिन-रातकी भाँति दोनोका क्रम, मनुष्यके जीवनके महायुगकी पूर्णता तकके लिए अटल है। सारी मानवता एक है, एकके अन्धकारमे सबका अन्धकार है और एकके प्रकाशमे सबका प्रकाश। कोई मनुष्य अकेले अपने लिए स्थायी प्रकाश या इस प्रकाश-अन्धकार-चक्रके बन्धनसे छुटकारा नही पा सकता और इसीलिए, मनुष्यके लिए दूसरोकी सेवामे ही अपनी सेवा और दूसरोके कल्याणमे ही अपना कल्याण है। मनुष्यके कल्याणके लिए विश्वकर्मा 'एमन-रा' (परमात्मा) का एक निश्चित विधान है। उस विधानका, निशोरस, क्या तुम साक्षात्कार करना चाहते हो ?"

"हाँ, चाहता हूँ।"

"तुमने अपने किस उपकरणके सहारे देखनेका अभ्यास किया है ?"

"आँखोके सहारे।"

"किस उपकरणके सहारे सुननेका अभ्यास किया है ?"

"कानोके सहारे।"

"किन साधनोके सहारे सजग और गतिशील होनेका अभ्यास किया है ?"

"सूर्यताप, विद्युत् शक्ति, माध्याकर्षण शक्ति आदि भौतिक शक्तियोके सहारे।"

"तब इसी प्रकार तुम जीवनके अन्धकार-कालीन देखने-सुननेके उपकरणो और गतिशील होनेके साधनोकी भाँति मृत्युके प्रकाशकालीन देखने-सुननेके उपकरणोसे देखो-सुनोगे और गतिशील होनेके साधनोसे गतिशील होगे। तुम्हारे जीवनके उस प्रकाशकालीन युगके लिए तुम्हारे ये उपकरण अधिक सूक्ष्म और तीव्र होगे और उसके साधनोके रूपमे सौर मण्डलकी सूक्ष्म और तीव्रतर शक्तियोसे तुम काम लोगे, क्योकि तुम्हारे इस भौतिक

जीवनके उपकरण और साधन तुम्हारे व्यापक जीवनके उपकरणो और साधनोकी ही छाया है। क्या तुम अपने उन उपकरणो और उन साधनोका उपयोग सीखनेके लिए आवश्यक परिश्रम करनेको तैयार हो ?"

"तैयार हूँ।"

"वह परिश्रम तुम किस रूपमे करोगे ?"

"अपनी बुद्धिके अनुसार प्रतिदिन नियमित अध्ययन, चिन्तन और मनुष्योकी सेवाके रूपमे जब तक कि उसकी कोई विशेष विधि मुझे न मिल जाय।"

"तुम्हारा निश्चय सराहनीय है, अपने नये उपकरणो और साधनोका उपयोग सीख लेनेपर तुम मनुष्यमात्रके और विशेषतया इस समाजके अपने बन्धुओसे किस प्रकार मिलोगे ?"

"समताके धरातलपर।"

"किस प्रकार व्यवहार करोगे ?"

"सत्य और सिधाईके स्तम्भ पर।"

"और किस प्रकार अलग रहोगे ?"

"सीधे, समकोण पर फूटनेवाले मार्गोपर।"

"तब तुम युवावस्था प्राप्त और स्वतत्र मनुष्योके इस समाजमे सम्मिलित होनेके योग्य हो। मानव-जगत् और मानव हृदयके कुछ गूढ रहस्य इस समाजकी सदस्यताके उपलक्ष्यमे तुम्हे बताये जायेगे। क्या तुम प्रतिज्ञा करते हो कि निष्प्राण जिज्ञासा और छिछले कुतूहलके आगे हमारे समाजके नियमोके विरुद्ध किसीके सामने उन रहस्योका उद्घाटन करके उन रहस्योका अपमान और दुरुपयोग न करोगे ?"

"मै प्रतिज्ञा करता हूँ।"

"तब तुम्हे हमारे इस आदर-प्राप्त समाजके परम्परागत नियमानुसार आवश्यक शपथ लेनी होगी। वह शपथ तुम्हारे किसी भी सामाजिक,

नैतिक और धार्मिक कर्तव्यमे बाधक नही होगी । तुम इसके लिए तैयार हो ?"

"तैयार हूँ ।"

"तब तीन पग आगे बढो" निशोरसको आदेश मिला, और उस तीन पगकी यात्रा वह अन्धकारके उस घेरेसे निकलकर, जिसके बाहर उसकी दृष्टि भी नही जा पाती थी, अब प्रकाशमे आ गया ।

सभा-मन्दिरके प्रधान आसन पर दृष्टि पडते ही उसने देखा, उसका उदार आतिथ्यकार साइलस ही उस समय सभाके प्रधान पदपर आरूढ था और जो अधिकारी अबतक उसके साथ प्रश्नोत्तर कर रहा था, वह पिरोसा प्रान्तका प्रधान शासक राज्-प्रतिनिधि था । सभाकी भव्यतासे उसकी आँखे चकाचौध हो गईं ।

निशोरसको विधिवत् सस्कारके साथ उस सभाके सदस्योमे सम्मिलित कर लिया गया ।

× × ×

निशोरसका नाम इस समाजकी देशव्यापी शाखाओमे तेज़ीके साथ फैल गया । समाजकी सक्रियताओमे उसकी गति तीव्रतासे बढ चली । शीघ्र ही इस समाजकी राजधानी-शाखासे उसके लिए निमत्रण आया । राजधानी शाखाके प्रथम समारोहमे सम्मिलित होनेके लिए जाते समय सभा-द्वारके द्वारपालने निशोरसको रोक कर, समीपवर्ती दूसरे द्वारकी ओर सकेत करके कहा —

"निशोरस, मिस्र-सम्राट्के साथ आजके सभा-भोजमे भोजन करने वालोका मार्ग उस द्वारसे है और भोजन परोसनेवाले सेवकोका मार्ग इस द्वारसे है । निश्चय ही आज मिस्र-सम्राट् तुम्हारे प्रथम-मिलनकी प्रतीक्षामे है ।".

"लेकिन मै तो परोसनेवालोकी पक्तिमे सम्मिलित होना चाहता हूँ,

छायाकी ज्योति

सेक्रेटेरियटकी ओरसे आकर एक नई चमचमाती कार हज़रतगजके चौराहे पर रुकी और उसमेसे एक तरुणी उतरी। वह निस्सन्देह एक अत्यन्त रूपवती नवयुवती थी। बगलवाली दूकानके बरामदेमे गुजरते हुए एक युवक पर उसकी दृष्टि पडी। युवकसे दृष्टि मिलते ही उसने अपने बाये कन्धेको एक मोहक अनोखी अदा भरा झोका दिया और मुसकुराती हुई बरामदेके ऊपर चढ गई।

"शुक्रिया।"

युवकने उसके पाससे निकलते हुए धीमे स्वरमे कहा। तरुणी रुक गई।

"आपका मतलब ?" गर्दन घुमाकर उसने युवकको त्योरी चढी दृष्टिसे देखते हुए कहा।

"मतलब ?" युवक भी रुक गया था, "शुक्रियाका मतलब, थैंक्स।"

"कैसा थैंक्स मै पूछती हूँ।" युवककी चप्पल, पायजामा और आँखो पर चढती हुई दृष्टि डालकर उसने कुछ तीखे स्वरमे पूछा।

"आपने मुझे एक सुन्दर अदाके साथ सुन्दर दीखने वाली निगाहसे देखा था! मुझे उससे बडा सुख मिला। आप खुद भी इतनी सुन्दर है। क्या इस कृपाभरी दृष्टिके बदले मुझे एक शुक्रिया देनेका भी हक नही है ?"

"शर्म है। आपको लेडीज़की इज्जत करनी चाहिए! जाइये!" कहती-कहती वह एक बार फिर दबे ओठो मुसकुरा उठी और सामनेवाली दूकानकी पहली सीढी पर उसने कदम रख दिया।

"मै आपको इस बातका बहुत अच्छा जवाब दे सकता हूँ। लेकिन आप अभी नही सुनेगी। कभी सुनना चाहे तो किसी भी दिन डाकखानेके

पार्कवाले उस पेडके नीचे चार और छ. के बीच शामको आ सकती है। मै वही बैठ कर पढता-लिखता हूँ।" युवकने कहा।

"जाइये जाइये, शराफत सीखिये। पहले जवाब देने लायक अपनी शकल तो बनाइये" कहती हुई वह खटखट दूकानकी सीढियो पर चढ गई।

युवक अपनी राह चला गया।

दूसरे दिन साढे चार बजे शामको वही कार युवकके बताये हुए स्थल के पास सडक पर आकर रुकी। कारमे आज उस तरुणीके साथ एक नवयुवती और भी थी। वृक्षके नीचे एक बेचपर जहाँ वह युवक बैठा था वही ये दोनो जा पहुँची।

"आप ही कल शाम मुझे चौराहे वाली दूकानके पास मिले थे?" उसी युवतीने युवकके पास पहुँचकर कहा।

"जी" युवकने अनायास दोनो युवतियोको अपने पास खडी पाकर बेचसे उनके स्वागतार्थ उठते हुए कहा। अपनी कापी, और उस पर चलते हुए फाउटेन पेनको उसने बन्द कर दिया था।

"कहिये, आप मेरी किस बातका क्या जवाब देना चाहते थे?"

"आपने मुझे शराफत सीखने और जवाव देनेके लायक शकल बनानेकी सलाह दी थी। अगर मै ये दोनो बाते कर लूँ तो आप मुझे अपना दोस्त मान सकती है? मेरी बाते सुननेके लिए वक्त दे सकती है?"

"आपको वक्त?" गम्भीर मुद्रा बनाकर उस तरुणीने कहा, "आप कभी मेरे मकान पर तशरीफ ला सकते है क्या?"

"बेशक, क्यो नही!" युवकने उत्सुक-से स्वरमे कहा। "और जूतो पर पालिश भी अच्छी तरह कर सकते है?" दूसरी तरुणीने कहा और दोनो सहेलियॉ खिलखिला कर हँस उठी।

"हॉ, कर तो सकता हूँ।" युवकने सरल भावसे उत्तर दिया।

"तब आप कल तीसरे पहर तीन बजे मेरी कोठी पर आ सकते है।" तरुणीने कहा।"

"और आपका काम ठीक हुआ तो हर रोज उसी वक्त पर आपका आना जारी रह सकता है।" उसकी सहेलीने योग दिया और फिर खिलखिला कर हँस पडी।

"मै कल तीन बजे ज़रूर पहुँचूँगा। आप मुझे अपना पता बताये।" युवककी सहज उत्सुकतामे कोई परिवर्तन नही था।

"इनका नाम है मिस छाया" दूसरी लडकीने उत्तर दिया और साथ ही एक मिनिस्टर साहबकी कोठीका पता बता दिया। उसने बताया कि वह मिनिस्टर साहब छायाके मैटरनल अंकिल (मामा) है।

"मै कल जरूर आपके घर पहुँचूँगा।" युवकने उसी स्वरमे कहा।

"हम लोगोको बडी खुशी होगी। अच्छी दिलचस्पी रहेगी। हम आपको चाय भी पिलायेगी।" तरुणीने अपनी सहेलीका हाथ पकडकर आगे बढते हुए कहा।

युवक बेंचपर बैठकर अपने काममे फिर लग गया। दोनो नवयुवतियाँ पासके लॉनमे टहलने लगी। उनके आगे-पीछे टहलनेका मार्ग युवकके समीपसे ही गुजरता था। उनकी पारस्परिक बातचीतका विषय बहुत कुछ वह युवक ही था, और वे बीच-बीचमे उसे देख भी लेती थी और उनकी बातोमे हँसीकी खिलखिलाहटका भी पूरा साथ था।

"तो मिस्टर आप करते क्या है?" युवकने देखा वे दोनो फिर उसके पास खडी थी और उसकी प्रथम-परिचित तरुणी ही यह प्रश्न पूछ रही थी।

"मै?" युवक फिर उठ बैठा और बेंचकी ओर संकेत करते हुए बोला, "क्या आप थोडी देर इस बेंच पर बैठना पसन्द करेगी?"

वे दोनो एक शिष्टाचारपूर्ण चेष्टाके साथ बेंचके एक कोने पर बैठ गईं। उनसे कुछ फासले पर युवक भी उसी बेंच पर बैठ गया।

"मैने इसी यूनिवर्सिटीसे पिछले साल सोशीयालॉजीमे एम. ए. किया है और अब रिसर्चके साथ Barriers of Sex in Hindu

Society (हिन्दू समाजमे यौन-भेदकी बाधाएँ) पर थीसिस तैयार कर रहा हूँ ।

"थी—सिस !" तरुणीकी भावभगी एकदम बदल गई, "बैरियर्स ऑफ सेक्स इन हिन्दू सोसायटी पर ? बहुत बडी चीज़ है !"

"बडी चीज़ तो है ही । हिन्दी मासिक पत्रिका 'वसुमती' मे मै इसी आधार पर एक लेखमाला भी लिख रहा हूँ । उसका टाइटिल है, 'आजकी तरुणी और उसका भविष्य ।'

"ओह ! उसके लेखक आप है !" तरुणीके मुख पर अबकी बार एक सकोच-भरी लालिमा दौड गई ।

"श्री रूपदर्शी ?" दूसरी युवतीने पूछा ।

"जी हाँ, मै रूपदर्शी नामसे ही हिन्दीमे लिखता हूँ । मेरा नाम है राबर्ट इवैजलिन ।

"राबर्ट इवैजलिन ! आप क्रिश्चियन है, लेकिन हिन्दीमे—"

"आप हमारे मज़ाकका बुरा तो नही माने ?" छायाने अपनी सहेलीकी बात पूरी होनेके पहले ही कहा, "हम लोग दोस्तो मे ऐसी ही शरारतभरी बाते कर बैठती है । आप बुरा माने हो तो हमे उसके लिए माफ करेगे ?" उसके स्वरमे सचमुच गहरा पछतावा था और स्निग्ध विनय भी ।

"मै बुरा नही मानता छायाजी, आप निश्चित रहे । मै तो कलसे ही आपका बहुत कृतज्ञ हूँ । आपने कल मुझसे बिना परिचयके जितनी बात की, उतनी कोई मामूली भली लडकी नही कर सकती थी । आपकी आजकी बातचीतमे भी मुझे बडा रस मिला है ।"

छायाने पहली बार युबकको स्त्री-सुलभ, सकुचाई हुई, फिर भी ध्यान पूर्ण दृष्टिसे देखा । उसने सोचा, यह युवक केवल भावुक और सुसस्कृत ही नही, यथेष्ट सुन्दर और आकर्षक भी है ।

"मै आपसे इस समय एक बात पूछूँ, कोई हर्ज तो न होगा ?" छायाने सम्भवत इवेजलिनकी व्यस्तताके विचारसे कहा ।

"जरूर पूछिये। मेरा समय और भी अच्छे काममे बीतेगा।"

"अभी सवा पाँच बजे है" छायाने अपने हाथकी घडी देखते हुए कहा, "आप छ बजे तक यहाँ रुकेगे ?"

"हाँ, पौन घटा मै बडी खुशीके साथ आपसे बातचीत करनेको दे सकता हूँ।"

"तब यह बताइए कि आप मेरी कलकी बातका, हालाँकि उसमे मेरी ढिठाई भी बहुत थी, क्या जवाब देना चाहते थे ?"

"उस जवाबके पहले मुझे आपसे कुछ बाते पूछनी पडेगी।"

"शौकसे पूछिये।"

"पूछूँ ?" युवकने एक वार दूसरी लडकीकी ओर दृष्टि फेकते हुए पूछा।

"जरूर पूछिए। मेरी सहेली अरुणा मेरी मदद ही करेगी।"

जब आप राह चलते किसी अपरिचित नवयुवकको देख कर उस तरह मुसकरा देती है और आपकी दूसरी चेष्टाएँ भी मोहक हो उठती है, तब ऐसा करनेमे आपका मतलब क्या होता है ? आप अपने मनमे क्या सोचती है ?"

छाया सोचती हुई चुप रह गई।

"अरुणा भी आपकी मदद करेगी।" युवकने अरुणाकी ओर देखकर कहा।

"मै यह ऐसा कुछ भी नही करती। कमसे कम जानबूझकर तो नही करती।" छायाने ही उत्तर दिया।

"आप झूठ बोलती है।" इवैंजलिनने मुसकराहट भरे, फिर भी स्निग्ध-तर स्वरमे कहा।

"मुमकिन है—"

"आप ठीक कहते है" अरुणा बोल उठी, "और इसका जवाब सीधा है। यह हर नवयुवकको अपने रूप पर मुग्ध करना चाहती है, और अपनी प्रशसा भी। यह इसके लिए स्वाभाविक है।"

"मै इनकी रायसे सहमत हूँ।" इवैजलिनने छायाको सम्बोधित कर कहा, "और जिन नवयुवको पर आप स्वय भी थोडा बहुत मुग्ध हो सकती है, जिनकी थोडी-बहुत प्रशसा कर सकती है, केवल उन्हीको नही, आप हर राह चलने वाले मामूली आदमीको भी इसी तरह मुग्ध करना चाहती है, यह मेरी निश्चित धारणा है।" इवैजलिनने आरोपके अर्थमे कहा।

"अगर ऐसा चाहती हूँ और करती भी हूँ तो इसमे बुराई ?" छायाने भी मानो सशस्त्र होकर सुदृढ स्वरमे पूछा।

"बुराई !" इवैजलिन ठठाकर हँस पडा, "मै कब कहता हूँ कि इसमे कोई बुराई है ! मै तो आपकी एक बहुत बडी अच्छाईकी चर्चा कर रहा हूँ। मै मानता हूँ कि समाजमे प्रत्येक स्त्रीको प्रत्येक पुरुषकी दृष्टिमे सुन्दर और आकर्षक दीखना चाहिए। अपने रूप और माधुर्यका सुख सदैव अपने इर्द-गिर्द बिखेरते चलना चाहिए।"

"छायाकी बिल्कुल यही फिलासफी है" अरुणा बोल उठी "और मै भी इससे सहमत हूँ।"

"और मैने यह फिलासफी अरुणासे ही सीखी है।" छायाने अपनी स्वभाव-सिद्ध अधूरी-सी अँगडाई लेते हुए कहा।

"लेकिन इस अच्छाईमे एक बुराई भी है। जब आप किसी व्यक्तिको अपनेसे नीचा, कम हैसियतका या कम सुन्दर मानती हुई उसके साथ वैसा भाव-प्रदर्शन करती है तब आपके व्यवहारमे एक अनुचित कठोरता और कुरूपता आ जाती है। आपके उस मीठे प्रदर्शनके साथ जो अनुग्रह और सहृदयता होनी चाहिए वह न होकर उसकी उलटी चीज़ बीचमे आ जाती है। क्या आप कह सकती है कि आप किसी भी सामने आये हुए व्यक्ति पर उस तरह निर्दय नही होती और उसे व्यर्थ ही परेशान नही करना चाहती ?"

"मै तो ऐसा ही समझती हूँ।" छायाने कहा।

"आप इसकी गहराई तक विचार कीजिए। आपकी नेकनीयतीमे

कुछ कसर हो सकती है। जब आप किसी व्यक्तिका ध्यान इस तरह अपनी ओर आकर्षित करती है तो आप एक बहुत बडी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती है।"

"वह क्या ?"

"उसके मनमे उभरी हुई भावनाओकी आप एक हद तक ज़िम्मेदार हो जाती है। आपकी ज़िम्मेदारी हो जाती है कि उसकी भावनाओका अपनी भावनाओ-द्वारा दृढता किन्तु सहृदयतासे जवाब दे। उसके लिए अपने हृदयमे आदर और शुभ कामनाएँ पैदा करे। आप मन ही मन उससे कह सके, "आप सुन्दर स्वस्थ और हैसियतदार होवे, प्रसन्न और आकर्षक बने, मै आपका आदर करती हूँ।" उसकी तरफ अगर आप उदासीन रहती है और उसकी आन्तरिक कामनाओको छेडकर ही कोई सुख अनुभव करती है तो आप अपनी सुन्दरताको मलीन करती है।" इवैजलिनने अधिकारपूर्ण स्वरमे कहा।

"आपकी बाते मै समझ रही हूँ। मै इनके लिए बहुत कृतज्ञ हूँ। ये बहुत कीमती और विचारणीय बाते है।"

"मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी। अब शायद कल आपके घर आने पर मुझे आजसे भी कुछ अधिक मिलेगा।" इवैजलिनने स्थिर दृष्टिसे छायाको देखकर कहा।

छाया सकुचा-सी उठी। "अवश्य मिलेगा, मै आपकी राह देखूँगी।"

"मुझे जूते पर पालिश भी ." वह मुसकाने लगा था।

"जूते पर पालिश करके आप मेरे काममे हाथ बटा सकते थे, पर अब मै उस कार्यमे आपको शामिल नही करूँगी।" छायाने मानो बात सम्हाली।

"कल, याद है, कौनसा दिन है ?" इवैजलिनने पूछा।

"कल—कल मगलवार है, क्यो ?"

"कल रक्षा-बन्धनका दिन है। मै लडकियोको बहिन बनानेमे

बहुत सावधान रहता हूँ। यह बडा नाजुक और सँकरा रिश्ता है। लडके-लडकियो, स्त्री-पुरुषोके बीच सबसे अच्छा नाता मर्यादित मित्रताका ही है। फिर भी मुझे यही नाता विशेष रूपसे ठीक जँचता है। कल भाई बहिनका त्यौहार है। मेरे ईसाई होनेका तो आपको परहेज नही है ?"

काफी देर तक चुप रहकर छायाने कहा, 'बिलकुल नही।' वह दृष्टि नीची किये पृथ्वीकी ओर देखती रही। फिर उसने ऑख उठाकर इवैजलिन पर एक स्थिर-सी दृष्टि डाली, तभी उसकी ऑखोमे आँसू छलक आये।

"मै आपको राखी बाँधूगी। मेरे अबतक कोई भाई था भी नही।" छायाका गला कुछ रुँधा हुआ था । कहते-कहते उसने चलनेके लिए खडे होकर दोनो हाथ जोड दिये।

× × ×

जो लोग छाया जैसी 'आज़ाद' लडकियो पर आक्षेप करते है वे इसीलिए ऐसा करते है कि वे उनकी अन्त.-स्थित निर्मल, जगमग ज्योतिको नही देख पाते, समझ नही पाते।

अलगोज़ेवाला रावी

यह एक योग-सयोगकी ही बात है कि मेरा साहित्यिक उपनाम 'रावी' पड गया है, हज़ारो वर्ष पहले ईरानदेशके पेशेवर कहानी कहने वालोसे मेरे इस नामकरणका कोई सम्बन्ध नही है। वैसे, 'रावी' शब्दका अर्थ होता है, कहानी कहने वाला, और जिस युगकी मे यह कथा कह रहा हूँ, उससे कुछ कल्पनाशील लोगोका यह पेशा था कि वे द्वार-द्वार पर जाकर लोगोको कहानियाँ सुनाते और अपना पारिश्रमिक लेते थे।

ईरानके प्राचीन ईदान नगरमे एक बार एक परदेशी रावी आया। वह अलगोजा बजाता हुआ (अलगोज़ा दोहरी बाँसुरीकी तरहका एक बाजा होता है) ईदानकी सडको पर और गलियोमे घूमने लगा।

"कहानी सुनाएँ—कहानी सुनाएँ। शाहकी कहानी, दरगाहकी कहानी—खूनी भूतकी कहानी, जबरूतकी कहानी—शहजादीकी कहानी, छिपी-शादीकी कहानी—दिलकी कहानी, दिलदारकी कहानी—इश्ककी कहानी, गमेज़ारकी कहानी—हिन्दी मोरकी कहानी, पीले चोरकी कहानी—चीनी हूरकी कहानी, गैबी तूरकी कहानी—शाहजादेकी कहानी, अटल वादेकी कहानी—जासूसकी कहानी, काले रूसकी कहानी—बुल-बुलकी कहानी, शम्बल-पुलकी कहानी—राजा इन्दरकी कहानी, बीते चन्दरकी कहानी—गैबी यारकी कहानी, शाहीचारकी कहानी—मीठी मौतकी कहानी, सोती-सौतकी कहानी—बडी राहकी कहानी, ठडी आहकी कहानी—बहती धारकी कहानी, उस पारकी कहानी—कहानी सुनाएँ—कहानी सुनाएँ।" अलगोजेवाले रावीने एक दरवाज़ेके सामने रुककर अपनी नियमित पुकार लगाई।

मकानके ऊपरी छज्जे पर एक रूपवती तरुणीका मुख, उसके काले

नकाबके हटनेसे क्षण-भर के लिए खुला और फिर उसी आवरणमे छिप गया। आँखे चार हुई और नीचेकी गलीसे छज्जेतक एक बिजली-सी कौध गई, जिसे किसी भी पाँचवी आँखने नही देखा।

तरुणी भीतर हट गई। अलगोजेवालेने अलगोज़ेकी जोडी होटो पर लगाई और राग छेड दिया।

दो क्षण बाद, गलीके पास मकानके नीचेका सदर दरवाजा खुला। अलगोजेवालेने अपनी पूरी पुकार दोहराई—

"कहानी सुनाएँ-कहानी सुनाएँ—शाहकी कहानी, दरगाहकी कहानी—खूनी भूतकी कहानी, जबरूतकी कहानी . "

खुले हुए द्वारके सामने एक बुढिया आई।

"बेटा, मेरी लडकियाँ तुम्हारी कहानी सुनना चाहती है। क्या तुम शामको यहाँ नही आ सकते? ईदानमे ही रहते हो न?"

"ना, अम्मी, मै तो परदेसी हूँ, आज ही ईदानमे आया हूँ। शामको भी आपके यहाँ आ सकता हूँ। लेकिन क्या आपकी लडकियाँ शामवाली कहानियाँ सुनना पसन्द करेगी?"

"शामवाली कहानियाँ!" बुढियाने कुछ चकित-सी होकर पूछा, "शामवाली कहानियाँ कौन-सी होगी, बेटा?"

'शामवाली कहानियाँ यही होगी—मीठी मौतकी कहानी, सोती सौत-की कहानी, बडी राहकी कहानी, ठडी आहकी कहानी, खूनी भूतकी कहानी, जबरूतकी कहानी—"

"ना-ना बेटा, ना-ना! मेरी लडकियाँ भूतकी कहानियाँ नही सुन सकती, और वह भी शामके वक्त! तोबा! तोबा! बेचारियोका नाजुक कलेजा दहशतसे फट जायगा। मै अभी पूछकर आती हूँ, वह कौन-सी कहानी सुनना पसन्द करेगी।" बुढिया भीतर चली गई और दो क्षण बाद लौट कर बोली:

"शाहजादेकी कहानी मेरी लडकियाँ सुनना चाहती है। उसकी उजरत तुम क्या लोगे ?"

"उजरतकी तो कोई बात नही अम्मी", अलगोजेवाने कहा, "लेकिन शाहज़ादेकी कहानी सुबहकी है, वह दोपहर या शामको नही सुनाई जा सकती। कहानियोके वक्तकी मुझे सख्तीके साथ पाबन्दी करनी पडती है, इसमें मै ढील-ढाल करूँ तो नई अच्छी कहानियोका मेरी ज़बान पर आना बन्द हो जाय।"

"तो बेटा, कल सुबह ही सुना जाना . लडकियाँ वही कहानी सुनना चाहती है"—बुढियाने कहा।

"कल सुबह तो अम्मी मै तडके ही दूसरे शहरके लिए रवाना हो जाऊँगा, जाना जरूरी है।"

बुढिया अपनी लडकियोसे सलाह करने फिर भीतर चली गई।

"शाहजादेकी नही तो शाहज़ादीकी कहानी आज शामको सुना सकते हो बेटा ? लडकियाँ शाहजादीकी ही कहानी सुन लेगी" उसने भीतर से लौटकर कहा।

'शाहज़ादीकी कहानी तो दोपहरकी, इसी वक्तकी कहानी है, अम्मी, वह भी शामको नही सुनाई जा सकती। उसे सुनना हो तो इसी वक्त सुन लीजिए।"

"बात जरा यह है बेटा" बुढियाने रुकती-रुकती ज़बानमे कहा, "शामको सुनते तो घरके मर्द भी खेतो परसे आजाते, वह भी सुन लेते और तुम्हारी उजरतका भी मुनासिब इन्तजाम हो जाता।" कहते-कहते बुढियाका गला कुछ भर आया और आँखोमे आँसू छल-छला आये।

"मै तुम्हारे दिलकी बात सब समझ रहा हूँ, अम्मी ! तुम्हारा यह उजडा-सा आलीशान पुराना मकान तुम्हारी बीती हुई अमीरीकी गवाही दे रहा है। तुम्हारे घरके मर्दोंको आज खेतो पर काम करना पड रहा है, ऐसे दिनोका भी तुम्हे मलाल है। लेकिन सब्र बडी चीज़ है अम्मी, और

अमीरी हमेशा सोने-चॉदीमे ही नही रहती। तुम्हारे घरकी अमीरी तुम्हारी जीती-जागती औलादमे पोशीदा है। दोपहरकी कहानियोकी मेरी उजरत भी कुछ ज्यादा नही है, उनके मै सिर्फ तीन सीरप (उस युगका एक छोटा सिक्का) लेता हूँ और इस वक्त तो मै सीरपके वदले दो रोटियॉ और एक प्याला मटरका शोरवा लेना ज्यादा पसन्द करूंगा।"

अतीतकी उमडी हुई स्मृतियोने बुढियाकी आखोसे दो बूँद ऑसू बाहर ढकेल दिये। वह लडकियोसे बात करने भीतर चली गई।

थोडी देर बाद अपनी तीन तरुण लडकियोको लेकर बुढिया लौट आई। देहलीज़के पास, द्वारके भीतर बुढिया बैठ गई और उसके पीछे उसकी तीनो लडकियाँ बुर्के ओढे हुए, ओट करके बैठ गई।

अलगोजेवालेने देहलीज़के बाहर बैठकर शहज़ादीकी कहानी प्रारम्भ कर दी.

"किसी ज़मानेमे मुल्क फारसमे रूज़ेब नामका बादशाह हुकूमत करता था। अशाशा, शलीजा और अमीना नामकी उसकी तीन निहायत खूबसूरत शहजादियॉ थी। इनमे सबसे बडी शहज़ादी अशाशा इतनी हसीन थी कि सूरज और चादको भी उसका चेहरा देखनेकी इजाज़त नही थी और उसके मॉ-बाप भी बगैर अपनी ऑखोमे सुरमा डाले उसे कभी नही देखते थे। अशाशाने जिस दिन अपने पन्द्रहवे सालमे पैर रक्खा, उसी दिनसे सूरज बढने लगा और चॉद घटने लगा। शहज़ादीकी परदा-दारीका पूरा एहतियात होते हुए भी उसके हुस्नकी कशिश इतनी ज़बर्दस्त थी कि सूरज और चॉद भी उसके आगे मुस्तकिल न रह सके। चॉद तो पन्द्रह दिनकी कशिशमे ही घुल-घुल कर इतना दुबला हो गया कि उसके हस्तोनेस्त (जीवन-मरण) का मसला सामने आ गया और आखिरी रात उसने सोनेके वक्त शहज़ादीका मुख देख लिया तब उसके जिस्ममे जान आई। चॉदका अक्स शहज़ादीके खुले चेहरे पर पडनेसे उसकी ठोडीके नीचे काले तिलका निशान पड गया ...."

कहते-कहते अलगोजे वालेने सबसे पीछे बैठी हुई बडी लडकी परीजाकी आँखोकी ओर एक पैनी दृष्टि फेकी। परीजाकी आँखे बारीक बुरकेकी जालीमे उसी समय उसकी ओर झाँक उठी थी।

परीजाकी ठोढी पर वैसा ही एक खूबसूरत काला-सा तिल था!

अलगोजेवालेने अपनी कहानी जारी रक्खी

"धीरे-धीरे पन्द्रह दिनके भीतर चाँद अपनी पूरी तन्दुरुस्ती हासिल कर ले गया। उधर सूरजने जमीनके सामने शहजादीके दीदारके लिए ज्यादा देर तक रुकनेका सिलसिला शुरू कर दिया और तीन महीने बाद एक दिन जब कि उसे जमीनके रूबरू पूरे सौ जलल (जलल पौन मिनटके लगभग समयका परिमाण होता था) ज्यादा ठहरना पडा और गरमीकी शिद्दतसे दुनिया हा-हाकार कर उठी तब किसी तरह शहजादीका दामन एक जललके लिए उसके सामनेसे उठ गया और सूरजने भी उसके हुस्न-का जमाल कोह-मगरिब (अस्ताचल) की ओटसे देख लिया। सूरजका अक्स उसके बदन पर पडनेसे उसके बाये सीने पर लाल तिलका एक खूब-सूरत-सा निशान बन गया।"

आयशा अपने आसन पर एक बार और विचलित हुई। अधूरी-सी एक अँगड़ाई लेते-लेते अलगोजेवालेके साथ उसकी आँखे फिर चार हो गई।

परीजाको मालूम था कि उसके बाये सीने पर लाल तिलका चिह्न है।

अलगोजेवालेकी कहानी चलती रही।

"उस दिनसे सूरजने धीरे-धीरे जमीनके रूबरू अपना कयाम घटाना शुरू कर दिया। कयास है कि उसके पहले दिन और राते बराबर होती थी और चाँद हर रातको ठीक वक्त पर पूरा निकलता था। लेकिन शहज़ादी अशाशाके आगाज़े शबाब (यौवन-प्रवेश) के दिनोसे उनका तर्ज बदल गया और यह बदला हुआ तर्ज़ अब तक रायज है।

"एक दफाका ज़िक्र है कि रूज़ेब शिकार खेलते-खेलते जगलोमे बहुत

दूर निकल गया" कथाकारने अपनी रोचक, प्रभावपूर्ण शैलीमे कहानी कहते हुए विस्तारके साथ बताया कि रूज़ेवकी महलोसे अनुपस्थितिमे पडौसके एक दूसरे राजाने शहजादी अशाशाको महलोसे रातो-रात उठवा लिया। राजधानीमे हाहाकार मच गया! बादशाह रूज़ेव जब जगलोसे लौट कर आया तो शहजादीके वियोगमे वह पागल-सा हो गया। कई दिनो तक बहुत ढूँढने-खोजने पर भी जब शहजादीका पता न लगा तब वह स्वय राजपाट छोडकर, अपनी रानी और दो लडकियोको साथ लेकर बडी शहज़ादी-को ढूँढने निकल पडा। अन्तमे दूसरे देशके एक घने वनमे एक टूटे-फूटे किलेके भीतर उन्होने शहज़ादी अशाशाको पा लिया। उसे लेकर रूजेव उसी देशके एक छोटे-से गाँवमे अपना झोपडा बनाकर गरीबीके दिन काटने लगा क्योकि उसके राज्यमे पहले ही उस अन्यायी राजाने अधिकार कर लिया था। उधर यूनानके शहजादे होरासने भी शहजादी अशाशाके सौन्दर्यका वर्णन सुन रक्खा था और उसने निश्चय किया था कि उससे ही विवाह करेगा। होरास उस समय सारे राज्योमे सबसे सुन्दर शहज़ादा था। सभी देशोकी राजकुमारियाँ उससे विवाह करनेके लिए मन ही मन लालायित थी। शहजादी अशाशाने भी उसके रूप और पौरुषकी चर्चा सुन रक्खी थी। शहजादी अशाशाके अपहरण और रूजेवके राज-त्याग और पडोसके राजा-द्वारा उस पर अधिकारका समाचार जब होरासने सुना तो वह शहजादीको खोजने और उसके पश्चात् शाह रूजेबको फिर-से राज्यासन पर बिठानेकी शपथ लेकर अपनी राजधानीसे निकल पडा। खोजते-खोजते वह एक दिन उस देशके उस गाँवमे जा पहुँचा जहाँ वह निर्वा-सित राज-परिवार अपने दिन काट रहा था। उस झोपडेके सामनेसे निकलते ही उसकी और शहज़ादी अशाशाकी आँखे चार हो गई। दोनो एक दूसरेको न जानते हुए भी एक दूसरे पर पहली दृष्टिमे ही मुग्ध हो गये। शहज़ादा होरासका अक्स पडते ही अशाशाके दाहिने कपोल पर एक सुन्दर नीले रगके तिलका निशान पड गया।

यहाँ तक कहानी कह चुकने पर अलगोजेवाला रुका और बोला, "कहानी आधी मंजिल पर आ गई है, और सुनते-सुनते आप लोगोको कुछ थकान भी महसूस होने लगी होगी। अगर आपको तकलीफ न हो तो इस वक्त मुझे दो रोटियाँ दे सकती है। उस के बाद मै फिर कहानी शुरू कर दूँगा।"

बुढियाने एक रकाबीमे दो रोटियाँ और थोडा-सा मटरका शोरबा उसके सामने ला रक्खा।

"खाओ बेटा, अभी एक रोटी तुम्हे और लेनी होगी। शोरबा तो अब नही है, लेकिन घरमे नमक बहुत है, तुम्हारे रास्तेके लिए भी थोडा-सा साथ बाँध दूँगी।"

अलगोजेवालेने खाना शुरू किया।

"लडकियाँ डर रही है कि कही शाम न हो जाय और कहानी पूरी करनेका वक्त न रहे" बुढियाने कुछ देर बाद लडकियोका सँदेसा दिया।

"इसका अब कोई डर नही। कहानी वक्त पर शुरू हो जानी चाहिए, फिर उसे पूरा करनेमे चाहे रात हो जाय चाहे सवेरा, उसका कोई हर्ज नही। घरके मर्द भी तब तक आ जायँगे, तो वे भी सुन लेगे, मै शुरूका हिस्सा दोबारा भी सुना दूँगा।" उसने अपने श्रोताओकी चिन्ता दूर की।

अलगोजेवाला भोजन कर रहा था और परीजाकी आँखे उसकी आँखोसे रह-रहकर टकरा जाती थी। परीजाने इतना सुन्दर युवक अपने जीवनमे अभी तक नही देखा था।

साँझ हो आई और घरके मर्द—लडकियोका पिता और चचा—खेतो परसे लौट आये।

भोजनादिसे निवृत्त होकर वे सब कहानी सुननेके लिए तैयार हो गये। अलगोजेवालेको अब घरके भीतर आँगनमे बुला लिया गया। लडकियाँ घरके दालानमे बुढियाके पीछे पर्दा करके बैठ गईं और मर्द सामने आँगनमे बैठे।

"मायूसी और तगदस्तीके उस आलममे भी शहज़ादी अशार.का दामन हुस्नो-मोहब्बतके ऐसे नायाब मोतियोसे भर रहा था, जिनकी कदर और सँभाल कोई मामूली नौजवान नही कर सकता था।" अलगोजेवालेने कहानीका उत्तरार्द्ध प्रारम्भ किया और क्षण-भरको चुप हो कर एक दम खडा हो गया।

उसने अलगोजा मुँहसे लगाया और उसे बजाता हुआ बाहरकी ओर चल दिया। यन्त्रचालितकी भाँति परीजा भी उठी और अलगोजेवालेके पीछे-पीछे चल दी।

"परीज़ाको अलगोजेवालेने मोह लिया है। उसके दाहने गालपर कहानी सुनते-सुनते एक नीला तिल भी निकल आया है।" मझली लडकीने कहा।

"वह नौजवान और बेहद खूबसूरत भी तो है।" छोटी लडकीने कहा।

"परीजाको रोकनेकी कोशिश बेकार होगी, उसको रोकना मुनासिब भी नही है।" बुढिया माँने कहा।

"उसके बिना हम रह भी तो नही सकते। चलो, जहाँ वह जाय वहीं हम भी चल कर रहेगे।" लडकियोके बापने कहा।

और वे सब भी परीजाके पीछे-पीछे चल दिये।

गलियो, सडको, खेतो, मैदानो और जगलोको पार करके परीजा और अलगोजेवालेके पीछे-पीछे वे एक पहाडीके ऊपर जा पहुँचे। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी और सभी थक गये थे। पहाडीकी एक चौडी, चौरस शिला पर वे सब विश्राम करने लगे।

चौदसका चद्रमा आकाशमे खिला हुआ था। और तीनो लडकियोने अपने बुर्के उतार दिये थे। परीज़ाके दाये कपोलके नीले तिल पर चन्द्रमाकी किरणे पड रही थी और उसके प्रभावसे उसके सारे कपोलकी ललाई बढ गई थी।

× × ×

उसी रात ईदान नगर, नदीका बाँध टूट जानेसे, भयकर बाढमे वह गया और उसका एक भी व्यक्ति जीवित नही बचा।

परीजा और परदेसी अलगोजेवालेके परिवारोके बीच वैवाहिक सम्बन्धोसे ईरानी जातिके एक नये वशका प्रारम्भ हुआ। यह वश आगे बहुत फूला-फला और ईरानकी उस युगकी सभ्यतामे इसने बहुत सुधार-सस्कार किये।

ईरानके पुराने पेशेवर रावियोसे यद्यपि मेरे साहित्यिक नामकरणका कोई सम्बन्ध नही है, फिर भी उस अलगोजे वाले रावी और उसकी परीज़ासे मेरा कुछ न कुछ पारिवारिक सम्बन्ध कई जन्मोसे प्राय रहता ही आया है।

अप्सराकी खोज

स्वर्गलोककी अप्सराओने एक बार निश्चय किया कि देवता लोग अब उनकी ओरसे उदासीन रहने लगे है और उनमे दूसरी झझटोके कारण प्रेम करनेकी योग्यता घट गई है, इसलिए पृथ्वीलोकमे चलकर मनुष्योसे प्रेम करना चाहिए। उन्हे सूचना मिली थी कि मनुष्योमे प्रेम करनेकी प्रवृत्ति इधर बहुत अधिक जाग गई है ।

पृथ्वीलोककी परिस्थितिकी स्वय-देखी जानकारी प्राप्त करनेके लिए अप्सराओने पहले एक अप्सराको पृथ्वी पर भेजा ।

भूमण्डलकी एक विशाल नगरीमे सोलह वर्षकी एक अस्पृष्ट-यौवना, अद्वितीय सुन्दरीका शरीर लेकर यह अप्सरा अवतीर्ण हुई ।

लोगोने उसे देखा तो देखते ही रह गये ! उसके रूपमे कुछ ऐसा आकर्षण था कि जब आँखे उस पर जा पडती तो फिर उनका वहाँसे अपने-आप हटना असम्भव था । जिस दिन वह पहले-पहल नगरकी सडको पर निकली, उसी एक दिनमे—सिटी कार्पोरेशनकी सूचनाके अनुसार—तीन हजार तिरासी आदमी विक्टोरिया, मोटरो और ट्रामोके नीचे दबकर मर गये और सत्तर आदमियोकी गर्दने मुड-मुडकर देखनेके कारण मोच खाकर टेढी हो गई । वे सब उस सुन्दरीको देखनेमे इतने तन्मय हो गये थे कि सडको पर चलती हुई गाडियोसे बचनेकी उन्हे सुध-बुध ही न रह गई थी !

अपने प्रति मनुष्योका यह असीम आकर्षण देखकर अप्सराका हृदय आह्लादके आवेशमे धडक उठा । मधुर कल्पनाओके सागरमे वह डूबने-उतराने लगी । "अप्सराए कितनी मूर्ख है, जो इतने समयसे स्वर्गलोकमे ही पडी हुई है," उसने एक बार सोचा ।

समुद्रतट पर एक सुन्दर-सा भवन उसने किराये पर ले लिया। नगर

मे पदार्पणके दूसरे ही दिन नगरके सभी पत्रोमे उसने विज्ञापन निकलवाया:

आवश्यकता है

सहृदय प्रेमियोकी। नर्मदा-भवन, चौपाटी पर दिनके ग्यारहसे एक तकका समय छोड किसी भी समय पधारे। बहुत अनुगृहीत हूगी।

कृपाभिलाषिणी

तारुण्यबाला

उसी दिनकी दोपहरको नर्मदा-भवनके पास चौपाटीका मैदान खचाखच भर गया। एक ऊचे आसन पर वह अपना दिलरुबा लेकर बैठ गई। उसकी सुन्दर, सुकुमार अगुलिया यन्त्रके तारोपर नाचने लगी। दिलरुबाकी स्वरलहरी वहाँके वातावरणमे मानो साकार हो उठी। अप्सराके होठ बन्द रहे। उसकी आँखे घिरे हुए जन-समूहकी आँखो पर चचल गति-से थिरकने लगी—जैसे दो अलौकिक तितलियाँ फूलोका रस लेनेमे विद्युत स्फूर्तिसे सलग्न हो। मत्र-मुग्धसे दर्शकोकी भीड जमा रही।

क्रम चलता रहा। साँझ हुई। रात आई। रात गई। क्रम चलता रहा।

सबेरेकी डाकसे कुछ चिट्ठियाँ उसके नाम आई। चिट्ठियाँ कितनी थी; यह तो नही मालूम हो सका, लेकिन उन सबकी तोल सवा मन थी। उन चिट्ठियोके कुछ लेखकोने लिखा था कि वे भरी भीडमे उसके सामने नही आ सकते, यद्यपि दर्शनोके लिए बहुत व्याकुल है, कुछने लिखा था कि वे एकान्तमे ही उससे मिलना चाहते है; कुछने लिखा था कि वे अपनी सारी धन-दौलत उसके चरणो पर निछावर करनेके लिए बेचैन है।

अप्सराके होठो पर एक मुसकान दौड गई—मुसकान क्या दौड गई, उस अपार जन-समूहके हृदयो पर बिजली-सी कसक गई। कुछ सोचते ही उसका हृदय भावावेशसे उछलने-सा लगा। उसे मानो सम्हालनेके लिए उसका एक हाथ उसके वक्ष पर जा लगा। दबी हुई सत्कारकी एक पैनी ध्वनि उस जन-समूहके मुखसे निकलकर आकाशको बेध गई।

अप्सराने माइक-यत्रको अपने होठोके पास खिसकाकर अपने प्रेमियो को सम्बोधित किया। "मै आज ."

उपस्थित जनोके कानोमे हज़ार बोतलोका नशा-भरा अमृत बरसने लगा, "मै आज कितनी सुखी हू ! इस प्रेमकी भिखारिनको आपने अपने प्रेमका जो अनुपम दान दिया है; उससे मै कभी भी उऋण नही हो सकती। दानसे उऋण होनेका कोई प्रश्न भी नही होता। जी चाहता है, आप लोग जितने यहाँ पधारे हुए है उतने ही रूप रखकर आपमेसे हरेककी मदभरी आँखो, रस भरे होठोको चूम लूँ। पर मै विवश हूँ, मेरा शरीर एक ही है। फिर भी मै इसका कुछ उपाय करूँगी। मै आपकी कितनी अनुगृहीत हूँ ! आज मै कितनी सुखी हूँ ! स्वर्ग लो—" अप्सराने अपनी जीभ दाब ली। वह कहने जा रही थी कि स्वर्गलोकमे तो वह कठिनाईसे पाँच-सात देवताओका ही ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर पाई थी। बात सम्हालकर उसने कहना जारी रक्खा—"स्वर्गलोक की अप्सराए भी इतनी सुखी न होती होगी। लेकिन मेरा भी सुख अभी अधूरा है। मै चाहती हूँ कि एकान्तमे, अलग-अलग आपसे मिलकर आपका सम्पर्क प्राप्त करूँ। पन्द्रह वर्ष मे इस नगरीमे रहना चाहती हूँ। पाँच-पाँच मिनटका भी एकान्त सम्पर्क यदि मुझे आपका मिल जायगा तो मै इन पन्द्रह वर्षोमे आप सबका निकटतम परिचय पा लूँगी। या आप लोग यो ही खुली सभामे एक साथ दूर बैठे-बैठे मुझे अपनी आँखे तरसाने देना चाहते है ?"

अप्सराने चुप होकर एक दौडती हुई दृष्टि सारी सभा पर डाली।

"एकान्तमे—अलग-अलग !" की रलीमिली पुकार असख्य-कण्ठोसे एक साथ फूट पडी।

"तो फिर आइए ! आप लोग अलग-अलग, एक-एक करके मुझे अपने दर्श-पर्शसे कृतार्थ कीजिये।" अप्सराने कहा और उठकर अपने भवन के एकान्त कक्षकी ओर चल दी।

उसकी उठने और चलनेकी चेष्टाओसे बिजलियोकी दस हजार दोधारियाँ उस जन-समूहमे कौध गईं ! वह चली । जन-समूह उसके पीछे-पीछे उमड चला !

अप्सराने भवनमे प्रवेश किया । द्वार पर आई हुई भीडको द्वारपालने रोका—"आप लोग अलग-अलग, एक-एक करके भीतर जाइए ।" उसने आदेश दिया ।

"हाँ भाई, अलग-अलग—एक-एक करके" भीडके पहले आदमीने अपने पीछेवालोको रुकनेका आदेश देते हुए आगे कदम बढाया ।

"अलग-अलग—एक-एक करके !" भीडके प्रत्येक व्यक्तिने अपने पीछे आने वालोको लक्ष्य करके कहा, लेकिन किसीके पैर रुके नही । वास्तवमे उनमेसे प्रत्येक अलग-अलग, एक-एक करके ही आगे बढ रहा था !

द्वारपालका सिर दीवारसे टकराकर पिस गया । नर्मदा-भवनके सारे द्वार-कपाट टूट गये । अप्सराकी हड्डी-पसली-मासका, नर्मदा-भवनकी किसी भी ईंटका कही नाम-निशान न रह गया ।

अगले दिन कार्पोरेशनकी विज्ञप्तिमे बताया गया कि जब तक सरकारी सशस्त्र पुलिस उस असाध्य भीडको तितर-बितर करनेके लिए घटनास्थलपर पहुँचे-पहुँचे; तब तक ग्यारह हजारसे ऊपर व्यक्ति उस भीडमे दबकर मर चुके थे और बादमे सात व्यक्ति पुलिसकी गोलियोसे मरे और डेढ सौ घायल हुए ।

अप्सराको अपना फूल जैसा सुन्दर पार्थिव शरीर नष्ट होनेका दुख तो कम ही हुआ; लेकिन अपने आशा भरे अरमानोके मिटनेका बहुत बडा आघात उसके हृदयको पहुँचा ।

स्वर्गलोकको वापस पहुँचकर उस अप्सराने अप्सरा-समाजमे कहा :

"मनुष्योमे प्रेमका भाव तो बहुत प्रबल है, लेकिन प्रेमकी पात्रता उनमे बिलकुल नही है। हम लोगोका अभी वहाँ जाना सुरक्षित नही है।"

× × ×

और मनुष्यकी प्रेमकी पात्रताकी यह बात क्या उसकी अन्य सभी प्रकारकी पात्रताओ पर भी लागू नही होती ?

कलकी बात

आगरेकी कालेज रोड पर, जहाँ रेलवे लाइन सडकके नीचेसे जाती है, कालेजके लडको-लडकियोकी अक्सर चहल-पहल हो जाती है। कुछ दिन हुए एक शाम उसी जगह एक नई मूर्ति दिखाई दी। विशेष आकर्षक, कीमती सज-धजमे सजी हुई यह नवयुवती सचमुच विशेष रूपवती थी। एक अधेड स्त्रीके साथ बात करती हुई वह उस सडकके लगभग एक फर्लांग लम्बे टुकडेके बीच इधर-से-उधर तक चहलकदमी कर रही थी। सडक पर खडे या टहलते हुए लोगोका ध्यान आकृष्ट करनेके लिए यह काफीसे अधिक था।

उस तरुणीका यह स्वच्छन्द वायुसेवन घटे-पौन घटे तक चलता रहा। अनेक जिज्ञासा, प्रशसा और विविध श्रेणीकी मुग्धतासे भरी आँखोकी वह केन्द्रस्थली बन गई। सडकके जितने हिस्से पर वह टहल रही थी, उसके दक्षिणी सिरे पर यमुनाकी ओर जानेवाली सडक पर एक खूबसूरत-सी कार खडी हुई थी। सूर्यास्त होते ही उसी कार पर सवार होकर वह यमुनाकी ओर चली गई।

दूसरे दिन सूर्यास्तसे एक घटा पहले वही कार आकर फिर कालेज रोडके उसी चौराहे पर रुकी और उसी स्त्रीके साथ उतरकर वही तरुणी फिर पिछले दिनकी भाँति वही टहलने लगी।

दूसरे युवक-युवतियोके आकर्षणकी ही नही, कौतूहलकी भी सामग्री वह बन गई।

एक-दो दिनका नही, तरुणीका यह नित्य प्रतिका नियमित कार्यक्रम बन गया। उसी अधेड स्त्रीके साथ टहलती हुई वह बात करती रहती। अपनी ओर उठी हुई आँखोका वह प्राय एक बहुत हलकी मुसकानके साथ

आँखो ही आँखोमे अभिवादन कर लेती और उनकी टोहके लिए विशेष सतर्क और सावधान जान पडती।

वह सब लोगोकी खुली चर्चाका विषय बन गई। कुछ लडकियोने उसके पीछे-पीछे टहलकर उसका मर्म लेनेका प्रयत्न किया पर उस अधेड़ स्त्रीके साथ उसकी बातचीतसे कोई कामकी बात वे न पा सकी, क्योकि उनकी बात व्यक्तिगत न होकर कुछ व्यापक समस्याओ पर वाद-विवाद के रूपमे होती थी। वह किसी कालेजमे नई भरती हुई छात्रा नही थी और न किसी प्रोफ़ेसरकी ही लडकी थी, यह तीसरे ही दिन पता लगा लिया गया था।

तब फिर वह कौन है और यहाँ इस तरह टहलने क्यो आती है, यह एक हद तक नवयुवकोके लिए एक परेशानीका-सा प्रश्न हो उठा!

चौथी शाम उस तरुणीके चले जाने पर छात्रावासके लॉनमे नवयुवकोकी एक 'इनफार्मल एमरजेसी मीटिग' जुडी।

"वह कोई आगरेमे आई हुई नई वेश्या होगी।" कुछ नवयुवकोकी राय हुई।

"वह किसी नई रोशनीके सेठकी लडकी हो सकती है। उसे किसी उपयुक्त प्रेमीकी खोज होगी।" कुछका अनुमान था।

"किसी फिल्म कम्पनीकी रिप्रेज़ेटेटिव भी हो सकती है, भरतीके लिए नये रगरूटोकी तलाशमे निकली हुई।" एक सदस्यने कहा।

"सी. आई. डी. स्टाफकी कोई जासूस भी हो सकती है, किसी मामलेकी खोजमे आई हो।" एक अन्य सदस्यकी सूझ थी।

"सीधी-सी बात है। यह एक फैशनेबुल सोसाइटी गर्ल है और उसे कुछ तगडी रकमकी जरूरत है।" पाँचवे नवयुवकने मानो फैसला देते हुए कहा।

यह सभा काफी देर तक चलती रही और इसी तरहके दर्जनो अनुमान सामने आये, पर इसमे किसी निश्चित मत पर पहुँचनेकी आवश्यकता नही थी—कोई बात निश्चित की भी नही जा सकी।

छात्रावासके अधिकारियो और प्रोफेसरो तक भी यह चर्चा पहुँची। उनमेसे भी कुछने सोचा कि उस लडकीका रोज-रोज यहाँ घूमना ठीक नही है, इससे लडकोका हर्ज होता है। उसे किसी तरह अपने टहलनेके लिए दूसरी कोई जगह चुननेकी सलाह दी जा सके तो अच्छा है।

पाँचवी शाम दनिक नियमके अनुसार टहलती-टहलती वह एक लम्बे लेटरबक्सके बगलमे बैठे हुए एक खोमचेवालेके सामने पहुँचकर एकदम रुक गई। वह फलोकी चाट बेचनेवाला आवाज लगा उठा था—"केला बम्बईका है, अगूर बेदाना है।" और उसकी दृष्टि इस तरुणी पर थी।

"आप यहाँ रोज दूकान लगाते है?" उस तरुणीने एक स्निग्ध मुसकान के साथ, मानो उसका निमत्रण स्वीकार करके, उस खोमचेवालेसे बातचीत प्रारम्भ की।

"हाँ, बीबीजी!"

"कितनी देर?"

"यही चार बजेसे सात-आठ बजे तक।"

"तीन-चार घटे रोज काम करते है?"

"तीन-चार घटेमे क्या होता है बीबी जी! सारे दिन शहरमे फेरी लगाता हूँ!"

"सारे दिन! कितना कमा लेते है?"

"दिन-भरमे दो-तीन रुपयेके पैसे बच जाते है।"

"दो-तीन रुपये! बस! घरमे कितने लोग है?"

"बाप है, माँ है, एक छोटी बहन है।"

"आपकी शादी नही हुई?"

"नही सरकार अभी"—कहते-कहते वह कुछ सकुचा गया।

"शादी नही हुई" उसने एक गहरी स्थिर-सी दृष्टि उस व्यक्तिकी आँखोमे डालते हुए एक मोहक-सी मुसकानके साथ कहा—"फिर भी दो-तीन रुपये तो बहुत कम है! आप कोई दूसरा काम क्यो नही करते?"

"दूसरा काम क्या करूँ हुजूर ? कही नौकरी करूँ तो वह भी चालीस-पचाससे ज्यादाकी नही मिलेगी। उससे तो यह खोमचा ही अच्छा है।"

"आपकी आमदनी बढनी चाहिए" तरुणीने कुछ चिन्तनकी मुद्रामे आकर कहा—"कम-से-कम इतनी तो होनी चाहिए कि आप अच्छे कपडे पहन सके और अच्छा खाना खा सके। आप नौजवान है, देखनेमे भी बहुत अच्छे है, आपका रहन-सहन भी वैसा ही होना चाहिए।"

नौजवान खोमचेवाला सचमुच सुन्दर था।

वह कुछ बोला नही। युवती भी थोडी देर चुप रही।

जितनी दूर तक इस वार्तालापकी आवाज पहुँच सकती थी उतने क्षेत्रके भीतर, पास और दूर रुके हुए श्रोताजन कानोका पूरा बल लगाकर इस अत्यन्त आकर्षक बातचीतको सुन रहे थे।

"मै आपके लिए कोई अच्छा रास्ता सोचूँगी" तरुणीने अनेक उत्सुक कानोकी निस्तब्धता भग की। "क्या आप आज शामको मेरे साथ मेरे घर चल सकते है ?"

खोमचेवाले नौजवानकी आशा और आतकभरी ऑखे उन सभी ऑखोकी ओर घूम गई, जो उसे घेरे हुए थी—जैसे वह उस प्रश्नका उत्तर उनसे मॉगना चाहता था। वे सब लोग भी उसीका मुँह ताक रहे थे।

युवती फिर मुसकराती हुई बोली—"मै अभी एक कामसे थोडी देरके लिए जा रही हूँ, आधे घटेमे लौटूँगी। तब तक अगर आपका सौदा बिक चुकेगा तो मै अपने साथ ही आपको ले चलूँगी।" उसने कहा और अपनी कार पर जा पहुँची। उसकी कार वापस उसी राह उस भीडको चीरती हुई उत्तरकी ओर चली गई।

कारके अदृश्य होते ही खोमचेवालेके सारे फल बिक गये। ग्राहकोकी उत्कण्ठा या उस खोमचेवालेके प्रति सहयोग-सहानुभूति की यहाँ व्याख्या करनेकी आवश्यकता नही है।

ठीक आध घटे बाद वह लौटी और खोमचेवालेको अपने साथ कार

पर बिठाकर अपने डेरेकी ओर चल दी । देखनेवालोने उमडती उत्सुकताके साथ यह तमाशा भी देखा ।

अगले दिन अपने समय पर वह खोमचेवाला नियमानुसार उपस्थित था । आज उसके कपडे साफ धुले हुए थे, फलोकी टोकरी नई थी और उसमे फल भी पिछले दिनसे ज्यादा थे और अधिक अच्छे थे । आज ग्राहको, जिज्ञासुओ बल्कि मित्रोकी भी उसके लिए कमी न थी । उनके प्रश्नोके उत्तरमे उसने केवल इतना ही कहा —"यह बम्बईके एक बडे सेठकी लडकी है । इम्पीरियल होटलमे ठहरी है । बहुत अच्छी है । मुझे खूब खातिरसे खिलाया-पिलाया और बम्बई ले जाकर अच्छी नौकरी लगा देनेका वादा किया ।"

कुछ लोगोकी अधिक छेडछाडसे तग होकर उसने कहा— 'बाबू, मै गरीब आदमी हूँ और कुछ नही जानता । मुझे और कोई बात उसने नही बताई । आप लोग मुझे बहुत तग करेगे तो मै कलसे यहाँ नही आऊँगा । मुहल्लोमे ही बेच लिया करूँगा । अभी मै और कोई बात नही जानता ।"

उसकी यह धमकी काम कर गई । खोमचेवालेका उधर न आना उन्हे स्वीकार नही हो सकता था । कुछ लडकोने आगे कोई छेडछाड न होनेका आश्वासन देकर उससे अनुरोध किया कि वह बराबर वहाँ आकर अपना रोज़गार करता रहे ।

युवती अपने समय पर उस दिन भी आई और नियमित रूपसे वायु-सेवन करके चली गई । खोमचेवालेसे साधारण कुशलप्रश्नके अतिरिक्त उसने और बात नही की ।

युवतीका यह क्रम तीन-चार दिन तक और चला । उसी अधेड स्त्रीके साथ यथावत् उसका वायुसेवन, खोमचेवालेसे स्नेह-सत्कार पूर्ण कुशल-प्रश्न और सूर्यास्तके समय प्रस्थान । सडककी चहल-पहल और खोमचे-वालेकी दूकानकी बिक्री बढ गई ।

इस कथारम्भके ग्यारहवे दिन सवेरे ही लेटरबक्सके नीचे ज़मीन पर

पडा हुआ एक लिफाफा पाया गया, जैसे बक्सके भीतर डालते समय असावधानीसे नीचे गिर गया हो। लिफाफे पर पता था

श्रीमती रजनी चन्द्रकला, मारफत डा० कमलकिशोर गुप्ता,

३०, अनाम रोड, जबलपुर।

भीतरका पत्र था—

प्रिय रजनी,

ममीको लिखे पत्रकी नकल तुम्हे भेज रही हूँ। इससे सब हाल जानोगी। आगरेके जिस नये मित्रकी बात मैने इस पत्रमे की है वह एक छोटा-सा व्यापारी है, लेकिन बहुत सुन्दर और अच्छे स्वभावका है। तुम्हारे कोचवानकी लडकी सुखमतीके लिए मै उसे उपयुक्त वर समझती हूँ। इसके मा-बाप भी बहुत भले है, मै देख आई हूँ। पैसा भी यह काफी कमा लेगा। कोचवानसे बात करके लिखना तब आगे बात करूँगी। तीन-चार हजार रुपया लगाकर इसको अच्छा रोजगार शुरू कराया जा सकता है।

तुम्हारी,
पवित्र

इसके साथ दूसरा पत्र अग्रेजीमे टाइप किया हुआ कार्बन कापीका था। उसका आशय इस प्रकार था :

प्रिय ममी,

आज आगरेमे मेरे ग्यारह दिन पूरे हो जायगे और कल सुबह ही मै दिल्लीके लिए रवाना हो जाऊगी। आगरेमे मुझे कोई ज़िन्दगी नही दीख पडी। दस दिन तक बराबर मैने आगरेके एक सभ्य, शिक्षित, क्षेत्र पर निगाह रखी। एक व्यक्तिको छोड किसीने मुझसे बात तक नही की। इन लोगोमे प्रेम और खातिरदारीका माद्दा न हो, यह बात नही है। आँखो ही-आँखोमे इनमेसे अधिकाशका अभिवादन मुझे मिला। मैने उनके अभिवादनका पूरा जवाब दिया। लेकिन उस अभिवादनके आगे उनमे-

से किसीको कोई बात कहनी नही थी। कहनेको उनके पास कोई शब्द न होते हुए भी इनका बार-बार मुझे देखना अक्सर भद्दा और बुरा मालूम होता था। जिससे कुछ कहना नही है, उसे बार-बार देखनेसे क्या मतलब हो सकता है, मै बादमे समझी। इन लोगोमे भलमनसाहतकी कमीसे साहसकी कमी और साहसकी कमीसे भलमनसाहतकी कमी है। मैने देखा कि मर्दो और नौजवानोकी बात तो दूर, पढी-लिखी लडकियो और औरतो तकमेसे किसीने मुझसे एक बात नही पूछी। क्या यह आश्चर्यकी बात नही है ? अपनी तरफसे किसीसे बात न करनेका प्रयोग मै इस दौरेमे निभा रही हूँ। इससे बहुत कुछ देखनेको मिल रहा है।

पिछली शाम मैने अपना टी आर. ए * पहन लिया। मेरे लिए अपनी सैरका एक घटा बिताना भी वहाँ कठिन हो गया। वे लोग मेरे बारेमे कैसी-कैसी धारणाए और कल्पनाएँ रखते है, मै सहन नही कर सकी। कितनी गन्दी और हास्यास्पद ! उन सभी भावनाओमेसे जिनपर मै कुछ आरामके साथ टिक सकती थी, उनका छाटना उस ढेरमेसे कितना कठिन था ! मेरी जगह यहाँ तुम होती तो इन विचारोको शायद कुछ धीरजके साथ देख सकती और अपनी शात सहनशीलताके कारण तुम्हे शायद उनमे मनोरजनकी भी सामग्री काफी मिलती, लेकिन मुश्किल यह है कि अपनी उम्रके कारण तुम इन लोगोके ऐसे विचारोका निशाना न बनती।

आगरेमे कोई भी ऐसा व्यक्ति मुझे नही दीखा जो हमारी 'फ्रेड्स लीग' की सदस्यताके लिए ठीक हो। यहाँके नौजवान मर्दोमे औरतोको और औरतोमे मर्दोको हौआ समझनेका माद्दा अभी काफी बाकी है। आजादी आनेका, देशमे गणतत्र बननेका इनपर कोई असर नही पडा। मेरा जो एक

***सम्भवतः थौट रीडिंग एपरेटस, ऐसा यंत्र जिसके द्वारा दूसरोके विचार पढ़े जा सकें।**

मित्र आगरेमे बना है वह और सब तरहसे ठीक है लेकिन इतना शिक्षित नही है कि हमारी सस्थाकी शर्ते पूरी कर सके। उसकी शिक्षाके बारेमे वहाँ पहुँचकर बात करूँगी। पैसे और सामाजिक सम्मानकी दृष्टिसे भी वह बहुत पीछे है। यहाँके लोगोने उसके रोजगारमे उसकी काफी मदद करनी शुरू कर दी है, लेकिन जिस भावसे उन्होने यह किया है, वह अधिक सराहनीय नही है। उनका सहयोग उसके साथ कितने दिन चलता रहेगा, यह अनिश्चित है।

तुम्हारी प्रिय,
पवित्र

सेवा में .—

आशा कुलकर्णी, ब्राच सेक्रेटरी, निउ एरा फ्रेड्स लीग, सिक्स्थ निड रेस लेन, मालाबार, बम्बई।
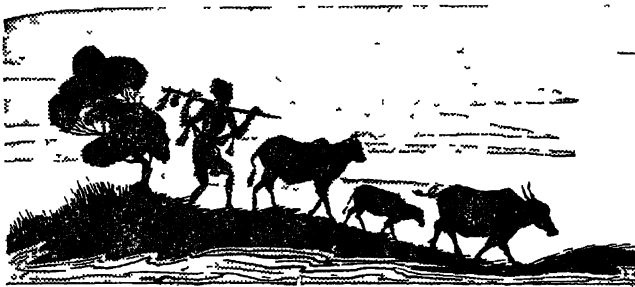
सामयिक सुधार

स्वर्गलोककी तीन आत्माओने निश्चय किया कि स्वर्गलोकमे रहते रहते उनका जी भर गया है और अब कुछ दिनोके लिए उन्हे शरीर धारण कर ससारमे रहना चाहिए।

वे तीनो एक 'बर्थ सिक्योरिग एजेसी' (जन्म दिलानेवाली कम्पनी) के दफ्तरमे पहुँची। 'लिपिकाज एण्ड कम्पनी लिमिटेड' के प्रबन्धमे इस एजेसीका काम बहुत अच्छा चल रहा था।

एजेसीका बुकिग आफिसर नया ही आया था। उसने इन तीनो ग्राहकोका समुचित सत्कार किया और यथानियम, उपहारगृहमे ले जाकर उपहारोकी तीनो अलमारिया खोल दी।

एक अलमारीमे परम स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ भरे थे, दूसरीमे कीमती रत्न जगमगा रहे थे और तीसरीमे मानव-प्रकृतिके सभी स्वभाव और गुण सजाये हुए थे।

तीनो आत्माएँ अपनी-अपनी पसन्दकी अलमारियोके सामने पहुँचकर अपनी रुचिकी चीजे छाटने लगी। उन तीनोकी पसन्द अलग-अलग थी।

इन अलमारियोका मुख्य उद्देश्य जन्म चाहनेवाली आत्माओकी रुचि का परीक्षण करना था, और जबसे अँगरेजी भाषाका प्रचार बढकर वह इस भूमडलकी प्रधान भाषा हो गई थी तबसे इन अलमारियोका नाम 'टेस्ट टैस्टिग एलमाइराज' (Taste Testing Almirahs) रख दिया गया था। जन्मार्थी आत्माओं के लिए उचित योनि और परि-स्थितियोके चुनावमे इन अलमारियोंसे बडी मदद मिलती थी।

बुकिंग आफिसरने तीनो आत्माओके लिए तीन अलग-अलग योनियोके शरीर 'बुक' (तय) कर दिये। जिस आत्माने खाद्य पदार्थ पसन्द किये थे

उसके लिए एक पशुका, जिसने रत्न पसन्द किये थे उसके लिए मनुष्यका और जिसने गुण पसन्द किये थे उसके लिए देवताका शरीर 'रिज़र्व' करा दिया और उन भावी शरीरोके जन्मदाता माता-पिताओके नाम अपने रजिस्टरमे दर्ज कर लिये।

यथा समय तीनो आत्माओने इस ससारने अपने-अपने शरीरोमे जन्म लिया। जिसे पशु-योनि दी गई थी उसके लिए अभीष्ट यह था कि वह जी भर कर जिह्वाका भोग भोग ले, क्योकि उसकी आत्माकी बुद्धि भोग-बुद्धि थी। जिसे मनुष्य-योनि दी गई थी उसके लिए अभीष्ट था कि वह जी भर कर सासारिक लेन-देन कर ले—उसकी बुद्धि व्यवसाय-बुद्धि थी; और जिसे देवताकी योनि दी गई थी उसके लिए अभीष्ट था कि वह जी भर कर सद्गुणोका प्रयोग और उनसे प्राप्त होने वाली दैवी षट्-सम्पदाओका सुख भोगे। उन तीनोके पिछले जन्मोके कर्म ऐसे ही थे।

लेकिन ये तीनो आत्माएँ पूर्व जन्मकी मनुष्य शरीरमे रही हुई आत्माएँ थी, इसलिए इस बार भी मनुष्य शरीर पानेवालेने तो अपनी व्यवसाय-बुद्धि द्वारा अपना अभीष्ट काम करना प्रारम्भ कर दिया परन्तु शेष दो आत्माएँ अपने शरीरोका कुछ भी उपयोग न कर सकी।

पशु-शरीरधारी आत्माको जिस तरहके खान-पान और इन्द्रिय-भोगकी प्रवृत्ति पिछले जन्मसे पडी हुई थी उस तरहका खान-पान और भोग वह इस नये शरीरमे नही कर पाती थी। पिछले जन्ममे उसे खाने-पीनेके शौकके साथ-साथ नृत्य और सगीतका भी कुछ प्रेम था, लेकिन अब इस जन्ममे वह अपने बेसुरे गले और बेतुके चार पैरोके कारण नाचने-गानेसे बिलकुल मजबूर थी। उसे अपने पिछले जन्म और स्वर्गलोकके निवासकी बिलकुल याद नही थी, फिर भी उसकी पिछली पडी हुई आदते और प्रवृत्तियाँ उसके अग-सग थी और शरीर धारण करने पर उनका उभारमे आना स्वाभाविक था। एक बहुत रहमदिल और अमीर जमीदारकी कुतियाके पेटसे जन्म पानेके कारण यद्यपि इस आत्माको खाने-पीनेकी विशेष सुविधा

थी और घरमे बननेवाली सभी एकसे एक स्वादिष्ट चीज़े उसे खानेको मिलती थी, फिर भी गाने-नाचनेकी जो थोडी-सी रुचि उसमे जाग उठी थी उसकी पूर्ति न होनेके कारण यह आत्मा बहुत दुखी होने लगी। घरके लोगोका आदमियोके प्रति एक तरहका और चौपायोके साथ दूसरी तरहका, कुछ निरादर-पूर्ण व्यवहार भी उसके मनमे एक अनसमझी-सी पीडाकी तरह खटकने लगा था। इन बातोका उसके मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पडा कि जल्द ही उसने खाना-पीना भी छोड दिया और कम-जोर होने लगी, और अपने जीवनकी तीसरी शरद् ऋतुके ज़ोर पकडते ही उसने शरीर त्याग दिया।

उधर देवता योनिमे आई हुई आत्माका और भी बुरा हाल हुआ। अपने नये शरीरमे देवताओके बीच जन्म पाकर उसने देखा कि जिन गुणोको वह बहुत पसन्द करती थी और अपने भीतर अधिकाधिक जगाना चाहती थी, वे सब बहुत बढी हुई मात्रामे यहाँके निवासियोमे पहलेसे ही मौजूद थे। किसीके लिए त्याग, सेवा, दया, क्षमा, उपकार आदि करनेकी वहाँ रत्ती भर भी गुजाइश नही थी। वह दूसरोके लिए नही, उल्टे दूसरे लोग उसके लिए त्याग, सेवा, दया, क्षमा आदि कर जाते थे। वे लोग इस बेचारी आत्माके मुकाबले बेहद अधिक भले थे। इस बेचारी आत्माका सारा उत्साह ठडा पड गया और अपनी शक्तियोको उपयोगमे लाने और लगानेका उसके लिए कोई अवसर ही न रह गया। उसका दिल एकदम टूट गया और उसका शरीर पशु-शरीरधारी आत्मासे भी पहले छूट गया।

स्वर्गमे वापस पहुँचकर इन दोनो आत्माओने 'बर्थ सिक्योरिग एजेसी' के विरुद्ध 'लिपिकाज एड कम्पनी' पर दावा कर दिया कि उनकी एजेसीकी असावधानीसे उनके पिछले जन्मका कोई भी उपयोग न हो सका और उनकी इतनी शक्ति और समय व्यर्थ ही नष्ट हुआ।

स्वर्गलोकके अधिकारियोने जब मामलेकी जॉच की तो पता चला कि गलती सचमुच उस 'बर्थ सिक्योरिग एजेसी' की ही थी और इसका कारण

यह था कि उस समय जो बुकिग आफीसर ड्यूटी पर था वह नया नया ही उस पद पर नियुक्त हुआ था और उसे योनि-निर्वाचनके नियमो और उनके प्रयोगकी पूरी जानकारी नही थी।

इस दुर्घटनाके फल-स्वरूप उसी समय एक आफीशल सर्कुलर (राजकीय गश्ती पत्र) बर्थ सिक्योरिग एजेसीके सभी शाखा-कर्मचारियोके नाम भेजा गया कि किसी आत्माके लिए नये जन्मका प्रबन्ध करते समय उसकी पूर्वजन्मकी योनिको बदलनेका किसी कर्मचारीको अधिकार नही है, अलबत्ता वह आवश्यकतानुसार उसी योनिके अन्तर्गत पिछले जन्मके नर को मादा और मादा को नरका शरीर दे सकता है। जिन बिरली विशेष दशाओ मे पूर्ण योनि-परिवर्तनकी आवश्यकता होगी, उनके सम्बन्धमे ऊचे अधिकारियोकी ओरसे स्वय ही आदेश जारी किये जायँगे।

उस समयसे इस विज्ञप्तिके विपरीत कोई वैसी दुर्घटना घटनेकी सूचना अब तक नही मिली।
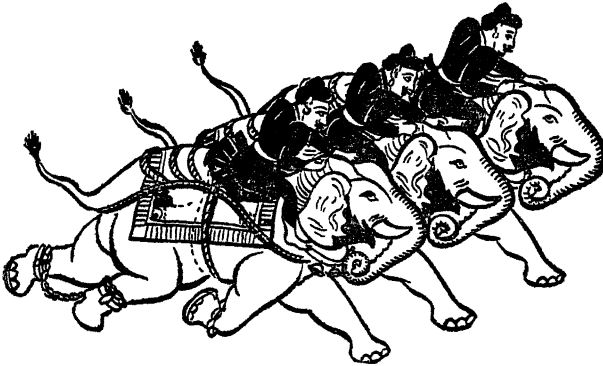
दण्ड-विधान

उन दिनो मेरा निवास मगल ग्रहमे था। पृथ्वी लोकके समयके हिसाबसे यह चर्चा पिछली शताब्दीके अन्तिम चतुर्थाशके भीतरकी है।

एक सुबह सवाद-समितिने एक बडी ही सनसनीपूर्ण खबर ग्रह-मण्डल के घर-घरमे पहुँचा दी। अयूशा नामके नगर (मगल-ग्रहकी भाषाके शब्दोको भूमण्डलकी भाषाओके शब्दोमे ठीक-ठीक उच्चारित करना असम्भव है, फिर भी उस नगरके नामको आप अपनी भाषाके अयूशा शब्द द्वारा ही कुछ-कुछ उच्चारित कर सकते है) के एक व्यक्तिने अपने एक पडौसीकी हत्या कर दी थी।

यह समाचार इतना भयकर और आश्चर्यजनक था कि सवाद-समितिने इसके बाद कोई दूसरा समाचार नही सुनाया। सभी लोग अपने-अपने रेडियो (वह रेडियोसे मिलता-जुलता यत्र होता है और प्रत्येक घरका एक आवश्यक अग होता है। सारे ग्रह-मण्डलमे होने वाले स्वरोको घरका मालिक उस यन्त्र-द्वारा इच्छानुसार सुन सकता है और इसी यन्त्र-द्वारा जहाँ जो चाहे समाचार भेज सकता है) बन्द करके इस समाचारकी आपसमे चर्चा करनेके लिए सडको पर निकल आये। हम लोगोने केवल किवदन्तियोमे ही सुना था कि लाखो वर्ष पहले हमारे ग्रहके निवासी इतने असभ्य और बर्बर थे कि एक दूसरेकी हत्या तक कर डालते थे। उन दिनो ग्रह-मण्डलमे विज्ञानकी जानकारी नही थी, लोग छोटी-छोटी बातोके लिए आपसमे लडाई-झगडे किया करते थे। वे इतने अज्ञानी थे कि अपने शरीरो को भी बराबर स्वस्थ नही रख पाते थे और अक्सर बीमार पड जाया करते थे। वे 'इयल्ला' (ईश्वर) नामकी किसी कल्पित वस्तुमे विश्वास करते थे। उस युगकी अज्ञानताओका बहुत बडा कारण यह अन्धविश्वास ही था।

अयूशा नगरके विमोकुआ नामक जिस व्यक्तिने अपने पडौसीकी हत्या कर दी थी, उसके रेडियो सेटके बगल वाली मेज, ग्रह-मण्डलके दूर-पासके कोनेसे आये हुए हत्यारे विमोकुआके प्रति समवेदना और आश्चर्यके लिखित सन्देशोसे भर गई।

शासनकी ओरसे पहला दल डाक्टरोका उसके घर पहुँचा। डाक्टरोका अस्तित्व उस ग्रहमे मनुष्योकी बीमारियाँ दूर करनेके लिए नही—क्योकि मनुष्यकी बीमारियोका अस्तित्व वहाँसे सहस्राब्दियो पहले मिट चुका है—बल्कि स्वास्थ्य और शक्तिकी सम्भावनाओको प्रयोगमे लाने और बीमार पशुओकी चिकित्सा करनेके लिए है। डाक्टरोने विमोकुआके मस्तिष्क और शरीरका निरीक्षण किया। घृणा और क्रोधके उद्वेगजनक कुछ रगोके अतिरिक्त कोई और विषाक्त वस्तु उसके रक्तमे नही पाई गई।

सूर्यतापके कुछ चुने हुए रगोकी किरणे उसके शरीरमे पहुँचाई गईं और विमोकुआका वह विकार दूर हो गया।

विमोकुआको उसके कार्यालयसे एक मासकी छुट्टी दे दी गई। मामलेकी जाँच सरकारी अधिकारियो-द्वारा प्रारम्भ हुई। पहाडियोके बीच बिरनी बसी एकान्त बस्ती इलक्कुरीजामे विमोकुआको रखा गया। इस हत्याका मोटे तौर पर जो प्रत्यक्ष कारण था वह केवल इतना ही था कि विमोकुआकी पत्नी पडौसके युवक उरस्सासे, जिसकी अब विमोकुआने हत्या कर दी थी, प्रेम करने लगी थी और उन दोनोका प्रेम-सम्पर्क स्थापित भी हो गया था। नियमानुसार उरस्सा और विलाशी (विमोकुआकी पत्नी) को अपने प्रेमको व्यावहारिक रूप देनेके लिए दो वर्ष ठहरना चाहिए था। विलाशी और विमोकुआका विवाह हुए अभी एक वर्ष ही हुआ था और लोकनियम तथा राजनियमके अनुसार उसकी यह जिम्मेदारी थी कि वह वैवाहिक जीवन प्रारम्भ होनेसे तीन वर्ष तक किसी भी नये प्रेमीसे प्रेम-सम्पर्क स्थापित न करती—यह आत्म-सयम नैतिक दृष्टिसे

उस लोकमे आवश्यक समझा जाता था। फिर भी ऐसे अपराधका निश्चित दण्ड यही था कि उरस्सा और विलाशीको छह वर्ष तक—नियमितसे दूने समय तक—किसी तीसरे प्रेमीसे प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करनेकी आज्ञा न होती और उन दोनोमे से जो भी इस आज्ञाका उल्लघन करता उसको उन अपराध-नगरियोमेसे किसी एकमे आजीवन निवास करना पडता जिनमे एक महीनेसे अधिक किसी भी प्रेमीसे प्रेम-सम्पर्क—यहाँ तक कि बोल-चाल भी—रखनेकी अपराधियोको आज्ञा नही है और उतने समयके पश्चात् दूसरा साथी ले लेना उनके लिए अनिवार्य है। प्रेम-सम्बन्धी अपराधोके लिए यह दण्ड उस ग्रहमे सबसे अधिक कठोर और अवाछनीय समझा जाता है और यह उन लोगोके लिए है भी अत्यन्त असह्य। ये अपराध-नगरियाँ एक तरहके बलात्कारपूर्ण वेश्यालयो-जैसी कही जा सकती है।

विलाशी और उरस्साके इस असामयिक प्रेम-सम्पर्कसे विमोकुआके हृदयमे एक या दोनोके प्रति क्रोध एव घृणाका उत्पन्न होना स्वाभाविक था, लेकिन उसकी प्रतिक्रियाका हत्याके कार्य-रूपमे प्रकट होना अत्यन्त अस्वाभाविक था। अवश्य ही इस अमानुषिक (वहाँ भी मनुष्यजातिके लोग बसते है) प्रेरणाका कारण कही और है और हत्याका उत्तरदायित्व किसी एक व्यक्तिपर न होकर समाजके कुछ अधिक व्यक्तियो पर है, राज्याधिकारियोने सोचा, और विमोकुआके साथ-साथ उसके साथियो और परिचितो-सम्बन्धियोके भी जीवन-इतिहासकी जॉच-पडताल आरम्भ कर दी।

लगभग पॉच सप्ताह बाद इस जॉचके फलस्वरूप उस हत्याका जो रहस्योद्घाटन हुआ उसकी लिखित विज्ञप्ति एक दिन प्रात सवादके समय प्रत्येक घरकी रेडियो सेटके बगल वाली मेज़ पर पाई गई। उसमे लिखा था।

"पृथ्वीलोकके 'मृत्यु-दण्ड' नामक अमानुषिक दण्ड पाये हुए तीन मानव प्रेतोने किसी तरह हमारे ग्रहके भी कुछ व्यक्तियोसे अज्ञात सम्बन्ध स्थापित

जगदम्बाके आँसू

"गौरा-पार्वती एक रात दुनियाकी 'चिन्ताको' निकले ।"—मेरी माँ गौरा-पार्वती यानी महादेव-पार्वतीकी चिन्ता-कथाओको प्रारम्भ करती हुई कहती और उसके आगे बताती कि किस प्रकार तरह-तरहके दुखियोंको वे देखते, पार्वतीजी अपने हाथकी छिगुनी (सबसे छोटी उँगली) जरा-सा चीरकर एक बूँद खून हर दुखियापर टपका देती और उसका दु ख दूर हो जाता ।

उन पुराने, कथा-भरी रातोके दिनोको बीते पच्चीस वर्ष हो चुके थे और तबसे 'गौरा-पार्वती' की 'चिन्ताओ' का मुझे कोई समाचार नही मिला था । मेरी माँ इस समय मेरे पास नही है और न मेरे घरमे बच्चे ही है, जिन्हे 'गौरा-पार्वती' की 'चिन्ताओ' की कोई आवश्यकता हो या उनमे कोई रुचि हो । फिर भी पिछली रात मुझे मालूम हुआ है कि 'गौरा-पार्वती' की 'चिन्ताएँ' अभी तक जारी है और उनकी चिन्ताओका जो नया समाचार मुझे मिला है, वह इस प्रकार है

गौरा-पार्वती एक रात दुनियाकी चिन्ताको निकले । दुनियाके सब लोग सोये हुए थे और वे सबको ध्यानसे देखते हुए आसमानके रास्तेसे चले जा रहे थे । चलते-चलते उन्हे एक पेडसे किसीकी दु ख-भरी आवाज सुनाई दी ।

गौरा-पार्वती जरा और नीचे उतरकर पेडकी चोटीके पास आ गये । उन्होने सुना कि एक चिडिया बडी दर्द-भरी आवाजमे कराह रही है ।

पार्वतीजीने गौराजीसे पूछा—"यह चिडिया इतनी रातको किस दु खसे चिल्ला रही है ? पक्षी तो साँझ होते ही सो जाया करते है ।"

गौराजीने कहा—"अपने बच्चेके लिए दाना चुगते-चुगते इसे देर

हो गई। अँधेरा हो जानेके कारण यह अपने पेड तक नही पहुँच पाई और रास्तेमे इसी पेड पर रुक गई है। यह अपना पेड भूल गई है और बच्चेके वियोगमे दुखी हो रही है।"

पार्वतीजीने अपनी छिगुनीको जरा-सा चीर कर एक बूँद खून उस चिडिया पर छिडक दिया और वह फुर्रसे उडकर सीधे अपने पेडपर जा पहुँची और अपने बच्चेसे लिपट गई।

आगे चलकर एक शहरकी सडकके किनारे उन्हे एक आदमी कराहता हुआ पडा मिला। पार्वतीजीके पूछने पर गौराजीने उन्हे बताया कि यह एक भिखारी है और कोढ-रोगसे इसका शरीर गल रहा है। इसे बहुत कष्ट है। पार्वतीजीने उसपर भी एक बूँद खून छिडक दिया और वह अच्छा हो गया।

आगे चलकर इसी तरह पार्वतीजीने एक रोती हुई औरत पर खून छिडककर उसके मरे हुए बच्चेके पास स्वर्गमे आने-जानेका रास्ता उसके लिए खोल दिया।

इसके बाद गौरा-पार्वतीकी 'चिन्ता' की उस रातकी मुख्य घटना आई। एक अच्छे-से घरमे एक सजी-सजाई सेजपर पडा हुआ एक नौजवान आदमी बुरी तरह छटपटाता और करवटे बदलता हुआ कराह रहा था और उसकी आँखोसे आँसुओकी धारा बह रही थी।

पार्वतीजीने गौराजीसे पूछा—"गौराजी, इस लडकेको क्या दुख है ?"

गौराजी कुछ मुसकराये और बोले—"पार्वतीजी, इसे एक लडकीसे प्रेम हो गया है, उसीके वियोगमे यह दुखी है।"

"दुखी है !" पार्वतीजीने कुछ आश्चर्यके साथ कहा—"प्रेम हो गया है तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन इससे इसे दुख क्या है ?"

गौराजीने हँसकर कहा—"प्रेममे भी कभी-कभी दुख हो जाता है। इसमे आश्चर्यकी कोई बात नही है।"

पार्वतीजीकी समझमे कुछ न आया। फिर भी उन्होने अपनी छिगुनी चीरकर एक बूँद ख़ून उस पर टपका दिया।

युवकका रोना-कराहना इससे बन्द न हुआ। पार्वतीजीको बडा आश्चर्य हुआ। उनके ख़ूनकी बूँद अभी तक कभी भी बेअसर साबित न हुई थी।

पार्वतीजीने झुँझलाकर दूसरे हाथकी भी छिगुनी चीरकर दस-पाँच बूँदे उसके ऊपर छिडक दी, लेकिन युवककी दशामे कोई परिवर्तन न हुआ।

अब तो पार्वतीजीके आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा। वे हक्की-बक्की-सी गौराजीके मुँहकी तरफ ताकने लगी। पार्वतीकी यह दशा देखकर गौराजी खिलखिलाकर हँस पडे।

"तुम्हारा एक बच्चा इस तरह दु खमे तडप रहा है और तुम्हे हँसीकी सूझ रही है!" पार्वतीजीने झुँझलाकर कहा—"उस कलके कलयुग छोकरेका असर क्या तुम्हारे ऊपर भी आ गया है? तुम ससार भरके पिता होकर अपने एक बच्चेके दु खके सामने इस तरह हँस रहे हो! या तो तुमने मुझे इस बच्चेका दु ख ठीक-ठीक नही बताया या अपनी किसी शक्तिसे मेरे ख़ूनको व्यर्थ कर दिया है। जल्द बताओ ।" कहते-कहते पार्वतीजीका गला भर आया।

"पार्वतीजी, तुम नाहक घबरा रही हो। इसमे इतना दुखी होनेकी बात नही है। पहले पूरी बात समझ लो। इस लडकेको एक ऐसी लडकीसे प्रेम हो गया है, जो इससे प्रेम नही करती।" —गौराजीने कहा।

"तो इसमे इस लडकेके लिए कष्टकी बात क्या है? यह उससे प्रेम करता है, तो करता रहे। वह इससे प्रेम नही करती, तो न करे। इससे इसे क्या कष्ट हो सकता है? ज़रूर बात कुछ और ही है, जिसे तुम मुझसे छिपा रहे हो।"—पार्वतीजी बोली।

गौराजीने कहा—"पार्वतीजी, यह बात आसानीसे तुम्हारी समझमे नही आ सकती। वैसे तो प्रेमका होना सुख और स्वास्थ्यका लक्षण है, लेकिन आजकल प्रेमने एक रोगका रूप धारण कर लिया है। वह इस

तरह कि लोग प्रेम करनेके साथ-साथ यह भी इच्छा करने लगे है कि जिससे प्रेम हो वह भी बदलेमे प्रेम करे और जो-कुछ वह प्रेमी चाहे, उसका प्रिय उसे दे। प्रेममे लोग अब देनेकी जगह लेने और पानेकी इच्छा करने लगे है, इसीलिए प्रेम करनेके सुखको भूलकर वे प्रेम पानेकी इच्छाके दु खमे कष्ट पाने लगे है। प्रेममे इस स्वार्थके घुस आनेसे अब वह एक रोग बन गया है। इस रोगकी विशेषता यह है कि यह रोगीके भीतर किसी तरहकी औषधको धँसने-लगने नही देता।"

पार्वतीजीने देखा, सचमुच उनके खूनकी बूँदे उस युवकके मुखपरसे, चिकने घडे परसे पानीकी बूँदोकी तरह, ढुलककर उसके वस्त्रोपर आ जमी थी और मुखपर उनका जरा भी चिह्न न था।

"तो फिर चलो, उस लडकीके दिलमे ही इस लडकेके लिए प्रेम पैदा करके इसका दु ख दूर किया जाय।"—पार्वतीजीने एक ठडी साँस लेकर कहा।

"यह तुम क्या कह रही हो, पार्वतीजी !" गौराजीने मानो चौककर कहा—"आज तुम अपनी हदसे बाहर जानेकी बात कैसे सोच रही हो ? अपने बच्चोकी स्वतन्त्र इच्छामे दखल देने और उसमे हेर-फेर करनेका तुम्हे कोई अधिकार नही है—क्या तुम इस बातको भूल गई ?"

पार्वतीजी सोचमे पड गई। उन्हे मालूम था कि वे और सब-कुछ कर सकती है, लेकिन किसीकी इच्छाको बदलनेका उन्हे भी कोई अधिकार नही है। इसका थोडा-बहुत अधिकार अगर किसीको है, तो केवल सरस्वतीजीको ही है।

"चलो, यहाँ देर करनेसे कोई लाभ नही। इस लडकेके दु खकी जड मूर्खता और स्वार्थमे है। इसका इलाज इसीके हाथमे है, किसी दूसरेके नही।"—गौराजीने कहा और पार्वतीजीका हाथ पकडकर चलनेका इशारा किया।

"तुम जाना चाहो, तो जाओ, लेकिन कुछ भी हो, मै अपने एक बच्चेको

दुःखमे तडपता छोडकर कैसे जा सकती हूँ ।"—पार्वतीजीने रुँधे हुए गलेसे कहा और गौरीजीसे अपना हाथ छुडाकर उस नवयुवकके पलगपर बैठ गई । उनकी आँखोसे दो बूँद आँसू निकलकर उसके मुखपर जा गिरें ।

युवकने करवट बदली । "माँ मेरी !" उसके मुँहसे न-जाने कैसे एक आह-भरी पुकार निकल गई और उस रात-भरके लिए वह सुखकी नीद सो गया ।

सुना है, उस रातसे जगत्-माता पार्वतीजी अक्सर अकेली ही दुनियाकी चिन्ताको निकलती है और जहाँ उनकी छिगुनीके खूनसे दुखियोका दुःख दूर नही होता, वहाँ उनके दो बूँद आँसुओसे जरूर कुछ समयके लिए दुनिया वालोको आराम मिल जाता है ।

जरारि फल

पहली मधुरात्रिके चन्द्रालोकमे युवराज नीलनयनने सधे, साभार हाथोसे राजवधू सर्वम्माका मुखावरण उठाया ।

इतना सुन्दर मुख और उसकी आखोमे छलछलाये इतने हृदय-द्रावक आँसू युवराजने पहले कभी नही देखे थे ।

"इस घडी ये आँसू, रानी !" युवराजने अपनी नई हृदयेश्वरीकी आखोमे आँखे डालकर पूछा । सर्वम्माकी उदास, करुणामयी मुखमुद्रासे उन आँसुओकी वेदना-मयतामे सन्देहका कोई स्थान नही रह गया था ।

"स्वामी !" सर्वम्माने उसीके अनुरूप आकुल स्वरमे उत्तर दिया ।

"माँका बिछोह, पिताकी याद "

"नही, स्वामी ! सर्वम्माने ढलके हुए आँसुओको आँचलके छोरमे लेते हुए कहा—"माता-पिता तो सभीके छूटते है और यह छूटना कोई छूटना नही है । जीवन रहते उनका स्नेह और सम्पर्क जब चाहे प्राप्त किया जा सकता है । मेरी चिन्ता दूसरी ही है ।"

"चिन्ता ! दूसरी ! तुम्हे क्या चिन्ता है, रानी ?' युवराजने विस्मयके स्वरमे पूछा ।

"आप या मै या हम दोनो ही एक दिन वृद्ध-जर्जर-शरीर हो जायेगे । तब आजके रूप और यौवनके उल्लाससे भरे इस दिनकी याद कितनी कटीली बनकर हमारे हृदयोमे कसकेगी ! आजकी रात क्या एक भयानक छलनापूर्ण स्वप्न बनकर हमारे यौवन-पारके दिनोको नही ग्रसेगी ?"

"ये कैसी बाते तुम कर रही हो, मेरी रानी !" युवराजने अपनी हथेलीपर सर्वम्माकी ठोढीको सहारते हुए कहा,—"यौवन और प्रेमके प्रथम मिलनके अवसरपर ऐसी बाते भी कोई सोचता है ! यौवन उपभोग

के लिए है । उसके आगेकी अभीसे चिन्ताका कोई अर्थ नही हो सकता।"

"और कोई नही सोचता, पर मेरे पास सोचनेके लिए कारण है, युवराज !"

"कारण है ?" युवराजने जिज्ञासापूर्ण स्वरमे दुहराया ।

"मेरे पिताको एक देवर्षिने उनकी सेवासे प्रसन्न होकर तीन जरारि फल दिये थे । उस फलका माहात्म्य यह है कि उसे खा लेनेसे उसके खानेवाले पर तथा उसकी सन्तति-परम्परापर बुढापेका आक्रमण जीवनभर नही हो सकता । मेरे पिताकी उस समय पहली सन्तान मेरी सबसे बडी बहिन ही जन्म ले पाई थी । पिताने उन तीनो फलोमे से एक उसे विवाहके समय दे दिया । दूसरा फल उन्होने मेरी दूसरी बहिनको विवाहकी बिदाईके समय दिया और उसी प्रकार तीसरा मुझे दे दिया है । मेरी बडी बहिनने यह फल अपने पतिको खिला दिया । परिणाम-स्वरूप वह पूर्ववत युवा और रूपवान बने हुए है, लेकिन मेरी बहिन आयु पाकर अब सर्वथा बूढी और जर्जर हो गई है । उसके दाम्पत्य जीवनकी सरसताकी ही नही, पतिके साथ साधारण पारिवारिक मैत्री-सम्बन्धकी भी समाप्ति हो गई है । उसके पतिका प्रेम-सम्पर्क दूसरी युवतियोके साथ चल रहा है । मेरी दूसरी बहिनने उस फलको स्वय खा लिया था । वर्षोके बीतनेके साथ-साथ उसका दाम्पत्य जीवन भी दूसरे पार्श्वसे असह्य और असाध्य हो उठा है । उसका अक्षय यौवन और रूप उसके लिए आशीर्वादके बदले अभिशाप बन गया है । देवर्षिने मेरे पितासे कहा था कि इन फलोका लोक-हितके लिए सबसे बडा उपयोग करना और इसी आदेशके साथ मेरे पिताने ये फल हम तीनो बहनोको दिये थे ।" राजवधूने बताया ।

"तो इसमे सोचनेकी बात क्या है, रानी ! हम दोनो ही मिलकर उस फलको खा सकते है !"

"यही तो हो नही सकता, युवराज ! एक पूरा फल एक व्यक्तिके ही काम आ सकता है और फिर इसमे लोक या वशका कोई स्थायी हित भी

नही है। हमारे जामातृ-गण और कुल-बन्धुओपर तो उसका प्रभाव नही पडेगा।"

"फिर भी, इसमे इतनी चिन्ता और उदासीकी बात क्या है ? उस फलका प्रयोग फिर कभी, कोई अच्छा प्रयोग सूझने पर कर लिया जायेगा। सारी चिन्ताके लिए यही तो एकमात्र अवसर नही है!" युवराजने कुछ आतुरभावसे कहा।

"यही अन्तिम अवसर है, आर्यपुत्र! फलका उपयोग या उसके उपयोगका निश्चित सकल्प हमे आजकी रात बीतनेसे पहले ही कर लेना चाहिए। दाम्पत्य-मिलनके प्रथम अवसरपर यदि इसका प्रयोग या सकल्प न किया गया तो इसका प्रभाव जाता रहेगा।" सर्वम्माने कहा और उसकी मुख-मुद्रा एकदम गम्भीर, विचार-मग्न हो गई।

युवराजने पत्नीकी ओर एक पैनी दृष्टि डाली, किन्तु उसकी आँखे अन्यत्र ही किसी बिन्दुपर केन्द्रित थी।

थोडी देर तक निस्तब्धता छायी रही।

सर्वम्माकी आँखे जगी, होठोपर मुसकानकी एक रेखा आई और नव-दम्पति प्रथम प्रणयके रस-पानमें निमग्न हो गये।

× × ×

सर्वम्माकी इच्छापर एक दिन राज-दरबारकी सभी नर्तकियोके नृत्यका विशेष आयोजन किया गया।

सभी नर्तकियोने अपनी-अपनी कलाका प्रदर्शन किया। मदश्रवा नामकी नवयुवती नर्तकीपर राजवधू सर्वम्माकी आँखे जा अटकी। निस्सन्देह यही उन सबमे सबसे अधिक सुन्दरी, कला-निपुण और सौम्य-हृदया थी।

मदश्रवापर राजवधू सर्वम्माका कृपा-भाव बढता गया। धीरे-धीरे यह उसकी निकटतम सहेली और एक प्रकारसे प्रधान परिचारिका बन गई। दरबारमे नृत्यका प्रदर्शन भी धीरे-धीरे कम करके उसने छोड दिया।

सर्वम्माके अनुरोधपर उसे उस कार्यसे बिना किसी आपत्तिके अवकाश दे दिया गया।

राजमहलोके समीप ही मदश्रवाके लिए एक अलग भवन बनवा दिया गया। सर्वम्माकी सहचारिताके साथ-साथ राजपरिवारकी कन्याओको नृत्य-सगीतकी शिक्षा देनेका कार्य भी उसे सौप दिया गया। राजनर्तकियोके लिए यह नियम था कि चालीस वर्षकी अवस्थातक उन्हे अविवाहिता रहकर अपनी कलाद्वारा राजदरबारका मनोरञ्जन करना पडता था। तदुपरान्त वे दरबारसे जीविका-वृत्ति और अवकाश पाकर विवाह करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करने या कलावृत्ति अथवा इच्छानुसार वेश्या-वृत्तिके लिए स्वतन्त्र होती थी। मदश्रवा उस आयुपर पहुँचनेके बहुत पहले ही दरबारसे अवकाश पा चुकी थी। उसके रूप और यौवनने छहो राजकुमारोको—सातवे सबसे बडे युवराज नीलनयन सर्वम्मा-जैसी अनुपम सुन्दरी भार्याको पाकर उस नर्तकीके रूप-पाशसे सहज ही मुक्त हो चुके थे—अपने आकर्षण-पाशमे बॉध रक्खा था। उस समयकी राज-समाजकी मर्यादाके अनुसार विवाहके पश्चात् नही, किन्तु विवाहके पहले राज-कुमारोको सीमाके भीतर यथेच्छ प्रेम-सम्पर्क स्थापित करनेकी स्वतन्त्रता थी।

मदश्रवाका अक, और अककी राह उसका ऑगन, द्रुत-गतिसे बाल-गोपालो—पुत्रो-पुत्रियोसे भरने लगा। अगले पचास वर्षोमे—खोजी इतिहासकारोका कहना है—मदश्रवा एकसे एक सुन्दर उन्चास पुत्र-पुत्रियोकी माता बन गई।

राजरानी सर्वम्माने—अपने पिताकी मृत्युके पश्चात् यथासमय युवराज नीलनयन राजगद्दीपर बैठ चुके थे—अपने राज्यके एक कोनेपर कुछ जागीर देकर मदश्रवाके लिए एक नया उपनिवेश बसा दिया और वह अपनी सन्ततिको लेकर वही जा बसी।

महाराज नीलनयनने सुखपूर्वक बावन वर्षतक राज्य किया। उनके

राज्यमे प्रजा और भी अधिक समृद्ध हुई। नब्बे वर्षकी आयुमे सफल वृद्धत्वको प्राप्तकर अपनी भार्यासहित उन्होने इस ससारसे विदा ली। उनके बडे पुत्र युवराज चक्रधर राज्यासनपर बैठे।

महाराज नीलनयनका वश फला-फूला। प्रजाके सुख समृद्धिमे भी वृद्धि हुई। इसी प्रकार ढाई सौ वर्ष और बीत गये।

× × ×

महाराजा चक्रधरके पौत्रके पौत्र, महाराज नीलनयनके आगे पाँचवी पीढीके युवराज शीलवदनके राज्याभिषेकका समारोह सारे राज्यमे हो रहा था। राजधानी कीर्तिपुरी नव-वधू-सी सजी हुई थी।

राज्याभिषेक-मण्डपके द्वारपर एक नवयुवक अश्वारोहीने घोडा रोका।

"राजगुरुके लिए एक पत्र है" नवयुवकने द्वारपालको सूचना दी।

नवयुवकको सभा-मण्डपमे बुला लिया गया।

मोहरबन्द पत्रपर राजगुरुका पता लिखा हुआ था। राजगुरुने पत्र खोला। राजप्रपितामह महाराज नीलनयनके हस्ताक्षरो सहित यह लगभग तीन सौ वर्ष पहलेका लिखा हुआ एक राजकीय आज्ञापत्र था। लिखा था —

"पत्रका वाहक युवक हमारे वशका, मेरे छ छोटे भाइयोमेसे किसी एकका अश है। अपनी वश-माता महारानी मदश्रवाकी पुरुष-सन्ततिमे आठवी पीढीका यह सर्व-ज्येष्ठ कुमार है। मदश्रवा-वशकी इससे पहलेकी सात पीढियोकी सन्ततिने यथानियम, अपने वशकी परिधिसे बाहर विवाह-सम्बन्ध किये है, किन्तु आठवी पीढीसे इस वशकी सन्ततिके विवाह इसी वशके भीतर होगे और पहली बार यह कुमार अपनी भार्या अपने वशके भीतर ही चुनेगा। मेरे वशके राज्य-सिहासनका अधिकारी अपने समयपर यह कुमार ही होगा। मेरी रक्त-परम्पराका तत्कालीन सिहासनाधिकारी वशज इसमे सहर्ष सहयोग देगा, ऐसी मेरी आशीर्वादपूर्ण आशा है, तथा मेरी इच्छा और नियमित राजाज्ञाका पालन उस समयके मेरे कुलगुरु यथाविधि करायेगे, ऐसा उनके चरणोमे इस राज-दम्पतिका अनुरोध है।"

यह पत्रवाहक तेजस्वी नवयुवक—उसे उस पत्रके भीतरके लेखका कुछ भी अनुमान नही था—राज्य-सिहासनपर यथाविधि आरुढ कर दिया गया।

उन्ही गुप्त इतिहासकारोका कहना है कि इस कथाका प्रारम्भकाल चार सौ वर्षोसे अधिक पुराना नही है। मदश्रवा वशका यह कुमार वज्रपाणि मदश्रवा इस समय उस छोटे-से राज्यके सिहासनपर विद्यमान है। मदश्रवावशकी जनसख्या इस समय पचास सहस्रके लगभग है। कहनेकी आवश्यकता नही, कि इस वशकी सातवी पीढीतकके दम्पती-जोडोमे एक आजीवन युवा रहता था और दूसरा जो इस वशके बाहरसे आया हुआ होता था, वृद्धत्वको प्राप्त होकर मरता था। लेकिन इस आठवी पीढीसे उनके विवाह वशके अन्तर्गत ही होनेके कारण अब इसके सभी परिजन आजीवन युवा ही रहेगे। उन्ही इतिहासकारोका कहना है कि मदश्रवाने एक सौ पैतीस वर्षकी आयुमे, पूर्ण युवावस्थामे शरीर छोडा था। उनका अनुमान है कि मदश्रवा वशके लोग ही ससारके शासक-वर्गके लोग बनेगे और उनका ही राजवश सफलतापूर्वक फूले-फलेगा। यह राज्य ससारके किस कोनेमे है, इसका अभीतक स्पष्ट सकेत नही मिला।

इसमे तो कोई सन्देह नही किया जा सकता कि राज-महिषी सर्वम्माने राजनर्तकी मदश्रवाको यह जरारि-फल खिला दिया था और मदश्रवाने पूरे साध्वी-भावसे, छ. राजकुमारोसे बाहर अपना शरीर-सम्पर्क नही बढाया था।

क्या यह असम्भव है कि दस-बीस हजार या दो-चार लाख वर्ष बाद ससारके सभी निवासी मदश्रवा वशके रक्तके मिश्रणसे आजीवन स्वस्थ और प्रसन्न रहने लगे—जैसे कि देवता लोग शायद अभी भी होते है?

तब क्या मदश्रवा नामके साथ-साथ सर्वम्माको भी लोग किसी रूपमे याद करेगे?

ज्ञानपीठके सांस्कृतिक प्रकाशन

श्री० सुमेरुचन्द्र दिवाकर

महाबन्ध [१] १२)

जैन शासन [द्वि० स०] ३)

श्री० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

महाबन्ध [२] ११)

महाबन्ध [३] ११)

सर्वार्थसिद्धि १२)

श्री० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य

तत्त्वार्थवृत्ति १६)

तत्त्वार्थराजवार्तिक [१] १२)

न्यायविनिश्चयविवरण १ १५)

न्यायविनिश्चयविवरण २ १५)

प० पन्नालाल जैन साहित्याचार्य

आदिपुराण [भाग १] १०)

आदिपुराण [भाग २] १०)

उत्तरपुराण [भाग ३] १०)

धर्मशर्माभ्युदय ३)

प० हीरालाल शास्त्री

वसुनन्दि-श्रावकाचार ५)

जिनसहस्रनाम ४)

प० राजकुमार जैन साहित्याचार्य

मदनपराजय ८)

श्री० गुलाबचन्द्र जैन, व्याकरणाचार्य

पुराणसारसग्रह [१] २)

पं० नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य

केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि ४)

प० के० भुजबली शास्त्री

कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची १३)

प्रो० हरिदामोदर बेलणकर

सभाष्य रत्नमजूषा २)

प० शम्भुनाथ त्रिपाठी

नाममाला [सभाष्य] ३॥)

प्रो० ए० चक्रवर्ती

समयसार [अग्रेजी] ८)

थिरुकुरल [तामिल] ५)

प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी

करलक्खण [द्वि० स०] ॥)

श्री भिक्षु धर्मरक्षित

जातकट्ठकथा [पाली] ६)

श्री० कामताप्रसाद जैन

हिन्दी जैन साहित्यका सक्षिप्त इतिहास २॥≈)

श्रीमती रमा जैन

आधुनिक जैन कवि ३॥)

पं० शोभाचन्द्र भारिल्ल

कुन्दकुन्दाचार्यके तीन रत्न २)

ज्ञानपीठके सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन